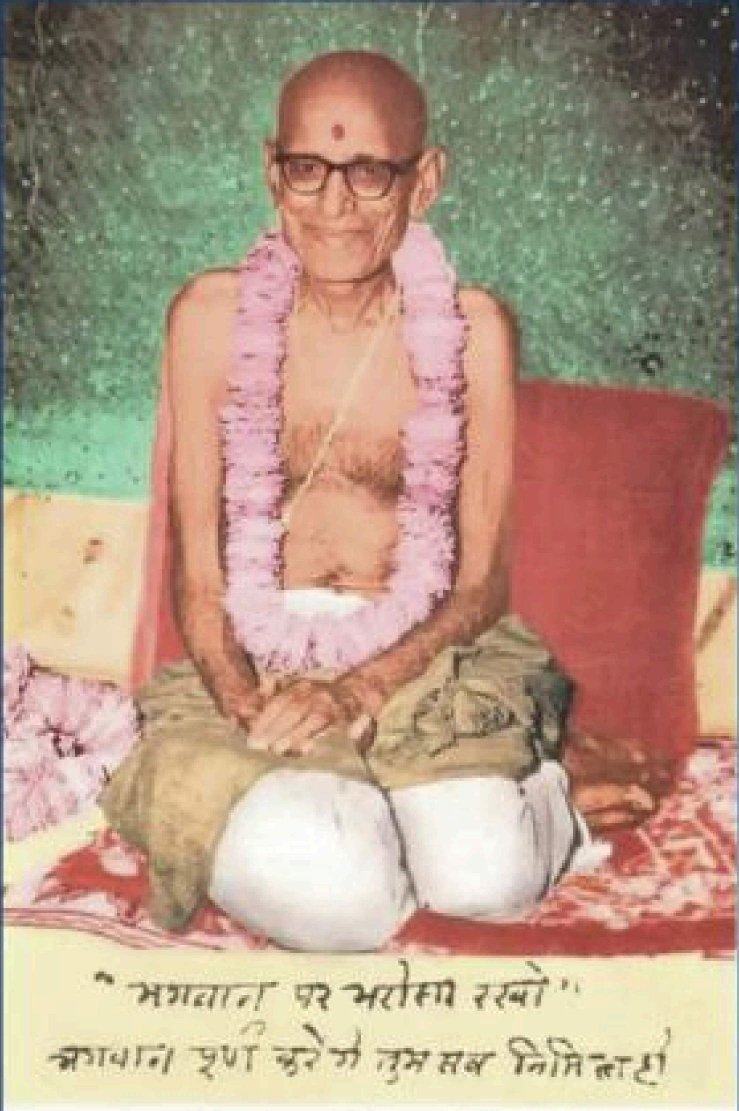
ISBN : 978-93-341-8248-4

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान



"श्री सदगुरु रणछोड़दासजी महाराज"
सेवाधाम आश्रम के आराध्य गुरुदेव

- डॉ. राजीव अग्रवाल
- अखिलेश कुमार
- विनय कुमार

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पी०जी० कॉलेज, अतर्रा
(बाँदा)

अखिलेश कुमार
M.Sc. (Math), M.Ed.

विनय कुमार
M.A. (Political science), B.Ed.

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान

डॉ. राजीव अग्रवाल
अखिलेश कुमार
विनय कुमार

E-book संस्करण: 2024
मूल्य: ₹20

ISBN : 978-93-341-8248-4

प्रकाशक- विनय कुमार
गौरा बाबा मंदिर के पास, नरैनी रोड, अतर्रा- 210201
जिला - बाँदा (उत्तर प्रदेश)
Mob- 6393145173
ई - मेल: vkgatarra@gmail.com

प्राक्कथन

भारतवर्ष की पावन भूमि पर सदैव संत महात्माओं, ऋषियों, महायोगियों, धर्मा, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहां पर धार्मिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है। धार्मिक शिक्षा से लोगों में संस्कार उत्पन्न होते हैं और संस्कृति हमारी चेतना को परिष्कृत करती है।

वर्तमान समाज में देश के तथाकथित जागरूक लोग पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर मैकाले शिक्षण पद्धति की ओर भाग रहे हैं, जिसमें सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। जबकि प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चरित्र एवंसंवेदनाओं के लिए पर्याप्त स्थान है, जिसका उद्देश्य तत्कालीन समाज में चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन, व्यावहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं भावी पीढ़ी के नवनिर्माण में निहित है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु मैकाले शिक्षा पद्धति के विरुद्ध एक अभियान की तरह आधुनिकता को प्राचीन संस्कृति को साथ लेकर चलने का प्रयास श्री रणछोड़दासजी महाराज जी द्वारा स्थापित संस्था श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान शिक्षण पद्धति की कमियों के दृष्टिगत इसकी महती आवश्यकता है। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के संस्थापक श्री रणछोड़दासजी महाराज का मानना है कि वास्तव में शिक्षा ज्ञान के प्रचार प्रसार का माध्यम है और इसका उद्देश्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवन के सभी मूल्यों को पहुंचाने तथा भावी पीढ़ी को आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

प्रस्तुत पुस्तक शीर्षक **"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान"** है। इस पुस्तक को पंच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय अध्ययन की पृष्ठभूमि में भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, शिक्षा के क्षेत्र में स्वयंसेवी संगठनों का योगदान, समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमन, एवं शोध विधि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में शैक्षिक योगदान से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के परिचयात्मक विवरण का उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के शैक्षिक योगदान का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

20/03/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल
अखिलेश कुमार
विनय कुमार

अनुक्रमणिका

प्रथम-अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है, जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शक रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता और संस्कृति एवं आदर्शों, परंपराओं का ही प्रभाव था, कि संपूर्ण विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का प्रसार हुआ। हजारों वर्षों से मनुष्य ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य के चिंतन में भी वृद्धि हो रही है।

मानव समस्त प्राणियों में बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ है, उनमें ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान की क्षुधा तृप्त करने की असीम अभिलाषा व क्षमता रहती है। मानव की उत्पत्ति के समय से ही यह प्रमाण मिले हैं, कि जितनी भी उन्नति और प्रगति मानव ने की है वह उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण ही संभव हो सकी है।

शिक्षा किसी राष्ट्र के नवनिर्माण एवं उनकी संस्कृति की वाहक होती है। शिक्षा के गौरवशाली अतीत पर ही उसके वर्तमान की दिशा निर्धारित होती है। शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार उसकी कार्यप्रणाली एवं जीवन व्रत में परिवर्तन एवं परिमार्जन किया जाता है। शिक्षा न केवल पथ प्रदर्शक, ज्ञानवर्धक एवं प्रगति की द्योतक होती है बल्कि यह हमारी राष्ट्रीय गरिमा को संरक्षित एवं संवर्धित करती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करके उसके व्यवहार का परिमार्जन एवं परिष्करण किया जाता है।

शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन नहीं माना जा रहा परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं परंपराओं, मान्यताओं का परिचय न दें, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। आज भारत में फैली बुराइयों, सामाजिक कुरीतियों के कारण नैतिकता का ह्रास होता जा रहा है। इन समस्याओं को हल करने के लिए समाज को शिक्षित होना होगा और इसके लिए शिक्षा व्यवस्था में बदलाव लाना होगा।

समाज के उत्थान एवं उन्नति के लिए प्राचीन काल से ही धर्मगुरु, समाज सुधारकों के प्रयास सराहनीय रहे हैं। समय-समय पर विभिन्न संस्थाओं ने समाज में शिक्षा के व्यापक प्रसार के लिए योगदान दिया है। जैसे समाज में स्त्री शिक्षा, बालकों की शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा आदि। इसी क्रम में एक और संस्थान

समाज में वंचित और पिछड़े बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान दे रहा है। अतः प्रस्तुत लघु शोध वर्तमान परिस्थिति में विश्व जागृति मिशन के शैक्षिक योगदान के अध्ययन का एक प्रयास है।

1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया

हमारे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सबके लिए शिक्षा हमारे भौतिक और आध्यात्मिक विकास की बुनियादी आवश्यकता है। बालकों में कुछ जन्मजात शक्तियां रहती हैं। बालक इन्हीं जन्मजात शक्तियों के आधार पर व्यवहार करता है। शिक्षा बालक को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है। जिससे राष्ट्रीय एकता पनपती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्ति को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के अनुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के आधार पर ही अनुसंधान और विकास को संबल मिलता है, जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की आधारशिला है। शिक्षा समाज के भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों से संबंधित होती है। शिक्षा वर्तमान तथा भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। इसी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निर्माण की धुरी माना गया है। अत: यह कहना उचित है, कि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है, जो हमारी संस्कृति, हमारे धर्म, मूल्यों से जुड़ी हो, क्योंकि धार्मिक शिक्षा के क्षेत्र में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

मनुष्य की शिक्षा उसे केवल परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करना ही नहीं सिखाती है, वरन् उसे सामाजिक परिवर्तन करने और परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिए तैयार करती हैं। इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों आदि में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन होता रहता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा में सभी प्रकार की शिक्षा पर बल देना चाहिए जिसके परिणाम स्वरूप ही मानव का सर्वांगीण विकास संभव है।

1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा का इतिहास भारतीय सभ्यता का भी इतिहास है। भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। भारतीय शिक्षा का बीजारोपण सुदूर अतीत में आज से लगभग 4000 साल पहले हुआ था, किंतु उसके सुसंबंध स्वरूप के दर्शन वैदिक काल के आरंभ में होते हैं। प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था। वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समउन्नत व उत्कृष्ट थी। लेकिन कालांतर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ह्रास हुआ। विदेशियों ने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया। जिस अनुपात में होना चाहिए, अपने संक्रमण काल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आज भी यह चुनौतियां व समस्याएं हमारे सामने हैं। जिनसे दो-दो हाथ करना है।

1.1.2.1 प्राचीन काल में शिक्षा का विकास

भारत की प्राचीन कालीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा मुक्ति तथा आत्मबोध के साधन के रूप में थी। प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केंद्रों का उल्लेख मिलता है। औपचारिक शिक्षा मंदिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी। ये ही उच्च शिक्षा के केंद्र थे। जबकि परिवार, पुरोहित, पंडित, संन्यासी और त्योहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी।

विभिन्न धर्म सूत्रों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरु है। कुछ विद्वानों ने पिता को बच्चे के शिक्षक के रूप में स्वीकार किया है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाएं स्थापित होने लगी। वैदिक काल में परिषद, शाखा और चरण जैसे संघों का स्थापन हो गया था, लेकिन व्यवस्थित शिक्षण संस्थाएं सार्वजनिक तौर पर बौद्धों द्वारा स्थापित की गई।

प्राचीनकाल में शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता था। भारत विश्व गुरु कहलाता था। विभिन्न विद्वानों ने शिक्षा को प्रकाशस्रोत, अंतर्दृष्टि, अंतरज्योति, ज्ञानचक्षु और तीसरा नेत्र आदि उपमाओं से विभूषित किया। उस युग की मान्यता थी जिस प्रकार अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश है, उसी प्रकार

व्यक्ति के सभी संशयों और भ्रमों को दूर करने के लिए शिक्षा है। प्राचीन भारत की शिक्षा का प्रारंभिक रूप हम ऋग्वेद में देखते हैं। ऋग्वेद युग की शिक्षा का उद्देश्य था तत्व साक्षात्कार। ब्रह्मचर्य, तप और योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करने वाले ऋषि, मुनि, कवि मनीषी के नामों से प्रसिद्ध थे।

विद्यालय गुरुकुल, आचार्यकुल, गुरुग्रह इत्यादि नामों से विदित थे। शिक्षक को आचार्य और गुरु कहा जाता था और विद्यार्थी को ब्रह्मचारी, व्रतधारी, अन्तेवासी और आचार्यकुल वासी आचार्य मंत्र का परायण करते थे और ब्रह्मचारी उनको उसी प्रकार दोहराते चले जाते थे। वैदिक काल में उच्च शिक्षा की व्यवस्था गुरुकुल में होती थी, 18 से 12 वर्ष की आयु में बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। 8 वर्ष की आयु पर ब्राह्मण बच्चों का, 10 वर्ष की आयु में क्षत्रिय बच्चों का और 12 वर्ष की आय में वैश्य बच्चों का गुरुकुल में प्रवेश होता था। गुरुकुल में प्रवेश के समय बच्चों का उपनयन संस्कार होता था। इस संस्कार के बाद उनकी उच्च शिक्षा प्रारम्भ होती थी। हमारे देश में वैदिक काल में जिस शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, वह हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव का पत्थर है। वैसे तो वैदिक शिक्षा प्रणाली के बाद हमारे देश में क्रमशः बौद्ध शिक्षा प्रणाली, मुस्लिम शिक्षा प्रणाली और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का विकास तो हुआ परंतु वैदिक शिक्षा प्रणाली प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से निरंतर चलती रही और आज भी चल रही है।

आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में भी इसकी आधारभूत भूमिका है। वैदिक काल की भांति आज भी समस्त ज्ञान-विज्ञान, कौशल और तकनीकी को शिक्षा की पाठ्यचर्या सम्मिलित करते हैं। आज भी हम शिक्षक और शिक्षार्थीयों के बीच मधुर संबंध स्थापित करना चाहते हैं। आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली और बैदिक काल की शिक्षा प्रणाली में जो अंतर हैं वह तो विकास क्रम का ही प्रतिफल है।

1.1.2.2 मध्य काल में शिक्षा का विकास

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिंदू अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों के व्यक्तिगत रूचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और

प्रचार के लिए मस्जिदें बनाई गई साथ ही मकतब व मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों को कंठस्थ करते थे। इनमें हिंदू बालक भी पढ़ते थे। मकतब में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहां प्रधानत: धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। साथ-साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून आज की पढ़ाई होती थी। सरकार शिक्षकों को नियुक्ति करती थी, कहीं-कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी।

इस काल में शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। संपन्न परिवारों के घरों की बैठकों में परिवार व आसपास के शिशु प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस बैठक को मकतब कहते थे। इस मकतब के शिक्षक के भरण-पोषण का दायित्व उन परिवारों का होता था। जिन परिवारों के बच्चे वहां शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे।

वह भी उसकी आर्थिक सहायता करते थे। शिक्षा का दूसरा केंद्र मदरसा था। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता मिलती थी। शिक्षा का तीसरा महत्वपूर्ण केंद्र सूफी संतों की खानकाह थी। अजमेर में शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की खानकाह, दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह, और सीदी मौला की खानकाह आदि शिक्षा के सुप्रसिद्ध केंद्र थे। इस काल में प्रत्येक शहर में उपरोक्त तीन प्रकार की शिक्षण संस्थाएं थी।

मध्यकाल में राजकुमारों के लिए महल के भीतर शिक्षा का प्रबंध था। राज्य व्यवस्था, सैनिक संगठन, युद्ध संचालन, संघ इतिहास, व्याकरण, साहित्य, इतिहास, व्याकरण, कानून आदि का ज्ञान ग्रह शिक्षा से प्राप्त होता था। राजकुमारियां भी शिक्षा पाती थी। शिक्षकों का बड़ा सम्मान था। वह विद्वान और सच्चरित्र होते थे। छात्र और शिक्षकों को आपसी संबंध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्या प्रेम और धर्म आचरण और उदाहरणों द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। धर्म आचरण पर जोर दिया जाता था, कंठस्थ करने की परंपरा थी। प्रश्नोत्तर व्याख्या और उदाहरण द्वारा पाठ पढ़ाए जाते थे। कोई परीक्षा नहीं थी। अध्ययन-अध्यापन में प्राप्त अवसरों में शिक्षक छात्रों की योग्यता और विद्वत्ता के विषय में तथ्य प्राप्त करते थे। दंड प्रयोग किया जाता था। जीविका उपार्जन के लिए भी शिक्षा दी जाती थी। दिल्ली, आगरा, जौनपुर,

मालवा मुस्लिम शिक्षा के केंद्र थे। मुसलमान शासकों के संरक्षण के लिए आभाव में भी संस्कृत, काव्य, नाटक, व्याकरण, दर्शनग्रंथों की रचना और उनका पठन-पाठन बराबर होता रहा।

1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्म प्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। उन्होंने कई विश्वविद्यालय स्थापित किए। प्रारंभ में मद्रास ही उनका कार्यक्षेत्र रहा। धीरे-धीरे कार्यक्षेत्र का विस्तार बंगाल में भी होने लगा। इन विद्यालयों में ईसाई धर्म की शिक्षा के साथ-साथ इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, साहित्य आदि विषय भी पढ़ाए जाते थे। रविवार को विद्यालय बंद रहता था। प्राय: 150 वर्षों के बीतते-बीतते ईस्ट इंडिया कंपनी राज करने लगी। विस्तार में बाधा पड़ने के डर से कंपनी शिक्षा के प्रति उदासीन रही, फिर भी विशेष कारण और उद्देश्य से 1780 में 'कोलकाता मदरसा' और 1791 बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना कंपनी द्वारा की गई। इसमें हिंदू उच्च शिक्षा और इंग्लैंड की उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम एक साथ चलाए गए। इसके बाद में 1800 में उन्होंने कोलकाता में केवल इंग्लैंड की उच्च शिक्षा प्रणाली पर आधारित फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। इस कॉलेज में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य और यूरोपीय ज्ञान के साथ-साथ भारतीय भाषाओं भारतीय इतिहास और हिंदू मुस्लिम कानून की भी शिक्षा दी जाती थी।

17 वी शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के साथ यहां की मिशनरियों ने भी अपना कार्य भारत में प्रारंभ किया। ऐसा माना जाता है कि ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्येक जहाज के साथ एक पादरी भारत में आता था। ब्रिटेन के पश्चात फ्रांसीसी डच देशों के व्यापारियों तथा मिशनरियों के द्वारा अपना कार्य भारत में प्रारंभ किया गया। ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भी उन्होंने शिक्षा को माध्यम बनाया। प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की गई। मिशनरियों के द्वारा इसाई धर्म की शिक्षा देने के साथ-साथ आधुनिक यूरोपीय शिक्षा एवं भारतीय विषयों की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी।

1.1.2.4 ब्रिटिश शासन का शिक्षा पर प्रभाव

कंपनी ने प्रारंभ में व्यापारिक हितों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के प्रति उदासीन रही फिर भी विशेष कारण और उद्देश्यों से अपने कर्मचारियों उनके बच्चों तथा आसपास के निवासियों के लिए सीमित

संख्या में प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की। कंपनी अब अपने राज्य के भारतीयों को शिक्षा देने की आवश्यकता को समझने लगी थी। 1813 ई0 के आज्ञा पत्र के अनुसार शिक्षा में धन व्यय करने का निश्चय किया गया। किस प्रकार की शिक्षा दी जाए? इसमें प्राच्य और पाश्चत्य शिक्षा के समर्थकों में मतभेद था। अंत में लार्ड मैकाले के तर्क-वितर्क और राजा राममोहन राय के समर्थन से प्रभावित हो 1835 में लॉर्ड बैंटिक ने निश्चय किया कि अंग्रेजी भाषा और साहित्य और यूरोपीय इतिहास, विज्ञान इत्यादि की भी पढ़ाई हो, और इसी में 1813 का आज्ञा पत्र में अनुमोदित धन व्यय हो।

1853 में शिक्षा की प्रगति की जांच के लिए एक समिति बनाई गई। 1854 में बुड के शिक्षा संदेश पत्र में समिति के निर्णय कंपनी के पास भेजे। संस्कृत, अरबी और फारसी का ज्ञान आवश्यक समझा गया। प्राथमिक शिक्षा उपेक्षित ही रही। उच्च शिक्षा की उन्नति होती गई। 1857 में कोलकाता, मुंबई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित हुए। प्राथमिक शिक्षा की दशा की जांच करते हुए शिक्षा के प्रश्नों पर विचार करने के लिए 1882 में सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में भारतीय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की गयी।

सन 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश संसद ने देश का शासन अपने हाथ में ले लिया। रानी विक्टोरिया की सरकार ने अपना पूरा ध्यान अपनी स्थिति मजबूत करने में लगाया, शिक्षा संबंधी कार्य पीछे छूट गए। इस समय तक देश के अनेक प्रांतों में हजारों प्राथमिक विद्यालय विभिन्न माध्यमों से स्थापित किए गए। कई स्थानों पर हाई स्कूल खोले गए, नए कालेजों की स्थापना की गई।

1.1.3 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की समस्याएं

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है । भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई० में लागू किया गया ।

सन् 1835 ई० में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है ।इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 ई० में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार

नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी। इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक् रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश समाज में बीसवीं सदी तक यह मानना था कि श्रमिक वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने का तात्पर्य है उन्हें जीवन में अपने कार्य के लिए अयोग्य बना देना। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए भी इसी नीति का अनुपालन किया।

लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर तथा उच्च वर्ग केंद्रित, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी। इसकी बुराइयों को सर्वप्रथम गाँधी जी ने 1917 ई० में गुजरात एजुकेशन सोसायटी के सम्मेलन में उजागर किया तथा शिक्षा में मातृभाषा के स्थान और हिंदी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तार्किक ढंग से रखा। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में शांति निकेतन, काशी विद्यापीठ आदि विद्यालयों में शिक्षा के प्रयोग को प्राथमिकता दी गई।

सन् 1944 ई० में देश में शिक्षा कानून पारित किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं तथा नीति-नियामकों ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण, सामाजिक-आर्थिक विकास आदि क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया। इस मत की पुष्टि हमें राधाकृष्ण समिति (1949), कोठारी शिक्षा आयोग (1966) तथा नई शिक्षा नीति (1986) से मिलती है।शिक्षा के महत्व को समझते हुए भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए शिक्षण संस्थाओं व विभिन्न सरकारी अनुष्ठानों आदि में आरक्षण की व्यवस्था की। पिछड़ी जातियों को भी इन सुविधाओं के अंतर्गत लाने का प्रयास किया गया। स्वतंत्रता के बाद हमारी साक्षरता दर तथा शिक्षा संस्थाओं की संख्या में नि:संदेह वृद्धि हुई है परंतु अब भी 40 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निरक्षर है।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा व प्राविधिक शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है परंतु प्राथमिक शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर मशीनीकरण रहा जिससे चिकित्सकीय तथा उच्च संस्थानों से उत्तीर्ण छात्रों में लगभग 40 प्रतिशत से भी अधिक छात्रों का देश से बाहर पलायन जारी रहा।

देश में प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के नाम पर लूट-खसोट, प्राथमिक शिक्षा का दुर्बल आधार, उच्च शिक्षण संस्थानों का अपनी सशक्त भूमिका से अलग हटना तथा अध्यापकों का पेशेवर दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए एक नया संकट उत्पन्न कर रहा है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे, निजीकरण तथा उदारीकरण की विचारधारा से शिक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टि से देखा जाने लगा है जिसे बाजार में खरीदा-बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर राज्य भी अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संबंधों, पाठ्यक्रमों का गहन विश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गंभीर रूप से विश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई है। प्रत्येक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती हैं लेकिन शिक्षा का मूलभूत स्वरूप परिवर्तित कर इसे रोजगारोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली गैर-तकनीकी छात्र-छात्राओं की एक ऐसी फौज तैयार कर रही है जो अंततोगत्वा अपने परिवार व समाज पर बोझ बन कर रह जाती है। अत: शिक्षा को राष्ट्र निर्माण व चरित्र निर्माण से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है।

1.1.3.1 शिक्षा का व्यवसायीकरण

शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है, क्योंकि शिक्षा ही सभ्यता और संस्कृति के निर्माण में सहायक होती है। आजकल शहरों में तो क्या गांव में भी शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। सरकारी स्कूलों में केवल निर्धन वर्ग के बच्चे ही पढ़ने के लिए आते हैं। क्योंकि निजी संस्थाओं में फीस के रूप में बड़ी रकम वसूली जाती है। जिसे केवल पैसे वाले ही अदा कर पाते हैं। आज अच्छी और उच्च शिक्षा का व्यवसायीकरण हो रहा है। निजी शिक्षण संस्थानों के संचालक मनमानी फीस वसूल कर रहा है। या यूं कहें शिक्षा का बाजार लगाकर लूट मचा रखा है। जहां एक ओर शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ फीस बढती जा रही है। आज के दौर में बढ़ती फीस के कारण मनपसंद स्कूल में प्रवेश लेना ही अपने आज बड़ी चुनौती है। फीस न होने के कारण कुछ लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने में भी असमर्थ हैं। इसके साथ ही किताबें, वर्दी आदि खर्चे भी बहुत हो गए हैं। स्कूल का व्यवसाय इतना लाभदेय हो गया है कि स्कूल वालों ने पुस्तक और ड्रेस का व्यापार करना भी शुरू कर दिया है।

आज एक से बढ़कर एक शिक्षण संस्थान नित जन्म ले रहे हैं। जहां सिर्फ अमीर वर्ग के लोग ही शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। संपन्नता और व्यवसायिकता कि इस अंधी दौड़ में शिक्षा रूपी व्यवसाय तो जरूर फल-फूल रहा है पर शिक्षा का मूल उद्देश खत्म हो गया है।

1.1.3.2 शिक्षा का राजनीतिकरण

आजकल स्कूल में जो शिक्षा दी जा रही है, वह वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में कहां तक उचित है, इस पर राजनीतिक प्रभाव कितने पड़ रहे हैं? क्या इन राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण बालकों का अहित नहीं हो रहा है? इनके भविष्य निर्माण में बाधक नहीं हो रहा है, ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जो अनुत्तरित हैं। हमारे देश में लोकतंत्र है, जो भी सत्ताधारी पार्टियां आती हैं, वह शिक्षा में दखल देती हैं। अपनी वोटिंग उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उसके अनुरूप पाठ्यक्रम बदल देती हैं। जिसका राष्ट्र निर्माण में कोई योगदान नहीं होता। आज पाठ्यक्रम में देशप्रेम की भावना जगाने वाली कविताओं की जगह नहीं मिलती है। पहले की तुलना में अध्यापकों को भी अन्य कामों में व्यस्त कर दिया गया है, जिससे वह उन्हीं कामों में उलझा रहता है।

पढ़ाने के काम को सरकार व अध्यापकों ने दोयम दर्जे का काम मान लिया है। कुल मिलाकर इन सब से शिक्षा का स्तर गिर रहा है। इसका स्तर उठाना है। बालकों को संस्कारी बनाना है, तो शिक्षा का राजनीतिकरण रोकना होगा। इसे स्वायत्त संस्था बनाना होगा, जिसमें किसी का हस्तक्षेप ना हो यही बालकों के व देश के हित में होगा।

1.1.3.3 शिक्षण व्यवस्था में क्षरण को पश्चिमी पद्धति जिम्मेदार

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था क्षरण कि ओर है। इसके लिए केवल छात्र ही नहीं अभिभावक व शिक्षक भी जिम्मेदार है। पुरातन गुरु-शिष्य परंपरा हमारी देशी शिक्षा पद्धति थी। जिसमें छात्र अनुशासन में बंधकर गुरु का सम्मान करते थे, तथा शिक्षा पाते थे। परन्तु अब ऐसी स्थिति नही है, शिक्षा का बाजारीकरण हो गया है। जिस कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली क्षरण की ओर है, छात्र को शिक्षक का डर नही है, अभिभावक भी इस बात पर ध्यान नही देते हैं। अभिभावक बच्चों को शिक्षकों के पास भेजते तो है पर जानने का प्रयास नही करते कि हमारा पुत्र या पुत्री पढ़ाई कर रहा है या नहीं। वर्तमान में शिक्षक छात्र संबंधों में कमी आई है,यह एक औपचारिकता के स्तर पर आ गया है। छात्रों में सम्मान देने की भावना में कमी आई है। इसमें

छात्र ही दोषी नहीं बहुत हद तक शिक्षक भी जिम्मेदार है, देखने में आ रहा है कि बहुत जगह शिक्षक इस सम्मान का गलत फायदा उठाते हैं। पूर्व में गुरु शिष्य सम्बन्ध निःस्वार्थ था वर्तमान में यह स्वार्थपरक हो गया है। पैसा कमाने की सारी हदें शिक्षक पार कर चुके हैं जिस कारण यह क्षरण देखने को मिल रहा है। समय आ गया है कि अभिभावक,गुरू,छात्र चिन्तन करें। दूसरे पाश्चात्य शिक्षा पद्धति भी इस क्षरण के लिए जिम्मेदार है। इसे पुर्नप्रतिष्ठापित करने के लिए एक प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करना पड़ेगा। प्राचीन गुरू-शिष्य परंपरा के टूटने से वर्तमान में शिक्षा की यह दुर्गति हुई है। पाश्चात्य शिक्षा पद्धति ने हमारी संस्कृति पर घात किया है। इस पर हम सभी को गहन चिन्तन के साथ राजनयिक को भी गंभीरता से शिक्षा व्यवस्था में बदलाव करना होगा।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में क्षरण के ढेर सारे कारण है। सरकारी शिक्षा व्यवस्था का क्षरण होने के साथ ही निजी कोचिंग क्लासेज व निजी स्कूल का उदय का कारण बना। सरकारी विद्यालयों में न तो मजबूत आधारभूत संरचना है न ही योग्य शिक्षक जिस कारण शिक्षा का बाजारीकरण होते चला गया जो अब चरम पर है। इस समानांतर शिक्षा प्रणाली में पैसा कमाना मुख्य ध्येय रह गया है। जिस कारण छात्र पढ़े या नहीं पढ़े पैसा आना चाहिए हॉबी हो गया है। जिसे हमें सुधारने के लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता है। हम जब से अपनी शिक्षा पद्धति में पश्चिमी प्रणाली को लाए हैं। शिक्षक-छात्र के बीच सम्मान देने की खाई बढ़ी है। पहले जहां प्रणाम का स्थान था अब गुड मॉर्निंग व गुड इवनिंग पर आ गया है। इसमें आप शिक्षा में किस प्रकार की आशा कर सकते हैं। हमें सबसे पहले प्राथमिक स्तर की शिक्षा पर खास ध्यान देना होगा। इसे संस्कृति से जोड़ना होगा। तभी आप देसी संस्कृति वाली शिक्षा की कल्पना कर सकते हैं।

1.1.3.4 शिक्षा की उपेक्षा

शिक्षा किसी भी प्रदेश के विकास की रीढ़ होती है। इसमें भी प्राथमिक शिक्षा तो भवन की नींव की तरह है। यदि नींव ही कमजोर हो गई तो मजबूत भवन की उम्मीद बेमानी हो जाती है। दुर्भाग्य से पंजाब के तमाम सरकारी स्कूलों में ऐसा ही हो रहा है। स्कूलों में आधारभूत ढांचे से लेकर अध्यापकों तक का अभाव है। एक अध्यापक पांच-पांच कक्षाएं संभाल रहे हैं। ऐसी स्थिति के कारण ही अभिभावक सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का दाखिला करवाने से परहेज करते हैं और प्राइवेट स्कूलों को प्राथमिकता देते हैं। सरकारी स्कूलों की दयनीय स्थिति के कारण ही गली-गली में प्राइवेट स्कूल खुल गए हैं। तमाम प्राइवेट

स्कूलों ने शिक्षा को व्यवसाय बना लिया है और अभिभावकों का भरपूर शोषण कर रहे हैं। होशियारपुर के गांव कितना के सरकारी स्कूल की बात करें तो यहां चार वर्षो से कोई अध्यापक है ही नहीं। ऐसी खबरें हैरान करती हैं, साथ ही सरकार व शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवालिया निशान भी लगाती हैं। यह स्थिति देश के संपन्न राज्यों में शुमार पंजाब की हो तो और आश्चर्य होता है। आखिर सरकार को स्कूलों में अध्यापक की व्यवस्था करने के लिए कितना वक्त चाहिए। क्या सरकार इतनी लाचार है कि चार सालों में स्कूल में अध्यापक भी नहीं नियुक्त नहीं कर सकती। गांव कितना के स्कूल में एक अध्यापिका है भी तो वह तीन साल में तीसरी बार विदेश गई है। यहां बच्चों को पढ़ाने के लिए एक एनआरआइ ने अपने स्तर पर वेतन देकर दो अध्यापिका की व्यवस्था की है। ऐसी स्थिति में यह तो तय है कि वहां पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य प्रभावित होगा ही। करीब पांच साल पहले केंद्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून बनाया था। इसका मकसद यही था कि हर बच्चे को शिक्षा मिले क्योंकि यह उसका अधिकार है। लेकिन सिर्फ कानून बन जाने से बात नहीं बनती। यह तो सरकारों को देखना होगा कि कानून के मुताबिक काम हो रहा है या नहीं। पंजाब सरकार को तत्काल ऐसे स्कूलों की पहचान कर वहां अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए और बार-बार विदेश जाने वाले अध्यापकों से सख्ती से पेश आना चाहिए क्योंकि शिक्षा की उपेक्षा देश के भविष्य से खिलवाड़ करने जैसा है।

1.1.3.5 भारतीय संस्कृति की उपेक्षा

शिक्षा की संस्था सभ्य समाज की एक जरूरी संस्था का स्थान ले चुकी है। अत: शिक्षा किस लिए हो या उसका क्या उद्देश्य हो, यह प्रश्न समाज और व्यक्ति के जीवन के संदर्भ में उठना स्वाभाविक है। देश में आजकल यह बात आम होने लगी है कि हमारी शिक्षा अपने परिवेश-संस्कृति से कटती जा रही है। जिस समाज या संस्कृति से शिक्षा का पोषण होता है और जिसके लिए वह प्रासंगिक होनी चाहिए वह एक दु:स्वप्न सरीखी होती जा रही है। इन सबके बीच जो पढ़-लिख जाता है वह मानो एक बड़ी यांत्रिक व्यवस्था के उपकरण के रूप में ढल जाता है। प्रतिस्पर्धा की दुनिया में उसका उद्देश्य सफलता, उपलब्धि और भौतिक प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने तक सीमित हो रहा है। इस तरह यह शिक्षार्थी के मानस को संकुचित बनाने का काम कर रही है। एक ओर तो विश्वस्तरीय शिक्षा देने का संकल्प लिया जाता है तो दूसरी ओर सर्वत्र एक ही ढर्रे पर पढ़ाई करने की कवायद भी जारी है।

आज प्रचलित शिक्षा मनुष्य को स्वचालित रोबोट बनाने पर जोर देती है। इस शिक्षा से निकलने वाले होनहार युवाओं की स्थिति विचित्र हो रही है। जिस सीढ़ी के सहारे चढ़कर वे ऊपर पहुंचते हैं उस सीढ़ी से बेझिझक अलग हो जाते हैं। वे उस भूमि से अलग हो जाते हैं जिसने जीवन दिया। यह शिक्षा सांस्कृतिक विचार, विश्वास, सहयोग, सहनशीलता आदि की कीमत पर दी जा रही है। लिहाजा उनमें सामाजिक सृजनात्मकता और निजी लाभ के आगे किसी तरह की सामाजिक सकारात्मकता विरल होती जा रही है। यदि हम स्कूली शिक्षा को लें जो शिक्षा का प्रवेश द्वार है, तो पाते हैं कि भारत में पहले कई तरह के विद्यालय चलते रहे हैं। यहां प्राचीन काल में गुरुकुल, पाठशाला और मदरसा मौजूद थे। यहां आने के बाद अंग्रेज अधिकारियों ने प्रारंभिक शिक्षा के संबंध में जो रपटें लिखीं वे आश्चर्यजनक रूप से इसकी अच्छी स्थिति प्रदर्शित करती हैं। उनकी नजरों में तब यहां की शिक्षा संस्कृति से जुड़ी थी। बाद के दिनों में कोठारी शिक्षा आयोग द्वारा संस्कृति पर ध्यान देने की बात की गई थी। उसने इस बात पर जोर दिया था कि कार्यक्षेत्र, शिक्षा, घर, परिवार, व्यक्ति और समाज के बीच कोई द्वंद्व नहीं होना चाहिए।

महात्मा गांधी ने भी 'नई तालीम' का विचार दिया था जिसमें शरीर, हाथ, बुद्धि सबका संतुलन होता है और इसके लिए उन्होंने स्थानीय संसाधन के उपयोग का सुझाव दिया था। इसमें निरी बौद्धिकता पर अतिरिक्त बल न देकर शरीर, मन, आत्मा सब पर ध्यान देने की बात कही गई। इसके अंतर्गत स्वावलंबन, देशभक्ति, आत्म-संपन्नता और संयम जैसे जीवन मूल्यों पर बल देना प्रस्तावित है। प्राथमिक शिक्षा से मोहभंग के साथ कई विकल्पों पर काम शुरू हुआ। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने शांतिनिकेतन के पास श्रीनिकेतन बनाया था। रुक्मिणी देवी अरुंडेल, एनी बेसेंट और जे कृष्णमूर्ति ने भी अलग-अलग प्रयास किए। इन सब प्रयासों में जीवन कौशल और कला पर बल दिया गया ताकि छात्रों को आस-पास की दुनिया से जुड़ने का भी अवसर मिले। उनका मानना था कि समग्र व्यक्तित्व के विकास के लिए प्राचीन और नए हुनर भी आने चाहिए जो संस्कृति विशिष्ट होते हैं।

शिक्षा के मूल्य की अभिव्यक्ति मूर्त और अमूर्त, दोनों माध्यमों से होती है। समाज और समुदाय व्यक्ति से ऊपर होते हैं। भारत की समृद्ध वाचिक परंपरा बड़ी प्राचीन है। आज जो शिक्षा (मस्तिष्क!) विदेश से लाकर देश में प्रत्यारोपित की जा रही है वह एक हद तक भारतीय मूल्यों को जड़ से विस्थापित कर रही है। आर्थिक संपन्नता से सांस्कृतिक विपन्नता की भरपाई नहीं हो सकती। नैतिक मूल्यों का अभाव, तनाव,

द्वंद्व, हिंसा और असहनशीलता तो किसी भी तरह ग्राह्य नहीं है। मनुष्यता के विकास के लिए संस्कृति आधारित शिक्षा के अतिरिक्त और कोई साधन उपलब्ध नहीं है।

भारतीय संस्कृति की दृष्टि में अच्छी दुनिया वह है जिसमें बहुलता, पारस्परिकता और सह अस्तित्व हों, पर हम इसे छोड़कर अंग्रेजी पर अधिकार करने चले और उसी ने हम पर अधिकार जमा लिया। सांस्कृतिक क्षति के चलते हम बोलने और सोचने को लेकर विभाजित व्यक्तित्व वाले होते जा रहे हैं। अर्थात बाहर से ग्रहण किया या लिया, पर अंदर जो मौजूद है वह गया भी नहीं। अब द्वंद्व और दुविधा के साथ किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं। औपनिवेशिक शक्तियों की भाषा हमारा माध्यम हो गई है। धर्म, भाषा, पशु, पक्षी, प्रतिमा, पुरातत्व, कला, राजनीति और अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्रों में भारतीय अपनी शिक्षा से अपरिचित होते जा रहे हैं।

हमें अपनी संस्कृति की भी चिंता नहीं है। विद्यालयों में प्रक्रिया के स्तर पर अध्यापक और सहपाठी के साथ सहयोग कैसे स्थापित किया जाए यह आज की कठिन चुनौती बन गई है। आज शिक्षा एक खास तरह का व्यापार बनती जा रही है। विद्यालयों के साथ समाज का रिश्ता नहीं बन रहा है और जन भागीदारी बहुत सीमित हो गई है। आधुनिकता और यहां की प्राचीन ज्ञान परंपरा के बीच आज तक सामंजस्य नहीं बन पाया है। सूचना-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रगति तो हो रही है, पर इन सबके बीच इंसान खो गया है।

आज बुद्ध, महावीर, ईसा, महात्मा गांधी के विचार कहां हैं? हम किधर जा रहे हैं? आज यह विचारणीय सवाल है। हमें भौतिकता के मिथक तोड़ने होंगे। मशीनीकरण की होड़ से बचना होगा। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में स्थित सामाजिक चेतना, ब्रह्मांडीय चेतना ही आधुनिक आत्मकेंद्रित उपभोक्तावाद की समस्या का समाधान कर सकती है। अहं का प्रकृति पर विजय की जगह प्रकृति और समाज के बीच संबंध स्थापित करने से ही स्वराज, स्वदेशी और सर्वोदय के विचार जीवित होंगे। शांति की संस्कृति का विकास नैतिक अनुशासन से ही आ सकेगा। और तभी बच्चे में श्रेष्ठ का आविष्कार करने की ललक और स्वावलंबी जीवन व्यतीत करने की इच्छा पनप सकेगी। तभी पूर्ण सामाजिक विकास और धार्मिक समानता भी आ पाएगी।

दरअसल विचारों का विकास और उनकी समाज में उपस्थिति के कई आधार होते हैं। प्राय: माना जाता है कि आधुनिकता का विचार पश्चिम से भारत की ओर आगे बढ़ा। यहां की अपनी आधुनिकता को औपनिवेशिक आधुनिकता ने नकारात्मक ढंग से प्रभावित किया। यहां एक तरह की संकर या मिश्रित आधुनिकता का आरंभ हुआ। यहां की आधुनिकता पश्चिमी आधुनिकता से जटिल रूप में जुड़ी और फिर शिक्षा का सांस्कृतिक विमर्श भी बाधित हुआ। जाहिर है शिक्षा का प्रयोजन भविष्य के लिए तैयारी और नियोजन से जुड़ा है। इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसे में जरूरी है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में समय के साथ आ गई इन खामियों को दूर किया जाए।

1.1.4 शिक्षा और संस्कृति

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा कार्य और विचार की नई पद्धतियां सीखते रहते हैं। उसे व्यवहार में ऐसे बदलाव लाने को बढ़ावा मिलता है, जिससे मनुष्य की स्थिति में सुधार आए। छात्रों में एक सामाजिक भाव की संस्कृति पनपने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षण संस्थान ज्ञान के मंदिर हैं, मंदिर इसलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं,

"न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।"

संस्कृति किसी समाज की पहचान होती है यह उसके रहन-सहन एवं खान-पान की विधियों व्यवहार प्रतिमानो, रीति-रिवाज, कला-कौशल, संगीत-नृत्य, भाषा-साहित्य, धर्म-दर्शन, आदर्श-विश्वास और मूल्यों के विशिष्ट रूप में जीवित रहती है। तब किसी समाज की शिक्षा पर उसकी संस्कृति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। जिस समाज की संस्कृति आध्यात्म प्रधान होती है उस समाज में शिक्षा स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की प्राप्ति की ओर अधिक झुकी हुई होती है और जिस समाज की संस्कृति भौतिकवादी होती है उसकी शिक्षा प्रतियोगिता पर आधारित होती है और शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति का श्रम भौतिक उद्देश्य की प्राप्ति की और नियोजित होता है दूसरी ओर कोई समाज शिक्षा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखता है उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रमित करता है और उसमें परिवर्तन एवं विकास करता है।

संस्कृति और शिक्षा का गहरा संबंध होता है। यह एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। एक के अभाव में दूसरे के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा और संस्कृति में चोली और दामन जैसा संबंध है शिक्षा के साथ सांस्कृतिक मूल्यों की सुरक्षा की जाए तो शिक्षा जीवन निर्माण में उपयोगी बन सकती है।

1.1.4.1 शिक्षा में संस्कृति का महत्व

भारतीय परिवेश में जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो भारत में "विद्या जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण वस्तुतः मूलभूत साधन थी परंतु वह साधन ही रहे साथ कभी नहीं बनी।" जिससे केवल भारतीय शिक्षा व्यवस्था में ही नहीं बल्कि समाज व्यवस्था में भी कई त्रुटियां रही हैं जिसका परिणाम हमें संस्कृति पर भी दिखाई पड़ता है। आज शिक्षा में संस्कृति को जोड़ कर देखा जाए तो मानव की प्रवृतियां संस्कार से असंस्कार की ओर बढ़ रहीं हैं इसका एकमात्र कारण है आधुनिक विज्ञान, राजनीति और संस्कृति में सामंजस्य का अभाव। शिक्षा संस्थाओं का व्यवसायीकरण हो चुका है और ज्ञान का माध्यम केवल एक ही भाषा को माना जा रहा है इसके विपरीत परिणाम भी समाज को झेलने पड़ रहे हैं भारतीय आधुनिक जगत में जो समस्याएं सामने आ रही हैं उनमें हमारी शिक्षा व्यवस्था नवीन तरुण होती संस्कृति और सामाजिक विषमता ही एक में कारण है जिसके लिए किसी एक को दोषी मानना पूर्णता गलत होगा।

1.1.4.2 शिक्षा और संस्कृति का अंतर्संबंध

संस्कृति तथा शिक्षा मानव जीवन के दो जीवंत पहलू हैं। संस्कृति परिष्कृत परिवेश तथा व्यवस्था प्रदान करती है जबकि शिक्षा मानव का विकास करती है। यदि व्यक्ति का सही ढंग से विकास नहीं होगा तब वह संस्कृति के अवयवों को सही परिप्रेक्ष्य में ग्रहण नहीं कर सकता है। व्यक्ति को अपनी संस्कृति का ज्ञान शिक्षा से ही होता है एवं दूसरे शब्दों में शिक्षा को संस्कृति का संवाहक कहा जा सकता है। शिक्षा और संस्कृति में सदैव अटूट सम्बन्ध रहता है। इसी कारण व्यक्ति का सांस्कृतिक विकास करना भी शिक्षा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है। वस्तुत: संस्कृति तथा शिक्षा एक-दूसरे के पूरक हैं एवं दोनों का समन्वय होने पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव होता है।

शिक्षा और संस्कृति की बात की जाए तो शिक्षा और संस्कृति में ऐसा गहरा संबंध है जैसे चोली और दामन का होता है। उनका एक दूसरे के बिना संपूर्ण होना कभी संभव नहीं है। जैसे कोई व्यक्ति शिक्षा

के बिना नहीं रह सकता उसी प्रकार वह शिक्षा के सांस्कृतिक नियमों से परिपूर्ण हुए बिना संपूर्ण नहीं माना जाएगा। व्यक्ति का अधिकतर समय समाज में ही गुजरता है वह समाज में रहकर समाज में घटित घटनाओं के माध्यम से नित नवीन हर रोज सीखता है। इस प्रक्रिया के दौरान भी वह शिक्षा द्वारा बनाए गए सांस्कृतिक नियमों का पालन बराबर करता रहता है क्योंकि "सांस्कृतिक मानव की सामुदायिक सौंदर्य मूलांक उपलब्धि है संस्कृति के तत्वों से शिक्षा का स्वरूप किसी समुदाय में बनता है जहां संस्कृति एक समुदाय की पीढियों से परिष्कृत विकसित जीवन शैली है वहां संस्कृति उसे परिष्कृत विकसित करने में सहायक नहीं अपरिहार्य अंग है।"

संस्कृति मनुष्य की बौद्धिक और नैतिक अवधारणाओं को प्रमाणित ही नहीं करती हैं उनका निर्माण भी करते हैं लेकिन यह सब कह कर हम विज्ञान की महत्ता को अस्वीकार नहीं कर सकते यह सब करने की क्षमता उसमें भी उतनी ही है इस प्रक्रिया में शिक्षा और संस्कृति का जो अंतर्संबंध बनता है वह महत्वपूर्ण है।

संस्कृति उनके सीखने के स्वभाव को निर्धारित करती है बहुत हद तक उसके इस स्वभाव से निर्धारित होता है कि बच्चा क्या सीखेगा और किन बातों को सीखना उसके लिए आसान होगा।"

शिक्षा जीवन का अनमोल उपहार है और संस्कृति जीवन का सार है इन दोनों के बिना समाज में सब कुछ बेकार है शिक्षा व्यक्ति के जीवन को ना केवल दिशा देती है वरन दशा भी बदल देती है।

1.1.5 धर्म और शिक्षा

धर्म और शिक्षा का गहरा संबंध है। एक सच्ची शिक्षा प्रणाली मनुष्य में उन्हीं आदर्शों तथा मूल्यों को विकसित करती है। जो संसार के समस्त धर्मों की प्रमुख दार्शनिक विचारधाराओं पर आधारित होते हैं। धर्म और शिक्षा का संबंध इसलिए भी है, कि शिक्षा का संबंध संस्कृति से है, और संस्कृति धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग है। जो कि संस्कृति को पाठ्यक्रम में अवश्य स्थान दिया जाता है। इसलिए धर्म भी पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है।

धर्म मानव में सहनशीलता तथा नम्रता आदि गुणों को विकसित करता है। इन गुणों के द्वारा शिक्षा जनतंत्र के आदर्श को सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकती है।

डॉ राधाकृष्णन ने वर्तमान युग में धार्मिक शिक्षा पर बल देते हुए कहा है कि. "यदि हम केवल औद्योगिक तथा व्यवसायिक शिक्षा पर बल देकर आध्यात्मिक शिक्षा की उपेक्षा करेंगे तो सामाजिक बर्बरता तथा राक्षस राज के आने में कोई कसर न रह जाएगी।"

उन्होंने आगे लिखा है भारतीय परंपरा के अनुसार शिक्षा के बल जीविका कमाने का ही साधन नहीं है और ना ही यह विचारों की पाठशाला तथा नागरिकता का स्कूल है। यह मानवीय आत्माओं को सत्य की खोज तथा गुणों को विकसित करने का प्रशिक्षण है। यह दूसरा जन्म है, द्वितीय जन्म है।

1.1.5.1 धर्म और शिक्षा एक दूसरे के पूरक

धर्म और शिक्षा का संबंध अत्यंत घनिष्ठ और प्राचीन है। प्राचीन भारत में शिक्षा धर्म पर आधारित थी। यूरोप में भी यही स्थिति रही है। धर्म व शिक्षा परंपरा पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। शिक्षा धर्म द्वारा ही नैतिक और आध्यात्मिक आदर्श प्राप्त करती है। शिक्षा बालक का चौमुखी विकास करती है। धर्म मानव में नैतिक, चारित्रिक एवं अध्यात्मिक विकास लाता है। अतः धर्म और शिक्षा दोनों ही बालकों के विकास में संलग्न है। भारतीय दर्शन में धर्म के 10 लक्षण बताए गए हैं। शिक्षा धर्म के बताए गए 10 लक्षणों पर बल देकर बालक को शिक्षित करती है। अतः धर्म और शिक्षा परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों का एक ही उद्देश्य है, मानव का सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास।

1.1.5.2. प्राचीन काल में धर्म के अधीन शिक्षा

भारत के प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिक पर आधारित थी। शिक्षा मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी। यह व्यक्ति के लिए नहीं बल्कि धर्म के लिए थी। भारत की शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विरासत परंपरा विश्व इतिहास में प्राचीनतम है। इस युग कि यह मानता थी कि जिस प्रकार अंधकार को दूर करने का साधन प्रकाश है। उसी प्रकार व्यक्ति के संशय और भ्रम को दूर करने का साधन शिक्षा है। प्राचीन काल में शिक्षा में धर्म का अधिक महत्व था। ऋग्वेद युग की धर्म का उद्देश्य था कि तत्व साक्षात्कार। ब्रह्मचर्य और

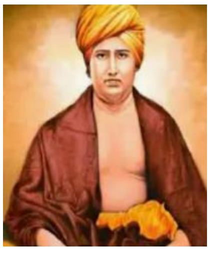
योगाभ्यास से तत्व का साक्षात्कार करने वाले विप्र, वैधस, मुनी, मनीषी के नामों से सुप्रसिद्ध थे। विद्यालय गुरुकुल, आचार्य कुल, ग्रह कुल आदि नामों से विदित थे। प्राचीन काल में धर्म के नियमानुसार शिक्षा दी जाती थी। आचार्य धर्म, बुद्धि से निशुल्क शिक्षा देते थे। वेदों का अध्ययन श्रावण की पूर्णिमा को उपाकर्म से प्रारंभ होकर पौष की पूर्णिमा को समाप्त होता था। शेष महीनों में अधीत पाठों को आवृत्ति, पुनरावृति होती रहती थी। इस प्रकार प्राचीन काल में शिक्षा में धर्म का महत्व अधिक था तथा शिक्षा धर्म के अनुसार ही प्रदान की जाती थी।

1.1.5.3. शिक्षा का धर्म से विमुखीकरण

प्राचीन काल में शिक्षा और धर्म का नजदीकी संबंध था। शिक्षा की शुरुआत धर्म के आधार पर हुई थी। शिक्षा धर्म के अधीन थी। धर्म का महत्व अधिक था। धर्म गुरुओं द्वारा शिक्षा की प्राप्त विद्यार्थियों को होती थी। धार्मिक शिक्षा के कारण समाज में नैतिकता व्याप्त थी। लेकिन जैसे-जैसे विज्ञान युग की शुरुआत के साथ-साथ हम आधुनिकता की ओर बढ़े तो धार्मिक कल्पनाओं को झूठा साबित करने लगे और आस्था-अनास्था में बदलने लगी। शिक्षा का स्तर भी बदलने लगा। शिक्षा का माध्यम तथा सोच धीरे-धीरे बदलने लगी। शिक्षा से नैतिकता, धर्म और मूल्य परकता का ह्रास होने लगा। शिक्षा अब केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हो गई थी। धर्म और नैतिकता से शिक्षा का संबंध धीरे-धीरे कम होने लगा। नैतिक विचार, धार्मिक मान्यताओं का लोप होता चला गया और शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविकोपार्जन था। कालांतर में शिक्षा का व्यवसायीकरण होने लगा। समय-समय पर पुनः वही संस्कृति और नैतिकता की शिक्षा में पुनः स्थापित करने में अनेक महापुरुषों ने योगदान दिया। जिनमें कई धर्मगुरु समाज सुधारक आदि शामिल हैं।

1.1.6 समाज सुधारकों के शैक्षिक प्रयास

- **महर्षि दयानंद सरस्वती**



महर्षि दयानंद सरस्वती एवं उनके अनुयायियों द्वारा स्थापित आर्य समाज ने साहित्यिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये। महेश दयानंद ने अपने ग्रंथ हिंदी में लिखकर राष्ट्र-भाषा के विकास में योगदान दिया। महेश दयानंद संस्कृत के महत्व को प्रतिपादित करते हुए उसके अध्ययन और अध्यापन हेतु बल दिया।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य अज्ञानता को दूर कर ज्ञान का प्रसार करना था, आता उसने प्राचीन आश्रम व्यवस्था को पुन स्थापित करते हुए उसके अध्ययन और अध्यापन हेतु बल दिया। उसने शिक्षा की प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को प्रचलित किया, जहां विद्यार्थी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए गुरु के आश्रम में विद्या अध्ययन कर सकें। और समाज ने ही मैं कल की माया से मुग्ध भारतीयों की मोह निद्रा को भंग किया। उस समय हिंदुओं में नारी शिक्षा के विरुद्ध वातावरण व्याप्त तथा स्त्रियों को पढ़ाना समाज में अनुचित माना जाता था और वेदों को पढ़ना-पढ़ाना स्त्रियों के लिए वर्जित था। स्त्रियों में कठोर पर्दा प्रथा भी स्त्रियों की शिक्षा में बाधक थी।

- **स्वामी विवेकानंद**



स्वामी जी सामाजिक परिवर्तन की गति को तीव्र करना चाहते थे और भारत में व्यापक बदलाव लाना चाहते थे। उन्होंने शरीर, मस्तिष्क और आत्मा की भूमिका पर विचार किया, लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा भरोसा 'आत्मा' पर है, जो उनकी क्रांति-दृष्टि को दृढ़ भारतीय जमीन देती है। यह विश्व में अन्यत्र संभव नहीं है। स्वामीजी कहते हैं- 'शारीरिक शक्ति द्वारा अनेक महान कार्य संपन्न होते हैं और मस्तिष्क की अभिव्यक्ति भी अद्भुत है, जिससे विज्ञान के सहारे तरह-तरह के यंत्रों और मशीनों का निर्माण होता है। स्वामी जी ने भारत के सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए किसी एक वर्ण या समुदाय के परिवर्तन को पर्याप्त नहीं माना है, जब तक सभी इस दिशा में तत्पर नहीं रहेंगे, तब तक यह बदलाव पूरा नहीं होगा। इसलिए वे सभी को विचारवान बनाना चाहते हैं और आचरण की शुद्धता पर भी बल देते हैं।

- **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन**



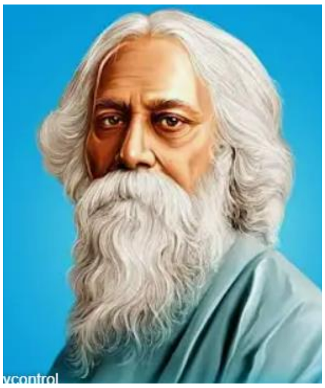
देश के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा जगत को नई दिशा दी। उनका जन्मदिन देश शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। वे निष्काम कर्मयोगी, करुणा हृदयी, धैर्यवान, विवेकशील और विनम्र थे। उनका आदर्श जीवन भारतीयों के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

एक बार डॉ. राधाकृष्णन के जन्मदिन के शुभ अवस र पर उनके छात्रों और दोस्तों ने उनसे जन्मदिन का जश्न मनाने की अनुमति मांगी लेकिन जवाब में उन्होने कहा कि मेरे जन्मदिन का जश्न मनाने के बजाय अगर 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। उनका मानना था कि समाज और देश की विभिन्न बुराइयों को शिक्षा के द्वारा ही सही तरीके से हल किया जा सकता है।

राधाकृष्णन जी ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु कई प्रयास किए और शिक्षकों, छात्रों और शिक्षा पद्धति के बीच एक मजबूत सम्बन्ध विकसित किया। कुल मिलाकर उन्होंने पूरी शिक्षा प्रणाली को ही बदल डाला। उनके अनुसार शिक्षकों को विद्यार्थियों का स्नेह और सम्मान प्राप्त करने के लिए आदेश नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें इसके योग्य बनाना चाहिए।

- **रवीन्द्रनाथ टैगोर**

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के समय में भारतीय शिक्षा का स्वरूप अपने पूर्वकालिक शिक्षा के सदृश थी। जिस प्रकार से प्राचीनकाल में शास्त्रीय शिक्षा के विकास पर विशेष बल दिया जाता था, ठीक उसी प्रकार से आधुनिक शिक्षा के विकास में भी योगदान दिया गया है।



रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक युग के महान दार्शनिक एक शिक्षाशास्त्री थे। अपने मौलिक एवं नए विचारों के द्वारा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में मह त्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी भारतीय संस्कृति के आधार पर भारतीय शिक्षा की नींव डाली। इन्होंने अपने संदेश में शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण में दिए जाने पर बल दिया, अतः ये प्रकृतिवादी शिक्षा के पक्षधारी थे। टैगोर ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए एक ऐसी शिक्षा की संकल्पना की जो मानव का पूर्ण एवं संतुलित विकास करें, जिसमें समाज एवं राष्ट्र दोनों की प्रगति हो, जिसके लिए उन्होंने अपने समय की क्रमबद्ध तथा निष्क्रिय शिक्षा का विरोध किया और बताया कि सभी शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बालक को जीवन तक विश्व के स्वर के मिलन से पूर्णतया अवगत कराए तथा दोनों के मेल के मध्य संतुलन स्थापित करें।

- **गुरुदेव रणछोड़ जी महाराज**



गुरुदेव रणछोड़ जी महाराज एक महान संत और समाज सुधारक थे, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके शैक्षिक प्रयासों का मुख्य उद्देश्य समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों तक शिक्षा का प्रसार करना था, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और समाज में सम्मानजनक जीवन जी सकें। उनका मानना था कि शिक्षा ही समाज के विकास का प्रमुख आधार है और इससे व्य क्ति के भीतर आत्मज्ञान, नैतिकता और सेवा भावना का विकास होता है।

गुरुदेव रणछोड़ जी महाराज का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति के समग्र विकास में सहायक होना चाहिए। उनके अनुसार, शिक्षा का मतलब है मन, बुद्धि, और आत्मा का विकास, जिससे व्यक्ति सही और गलत में भेद कर सके और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझ सके। वे शिक्षा को मानवता और नैतिकता से जोड़ते थे, और इस बात पर जोर देते थे कि शिक्षा का असली उद्देश्य सेवा और समर्पण की भावना को जागृत करना है।

गुरुदेव रणछोड़ जी महाराज ने शिक्षा में नैतिक और धार्मिक मूल्यों के समावेश पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक सफलता प्राप्त करना नहीं होना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के भीतर नैतिकता, अनुशासन और समाज के प्रति सेवा भावना का विकास करना चाहिए। वे धार्मिक शिक्षाओं के माध्यम से नैतिकता का विकास करना चाहते थे, ताकि व्यक्ति समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और एक सच्चे नागरिक के रूप में जीवन यापन कर सके।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा मनुष्य के जीवन में जीवन चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी देश के विकास एवं उसके सामाजिक उत्थान में उस देश के नागरिकों का सहयोग अति आवश्यक होता है। अतः शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक, संस्कृति एवं नैतिकता से परिपूर्ण होती है। जैसे-जैसे हम आधुनिकता और विज्ञान युग की ओर बढ़ते गए शिक्षा प्रणाली से धर्म संस्कृति और नैतिकता का लोप होता गया। विज्ञान युग तक आते-आते शिक्षा के क्षेत्र में कई बदलाव आए, शिक्षा का व्यवसायीकरण,

राजनीतिकरण हुआ। परंतु जब तक शिक्षा जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती।

वर्तमान समय में शिक्षा का धर्म से विमुखीकरण हुआ है और शिक्षा व्यवस्था में अनेक समस्याएं सामने आ रही हैं। शिक्षा के व्यवसायीकरण के बाद समाज में आर्थिक संपन्न लोग ही अपने बच्चों को शिक्षा दिला रहे हैं तथा गरीब, पिछड़े ,असहाय बच्चे आज भी अच्छी शिक्षा के लिए वंचित हैं। इन वंचित बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने व उनकी हर संभव मदद को कुछ धार्मिक सामाजिक संस्थायें प्रयास कर रही हैं। जिनमें से एक गुरुदेव रणछोड़ व्यास जी महाराज द्वारा स्थापित सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट है। जिनका मानवता की सेवा के लिए अमूल्य योगदान है। यह इंटरेस्ट नेट चिकित्सा के क्षेत्र में विश्व विदित है। लेटेस्ट समाज सेवा के क्षेत्र में अन्य गतिविधियों के साथ-साथ शैक्षणिक क्षेत्र में भी अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। इसलिए शोधार्थी द्वारा सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के शैक्षिक योगदान पर शोध कार्य करने का निश्चय किया गया।

1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध के लिए निम्न समस्या का चुनाव किया गया-

"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान"

1.4 समस्या कथन में निहित शब्दों की व्याख्या

1.4.1 सद्गुरु

सद्गुरु का अर्थ है एक ऐसा गुरु या आध्यात्मिक मार्गदर्शक जो सच्चे ज्ञान, अनुभूति और सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव करा सके। 'सद्गुरु' शब्द में 'सत्' का अर्थ है 'सत्य' या 'सच्चा', और 'गुरु' का अर्थ है 'शिक्षक' या 'मार्गदर्शक'। इस प्रकार, सद्गुरु वह व्यक्ति होता है जो आत्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो और अपने शिष्यों को भी सत्य का मार्ग दिखाने में सक्षम हो।

सद्गुरु को एक आत्म-साक्षात्कारी गुरु माना जाता है जो शिष्य को अज्ञानता के अंधकार से निकालकर सत्य की रोशनी में ले जाता है। उनका उद्देश्य सिर्फ बौद्धिक ज्ञान देना नहीं होता, बल्कि शिष्य को उसके अस्तित्व के सत्य का अनुभव कराना होता है।

1.4.2 ट्रस्ट

"ट्रस्ट" का हिंदी में अर्थ है "विश्वास" या "आस्था"। यह एक ऐसी भावना या विश्वास है, जिसके माध्यम से हम किसी व्यक्ति, संगठन, या व्यवस्था पर यह भरोसा करते हैं कि वह सही, ईमानदार और भरोसेमंद है।

प्रस्तुत लघुशोध में सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट से तात्पर्य गुरुदेव रणछोड़दास जी महाराज जी द्वारा 1968 में स्थापित एक ट्रस्ट से है जो जानकीकुंड चित्रकूट (म.प्र.) में स्थित है।

1.4.3 शैक्षिक योगदान

- **शैक्षिक**- शैक्षिक का अर्थ है शिक्षा से जुड़ा हुआ क्षेत्र अर्थात शिक्षा देने वाला या जिससे शिक्षा मिले सच में शिक्षा प्रणाली से संबंधित कार्य।
- **योगदान**-योगदान का अर्थ- सहयोग देना या किसी काम में साथ देने या किसी काम में साथ देने या सहायक होने की क्रिया। योगदान का आशय किसी को सहायता देने, हाँथ बंटाने मदद करने से हैं।

  प्रस्तुत लघुशोध में शैक्षिक योगदान से तात्पर्य शैक्षिक क्षेत्र में किया जा रहे विभिन्न प्रयासों से है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

- गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज के जीवन दर्शन एवं शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना ।
- सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
- सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के विभिन्न प्रकल्पों का अध्ययन करना।
- प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।
- अध्ययन के आधार पर शैक्षिक उन्नयन एवं नवाचार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.6 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज जी के व्यक्तित्व व कृतित्व,सामाजिक योगदान तथा सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के सामाजिक व शैक्षिक योगदान के अध्ययन तक सीमित है।

1.7 शोध विधि

किसी भी शोध कार्य में विषय विशेष के बारे में बोधपूर्ण तथ्यान्वेषण के लिए अनुसंधान अध्ययन विधि शोध क्रिया को सुचारू रूप से परिचालित करने का ढंग होती है। मानव ने समस्या समाधान के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया है जिसका प्रयोग समस्या की प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

प्रस्तुत लघुशोध का उद्देश्य " श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान" का अध्ययन करना है।प्रस्तावित शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य हेतु विवरणात्मक/वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत इकाई अध्ययन(case Study) विधि का चयन किया है। इकाई अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन,एक वृत्त अध्ययन, एकल/एकक अध्ययन आदि नामों से भी जाना जाता है।

इकाई अध्ययन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें एक समय में केवल एक इकाई का अत्यंत गहराई से अध्ययन किया जाता है । वह इकाई एक व्यक्ति भी हो सकता है और एक समूची संस्था अथवा कोई नीति, प्रक्रिया, प्रथा आदि भी हो सकती है । इसी प्रकार एक परिवार एक जन-समूह, एक जाति विशेष, धर्म आदि का व्यापक रूप से किया गया अध्ययन भी एकक अध्ययन के अंतर्गत आता है। इन अध्ययनों का उद्देश्य उस इकाई का प्रत्येक दृष्टिकोण से गहन अध्ययन करके इस बात पर प्रकाश डालना होता है कि वास्तव में समस्या क्या है?, वह किस प्रकार उत्पन्न हुई है?, उसे जन्म देने वाले कारक तत्व एवं प्रक्रियाएं क्या हैं? तथा वे किस प्रकार गतिशील रहीं है? लक्ष्यानुसार अनुसंधानकर्ता उस इकाई के विभिन्न पक्षों से संबंधित तथा विभिन्न स्रोतों से सूचना सामग्री एकत्र करता है। उस सूचना सामग्री का उपयुक्त विधि से विश्लेषण करके लक्ष्यानुसार निष्कर्षों का निर्धारण करता है।

इकाई अध्ययन विधि के अंतर्गत किसी एक सामाजिक इकाई से संबंधित सभी पक्षों का व्यापक, सूक्ष्म तथा गहन अध्ययन किया जाता है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

भारत अपनी कला, संस्कृति, दर्शन, शिक्षा आदि की गौरवशाली परंपराओं पर सदैव गर्व करता रहा है। भारतीय सांस्कृतिक विरासत विश्व में सर्वोत्कृष्ट है। इस सांस्कृतिक विरासत का निर्माण, संरक्षण व प्रसारण महान भारतीय शिक्षा परंपरा ने किया है, क्योंकि शिक्षा मनुष्य का तथा समाज का निर्माण करती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा, शिक्षक व शिक्षण-केन्द्र सम्पूर्ण समाज के लिए एक प्रकाश स्तंभ की भाँति थे जिसके प्रकाश में सद्गुणों को अपनाकर व्यक्ति ने अपना व समाज का कल्याण किया तथा प्राचीन भारत का स्थान सम्पूर्ण विश्व में सर्वश्रेष्ठ बन सका। सम्पूर्ण विश्व के लोग शिक्षा के लिए भारत की ओर देखते थे। किसी भी देश की उत्तम शिक्षा-व्यवस्था उस देश को सामाजिक व आर्थिक रूप से समृद्ध बनाती है। यही कारण रहा कि भारत इतना समृद्धशाली बन गया कि पश्चिम के आक्रान्ताओं ने अपनी कुदृष्टि इस देश पर डाली। उनके आक्रमणों से भारत की आर्थिक सम्पन्नता को तो नुकसान हुआ ही, शिक्षा-व्यवस्था पूर्ण रूप से जर्जर हो गई। परिणामस्वरूप, भारतीय शिक्षा से उदासीन होते चले गए। सम्पूर्ण विश्व को 'शून्य' और 'दशमलव' का ज्ञान देने वाले भारत के नागरिकों का शिक्षा-स्तर शून्य तक पहुँच गया। विदेशी आक्रमणकारियों और शासकों ने स्वहित में भारत में ऐसी शिक्षा प्रणाली लागू की जो गुलाम भारतीय नागरिक का निर्माण करती थी; जिससे उनके शासन-व्यवस्था को कोई डर न रहे। कई दशकों तक ऐसी ही स्थिति बनी रही। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक इतिहास ने एक बार फिर करवट ली और सोये हुए भारत के सिंह-सपूतों में सांस्कृतिक और राजनैतिक पुनरुत्थान करने के लिए कुछ महान महापुरुषों ने भारत-भूमि पर जन्म लिया है। राजा राम मोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, तिलक, गोखले, गांधी जी, रवींद्रनाथ टैगोर, मालवीय आदि ऐसी महान विभूतियां थीं जिन्होंने नव भारत का निर्माण किया। नव भारत का निर्माण कई स्तरों पर किया गया। आध्यात्मिक पुनरूत्थान का कार्य एक स्तर था, तो राजनैतिक जागृति दूसरा स्तर था। अन्य स्तर साहित्यिक विकास और सामाजिक विकास के थे। समाज-सेवा, सहयोग और सहकारिता का भाव नहीं पैदा कर सकती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में समय और आवश्यकताओं के अनुरूप नए सिरे से शिक्षा का सृजन किया जाए। देश में उपरोक्त गुणों का विकास करने के लिए महाराज रणछोड़ दास जी ने तत्कालिक परिस्थितियों से व्यवस्थित होकर एक ऐसी शिक्षा-प्रणाली को विकसित करने का प्रयास किया है जो मनुष्य को प्रकृति से

प्रेम एवं मानव से समाज के प्रेम का पाठ पढ़ा सके। निश्चित ही देश की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने एवं उसे प्रगति के पथ पर बढ़ाने में आज भी गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज के विचार समीचीन हैं।

श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट एक मानवीय संगठन है, जिसकी स्थापना 1968 में मानवता की निस्वार्थ सेवा के आधार पर की गई थी। परम पूज्य रणछोड़ दास जी महाराज ने जरूरतमंदों और वंचितों की पीड़ा को कम करने के उद्देस्य से ट्रस्ट की स्थापना की थी।

उनके सिद्धांत और विचारधारा ट्रस्ट और हमारी विविध गतिविधियों के लिए मार्गदर्शक शक्ति बनी हुई है। ट्रस्ट को औपचारिक रूप से 1968 में भारत के मध्य प्रदेश राज्य के धार, इंदौर में सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत किया गया था। ट्रस्ट के नाम में गुरुदेव द्वारा सिखाए गए 'सेवा' (निस्वार्थ सेवा) के मूल सिद्धांत और धार्मिकता के आदर्श को समाहित किया गया है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से गुरुदेव जी के शैक्षिक विचार, शैक्षिक प्रयास, सामाजिक क्रियाकलाप व श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के बारे में गहन अध्ययन कर विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं जनसामान्य को सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की प्रेरणा से ओत-प्रोत किया जा सकता है जो राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

द्वितीय अध्याय
संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का अध्ययन करना इस उपक्रम का वैज्ञानिक तथा महत्त्वपूर्ण चरण है, क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। केवल मानव ही ऐसा प्राणी है, जो सदियों से एकत्र ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव-सृजित ज्ञान के तीन पथ होते हैं–ज्ञान को एकत्रित करना, दूसरी पीढ़ी को ज्ञान का स्थानांतरण और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी शोध में ये तथ्य विशेष महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि वास्तविकता के समीप आने में उपलब्ध ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है। व्यावहारिक आधार पर संपूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढ़ी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर चिंतन, परिष्करण अथवा पूर्ण व आशिंक परिवर्तन करके निरंतर विकसित करने का प्रयास करती है। किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए आवश्यक है कि शोधकर्ता पुस्तकालय का उपयोग करें। अपनी समस्या से संबंधित यथासंभव उपलब्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व गतवर्षों में एकत्रित किये गए अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरणों से अपने को पूरी तरह से परिचित करने से यह ज्ञात होता है कि समस्या से संबंधित किस पथ पर या किस पक्ष पर कार्य हो चुका है, उसमें शोध की कौन-सी प्रविधि प्रयुक्त की गई है और समस्या का कौन-सा पक्ष ऐसा है, जिस पर अध्ययन नहीं किया गया है। व्यावहारिक आधार पर मानव उपलब्ध ज्ञान को प्राप्त करके चिंतन-मनन, शोधन और परिवर्तन करके निरंतर विकास की ओर अग्रसर होने का प्रयास करता रहता है। ज्ञानार्जन के तीनों पहलुओं–ज्ञान संचयन, समानुपातिक प्रेषण-संप्रेषण, ज्ञानवर्धन द्वारा किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांतों से भली-भाँति अवगत होना चाहिए। संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से संबंधित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं। "डॉ. सी.वी. रमन के नियमानुसार कोई भी शोध का संबंधित लिखित विवरण तब तक उपयुक्त नहीं समझा जा सकता है, जब तक कि उस शोध से संबंधित साहित्य का आधार उस विवरण में न हो।" अनुसंधान चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, उसका लक्ष्य संबंधित क्षेत्र में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना होता है कि मानव की इसी प्रकृति के फलस्वरूप ज्ञान की अविरल धारा प्रवाहित हुई है तथा सदियों से उसका एक क्रम निरंतर चला आ रहा है। ज्ञान की यह प्रक्रिया

अनंत है। जब तक मानव जीवन है, उसकी यह ज्ञान-तृष्णा कभी भी समाप्त नहीं होती है। क्या हो? कैसा हो? या कैसा होना चाहिए? इन प्रश्नों से अनभिज्ञ मानव जीवन सदैव जिज्ञासा में रहता है। उसकी इस जिज्ञासु प्रवृति ने सदैव ही कल के ज्ञान को नवीन रूप प्रदान किया है।

2.2 शैक्षिक योगदान से संबंधित कतिपय शोध अध्ययन

शोधार्थी द्वारा शैक्षिक योगदान से संबंधित पूर्ववर्ती शोध कार्यों का अध्ययन किया गया है, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

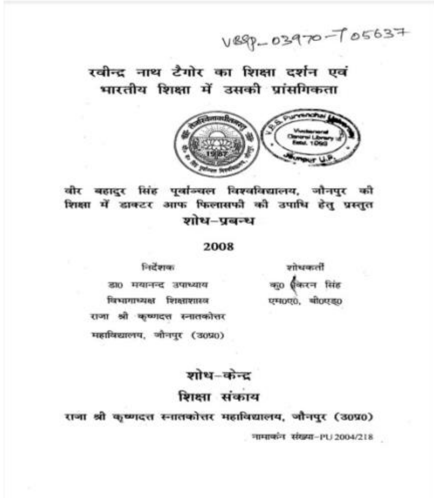
1. शादाब आबी, (2009) ने "डॉ. जाकिर हुसैन एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–



चित्र 2.2.1 **शोध शादाब जी के द्वारा**

- दोनों के विचारों में पारंपारिकता एवं आधुनिकता का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है।
- जाकिर साहब व कलाम साहब दोनों के अनुसार शिक्षा बच्चों के सर्वोत्तम का सर्वांगीण विकास है, दोनों विचारकों के इस प्रयत्न को भी शिक्षा शास्त्री स्वीकार करते हैं।
- अनुशासन के संबंध में भी दोनों के विचार अत्यंत प्रासंगिक हैं। आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन की चर्चा दोनों विचारक करते हैं, शारीरिक दंड को बिलकुल समाप्त करने के पक्ष में है। वर्तमान समय में भी आंतरिक, रचनात्मक एवं प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष की बातें प्रासंगिक हैं।
- पाठ्यक्रम में इन दोनों विचारको ने सहसंबंध, समन्वय, समाकलन एवं क्रिया पर बल दिया है।

2. सिंह, किरन (2008) ने "रवींद्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं भारतीय शिक्षा में उसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि–


VBSP-03970-T05637

रवीन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन एवं
भारतीय शिक्षा में उसकी प्रांसगिकता

वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर की शिक्षा में डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध

2008

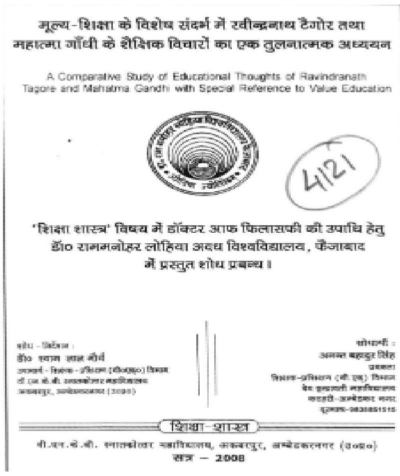
निर्देशक
डा0 मयानन्द उपाध्याय
विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

शोधकर्ती
कु0 किरन सिंह
एम0ए0, बी0एड0

शोध–केन्द्र
शिक्षा संकाय
राजा श्री कृष्णदत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)
नामांकन संख्या–PU 2004/218

- रवींद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा को व्यापक रूप में लिया है। उनका मत है कि शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है।
- टैगोर भी अपने स्कूल की स्थापना नगर के कोलाहल से दूर शांत वातावरण एवं प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहते थे। जहाँ छात्र और अध्यापक शिक्षा की साधना में लग सके।
- टैगोर चाहते थे कि ईश्वर मानवीय गुणों का प्रतीक हो और अंतिम सत्य को मानवता की कसौटी पर कसा जाए। मानव की वास्तविकता ही मानवता है।
- बच्चों के अंदर विश्वबंधुत्व की भावना भूमंडलीकरण की बात बनती जा रही है, संचार के माध्यम बढ़ते जा रहे हैं। बच्चों में देश-विदेश के प्रति प्रेम को भी बढ़ावा मिले।

3. सिंह, अनंत बहादुर (2008) ने "मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–


मूल्य-शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा
महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of Educational Thoughts of Ravindranath Tagore and Mahatma Gandhi with Special Reference to Value Education

4121

'शिक्षा शास्त्र' विषय में डॉक्टर आफ फिलासफी की उपाधि हेतु
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद
में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध।

शिक्षा-शास्त्र

सत्र – 2008

चित्र 2.2.3 **शोध अनंत सिंह के द्वारा**

- रवींद्रनाथ टैगोर हमारे देश के न केवल एक उच्चकोटि के कवि, गायक, संगीतज्ञ, नाटककार, कथाकार, निबंधकार, शिक्षाशास्त्री, दार्शनिक, मानवतावादी तथा राष्ट्रवादी थे, वरन वे एक कट्टर अंतरराष्ट्रीयतावादी थे। वे सच्चे अर्थ में एक विश्व नागरिक थे, जिनकी राष्ट्रीयता उनकी विशाल अंतरराष्ट्रीयता के अनुरूप थी।
- इनके संबंध में लिखते हुये आर. श्रीनिवास आयंगर लिखते हैं कि टैगोर संसार के महानतम शिक्षाशास्त्रियों में अद्वितीय स्थान रखते हैं, क्योंकि उन्होंने एक शिक्षादर्शन का विचार किया या निकाला और अपने दर्शन को कार्यक्षेत्र में अनूदित करने में उच्च मात्रा की सफलता प्राप्त की।

- रवींद्रनाथ टैगोर के संबंध में डॉ. सुरेंद्रनाथ दास गुप्त ने लिखा है कि उनकी प्रतिभासंपन्नता अद्वितीय और अतुलनीय थी और अन्यत्र कहीं भी यह प्रतिभा अथक परिश्रम से संबंधित नहीं पाई जाती है जैसा कि उनके बारे में एक कथन है कि उनका व्यक्तित्व हमारे सामने एक ऐसा चित्र उपस्थित करता है, जो मानव इतिहास में अद्वितीय है। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था कि यह गुरुदेव की उपलब्धि है, जिससे कि उन्होंने इस रिक्त स्थान को अपने निजी प्रयत्नों से भर दिया, यह संकेत शांति निकेतन की ओर है। प्रो. हुमायूँ कबीर का कथन है कि टैगोर ने परंपरा को बिना तोड़े हुए शिक्षा के विचारों में क्रांति ला दी है, इससे स्पष्ट है कि टैगोर ने भारतीय शिक्षा में क्या प्रगति और परिवर्तन किया है।

4. वर्मा, रामनिवास (2005) ने "भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–


भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ० भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय
आगरा की
शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच०डी०
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध
2005

निर्देशक
डॉ० पी० पी० सिंह

शोधार्थी:
रामनिवास वर्मा

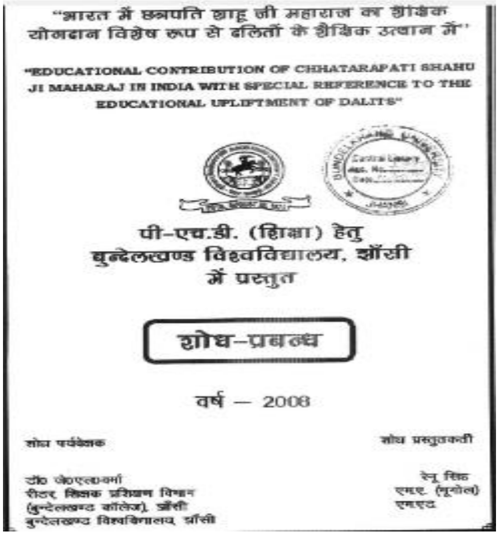
शिक्षा-संकाय
राजा बलवन्त सिंह कालेज,
आगरा

चित्र 2.2.4 **शोध रामनिवास वर्मा के द्वारा**

- भारतीय संस्कृति मूलतः एक जीवन मूल्य आधारित जीवन पद्धति है, जो अनिवार्य रूप से भारतीय लोकमानस को मूल्य निकायों की ओर निर्देशित करती है। ये मूल्य निकाय भारतीय जनजीवन पद्धति के प्रेरणा स्रोत हैं तथा सदैव से उसे उत्कृष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर अद्वितीय मानव व्यवस्था के निर्माण की दिशा में अग्रसर करते रहे हैं। भारतीय संस्कृति अपने सरलतम अर्थ में भी लोकजीवन में जीवनमूल्यों के अनुप्रयोग व विनियोग का ऐसा अनन्य उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो भारतीय जनजीवन को गति प्रदान करता है तथा मानव के सृजनात्मक घटकों को प्रेरित-विकसितकर निरंतर नए भारतीय जीवनमूल्यों के निर्माण का कार्य करता है।
- सांस्कृतिक मूल्यों की दृष्टि से भारतीय जीवनमूल्यों को विशेषज्ञता के विभिन्न क्षेत्रों से प्रादुर्भूत हुआ माना जा सकता है। ये विशेषज्ञता के क्षेत्र भारतीय जीवनमूल्यों को तर्काधार प्रदान करते हैं।

5. सिंह, रेनू (2008) ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि–

- आधुनिककाल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण शाहू जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान हैं। स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति, एकाग्रता, चिंतन, समाजीकरण, सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास, शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्त्व इसमें हैं, जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक, उपयोगी एवं सार्थक हैं व इन्हें उच्चतम शिक्षाशास्त्री के रूप में अधिष्ठित करते हैं।


"भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में"

"EDUCATIONAL CONTRIBUTION OF CHHATARAPATI SHAHU JI MAHARAJ IN INDIA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE EDUCATIONAL UPLIFTMENT OF DALITS"

पी-एच.डी. (शिक्षा) हेतु
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
में प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

वर्ष — 2008

शोध पर्यवेक्षक
डॉ० जे०एल०वर्मा
रीडर, शिक्षक प्रशिक्षण विभाग
(बुन्देलखण्ड कॉलेज), झाँसी
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

शोध प्रस्तुतकर्ती
रेनू सिंह
एम.ए. (भूगोल)
एम.एड.

चित्र 2.2.5 **शोध रेनू सिंह के द्वारा**

- इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धांत हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं, अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले हैं, उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धांत कहा जा सकता है।
- इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपनाकर भारत की उद्देश्यविहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

6. सिंह, नीलम, (1999) ने "भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" शीर्षक पर शोध का अध्ययन किया और यह पाया कि–

- मिशनरियों का शैक्षिक योगदान भारतीय इतिहास में सदैव चिरस्मरणीय रहेगा। यद्यपि मिशनरियों ने विशुद्ध परोपकारिता की भावना से स्कूल संचालित नहीं किए थे, बल्कि इनका मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था। फिर भी इन लोगों ने स्कूल की कार्यप्रणाली तथा संगठन में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण सुधार किए, जिसके कारण स्कूल के स्वरूप तथा संरचना के विषय में हमारी धारणाएँ हमारी पारेपरिक अवधारणा से हटकर तथाकथित आधुनिक (भौतिकतावादी) हो गई।


भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान
तथा
वर्तमान समय में उपादेयता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के अन्तर्गत
पी-एच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

निर्देशिका :
डा० मृदुला भदौरिया
रीडर, शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहू जी महाराज कानपुर
विश्वविद्यालय, कानपुर

शोधकर्त्री :
नीलम सिंह

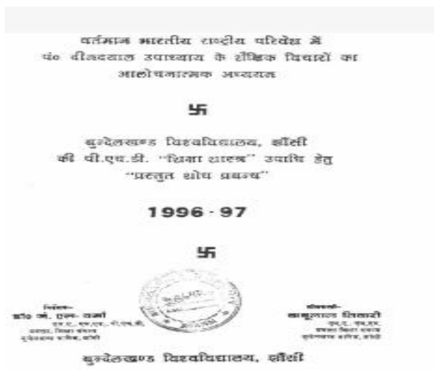
१९९९

चित्र 2.2.6 **शोध नीलम सिंह के द्वारा**

- सर्वप्रथम मिशनरियों ने हम लोगों को स्कूल की नवीन अवधारणा प्रदान की। इसके पहले स्कूल क्या है? और स्कूल किसे कहते है? इस संबंध में हमारे विचार अपने ढंग के थे। मिशनरियों के आगमन से पूर्व देशी पाठशालाओं की स्थिति अत्यंत सोचनीय हो गई थी, ये पाठशालाएँ अधिकांशतः टूटे-फूटे मकानों, गोशालाओं, अस्तबलों या किसी ताल्लुकेदार के मकान एक हिस्से में लगा करती थीं। इस प्रकार स्कूल क्या है? तथा स्कूल में क्या कार्य होगा? जनसाधारण के समझ में नहीं आता था। मिशनरियों ने सबसे पहले विद्यालय को सार्वजनिक शिक्षा का केंद्र माना और भारत में साविधिक शिक्षा की नींव डाली। इस प्रकार मिशनरियों के द्वारा स्कूल के लिए किए गए साविधिक कार्यक्रम को देखकर वर्तमान समय में भारतीयों ने उनकी शिक्षाप्रणाली से सीखकर साविधिक शिक्षा के कार्यक्रम को अपनाया।
- मिशनरियों के आगमन के पूर्व भारत में देशी शिक्षा प्रचलित थी। विदेशी आक्रांताओं की नीतियों के चलते देशी शिक्षा के पाठ्यक्रम अत्यंत संकुचित तथा अपर्याप्त हो गए थे। देश की निर्धनता देशी शिक्षा की अवनति का प्रधान कारण थी। देश की अधिकांश जनता निर्धन होने के कारण अपने बच्चों को नाम मात्र तक की फीस तक नहीं दे पाते थे। देशी शिक्षा के पतन के बाद यूरोपीय जातियों ने प्रविष्ट किया और इसके साथ ही वहाँ की यूरोपीय मिशनरियाँ भी आईं, जिन्होंने धर्मप्रचार के लिए शिक्षा को अपना माध्यम चुना और अनेक प्राथमिक विद्यालय खोले। प्राथमिक शिक्षा के प्रारंभिक प्रयास निशनरियों द्वारा किए गए। इनका उद्देश्य अपनी बस्ती के बालकों की शिक्षा का प्रबंध करना था तथा शिक्षा द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार करना था।

7. **तिवारी, बाबूलाल (1996-97)** ने "वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

- पं. दीनदयाल जी एक संत राजनेता थे। शिक्षा, संस्कार एवं धर्म उनकी प्रमुख अभिधारणाएँ हैं। वे लोकतंत्र के लिए लोकमत परिष्कार को आवश्यक मानने वाले, अर्थशास्त्र नियंत्रित उद्योग के विरोधी एवं धर्म नियंत्रित अर्थ के पक्षधर थे। समाज को नियंत्रित करने वाली शक्ति राजनीति में नहीं होती वरन् संस्कृति में होती है, उनका ऐसा मंतव्य था, इसीलिए


वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में
पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का
आलोचनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
की पी.एच.डी. "शिक्षा शास्त्र" उपाधि हेतु
"प्रस्तुत शोध प्रबन्ध"

1996 - 97

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

चित्र 2.2.7 **शोध बाबूलाल तिवारी के द्वारा**

'संस्कृति ' उनका प्रिय विषय बनी । अतः ये नेता कम सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यकर्ता ज्यादा थे। उनका ध्यान राजनीति की अपेक्षा सांगठनिक शक्ति को बढ़ाने व वैचारिक चिंतन पर अधिक था।

- दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की सभी विचारधाराओं को अपूर्ण एकांगी एवं प्रतिक्रियावादी मानते थे। पश्चिम द्वारा मानव को रोटी कपड़ा और मकान की आवश्यकताओं वाला प्राणी निरूपित किए जाने को असंगत तथा राजनैतिक प्राणी, सामाजिक प्राणी या आर्थिक प्राणी की संज्ञा को एकांगी मानते थे। उन्होंने माना है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही मानव की व्यष्टि व समष्टिगत आवश्यकता हैं। इन चारों पुरुषार्थों के अनुसार ही हमारी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक विचारधाराओं को विकसित किया जाना चाहिए। उनके इसी चिंतन से ही उनका 'एकात्म मानववाद' प्रकट हुआ।

8. शर्मा डॉ. शशिकांत (2007) ने "गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया और यह पाया कि–

- गिजू भाई शिक्षा द्वारा स्वतंत्रता, निर्भयता, स्वावलंबन, सत्य, प्रेम, अहिंसा, त्याग, मैत्रीभाव, दया, अपरिग्रह, सहिष्णुता, सेवाभाव, सामाजिक संवेदनशीलता, स्वच्छता, सदाचरण, सादगी व सरलता, सत्-असत् विवेक, वैज्ञानिक अभिवृत्ति जैसे मूल्यों का विकास करने पर बल देते हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सौंदर्य, प्रेम, स्वाधीनता, नियमन व स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को अत्यंत मौलिक रूप से परिभाषित किया है।


गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक
भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, से
शिक्षा शास्त्र में
पी-एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध - प्रबन्ध

2007

सह - निर्देशक :
डा. दिनेश कुमार शर्मा

निर्देशक :
डा0 शशिकान्त शर्मा

शिक्षा संस्थान:-
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

चित्र 2.2.8 **शोध शशिकांत शर्मा के द्वारा**

- गिजू भाई कहते हैं कि मनुष्य शरीर की शक्ति बढ़ा सकता है, बुद्धि का वैभव प्राप्त कर सकता है, परंतु अगर मनुष्य आत्मा की शुद्धि प्राप्त करने में पूरी जिंदगी व्यतीत कर दे, तब भी सफलता दूर ही रहेगी। यह विकास इतना कठिन, इतना सूक्ष्म है कि मात्र कथा-कहानी सुनाकर या उपदेश

देकर नहीं किया जा सकता है। वे कहते हैं कि सत्य का पाठ पढ़ाकर बालक से सत्य की अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति या तो मूर्ख होता है, अज्ञानी होता है या ढोंगी। इस प्रकार गिजू भाई उपदेशात्मक रूप से नीति शिक्षण की व्यर्थता सिद्ध करते हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण का राग अलापने वालों की नसों में अनीति के भयंकरतम कीटाणु घुस गए लगते हैं। चूँकि वे अपने अंदर की अनीति से भय खाते हैं, उससे लड़ने में सक्षम नहीं है, अतः उसे दुनिया से हटाने के लिए लड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि नीति शिक्षण की क्रिया मनुष्य की आत्मा को स्वतंत्रता से भ्रष्ट करती है। मनुष्य स्वयं अनीति पर चलता है, पर चाहता है कि बालक नीतिवान बने, जो कदापि संभव नहीं है।

- गिजू भाई बालक को प्रकृति की शिक्षा दिए जाने का प्रबल समर्थन करते हैं। उनका कहना था कि अपने बालक को प्रकृति से दूर रखकर क्या हम उसको देव बनाएँगे अथवा दानव? प्रकृति द्वारा दिया गया शिक्षण ही गिजू भाई की दृष्टि में उत्तम सामाजिक शिक्षण है। इस शिक्षण से उसका नैतिक विकास सहज स्वाभाविक बनता है और वह धार्मिक विकास के सुदृढ़ आधार के रूप में चिरस्थायी रहता है। प्रकृति शिक्षण में स्व-शिक्षण का मूल भी निहित है। गिजू भाई कहते हैं कि प्रकृति की शिक्षा धैर्य एवं विश्वास की पोषक होती है। प्रकृति ही मनुष्य की आत्मा एवं देह की प्रथम धाय है। अतः उसे चाहिए कि वह बाल्यावस्था से ही प्रकृति के अवदान से अपने प्राणों को भर ले, अपने आत्मिक विकास के तत्त्व उसे प्रकृति से ही ग्रहण कर लेने चाहिए।

9. तिवारी, सुधा (2009) ने “लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन” किया और यह पाया कि–


‘‘लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन’’

"A Comperative Study of Educational Contribution of Mahatma Gandhi and Pt. Deen Dayal Upadhayay in the Democratic Education of India"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के
‘शिक्षाशास्त्र में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की
उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

ESTD. AUGUST 26, 1975

निर्देशक
डा० जे०एल० वर्मा
बुन्देलखण्ड कॉलेज, झाँसी

शोधकर्त्री
सुधा तिवारी
(एम०ए०,एम० एड०)
अध्यापिका

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
2003–2004

चित्र 2.2.9 **शोध सुधा तिवारी के द्वारा**

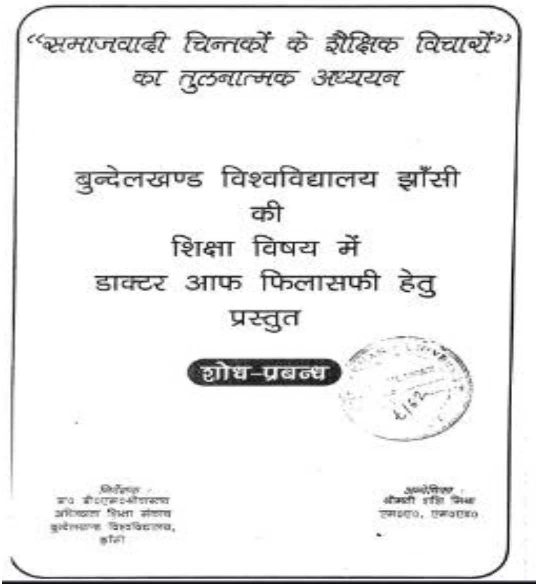
- सदियों से पराधीनता के कारण अपनी गरिमामयी संस्कृति से अनभिज्ञ भारतीय जनता को पुनः चेतन तथा सचेष्ट करने के लिए भारतीय विचारकों के विचारों को अपनी परिस्थिति के अनुसार कार्य करना पड़ा, न कि वे इसके स्थान पर पश्चिमी विचारकों से विचार सहमति या असहमति प्रगट करने का कार्य करते। अतः इतना कहना ही पर्याप्त है, कि अपने

क्षेत्र और अपने कार्य के अनुरूप उन्होंने शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया। भारतीय विचारकों में प्रतियोगिता की भावना नहीं थी, वरन् जीवन के सच्चे मूल्यों की खोज करना, जो कि काल के गर्त में समाधिस्थ कर दिए गए हैं, उनको पुनः जागृत कर स्मरण करना ही उनकी शिक्षा का लक्ष्य था।

- कुछ मानवों को ऐतिहासिक घटनाएँ बनाती है, जब कि कुछ लोग स्वयं इतिहास का निर्माण करते हैं। महात्मा गाँधी स्वयं ऐसे पुरुष थे, जिन्होंने अपने मस्तिष्क, मन व हृदय की विशेषताओं, गुणों तथा महान कार्यों से अपना स्वयं का मार्ग प्रशस्त कर स्वयं एक इतिहास का निर्माण किया था। उन्होंने एक राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रभावी व्यक्तित्व से नवीन भारत का निर्माण किया था और एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति के विचारक के रूप में संपूर्ण विश्व को प्रभावित किया था।
- महात्मा गाँधी के विचार परिवर्तित होने वाले वैज्ञानिक एवं औद्योगिक युग में पूर्ण संगति रखते हैं। यदि हम उनकी शिक्षाओं और दार्शनिक विचारों को अपनाने में समर्थ हो सकें, तो रामराज्य एवं नए स्वर्ण युग का निर्माण कर सकते हैं।

10. मिश्रा, शशि (2002) ने "समाजवादी चिंतकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन" किया और यह पाया कि–

- भारतीय दृष्टि में दर्शन और जीवन इतने संपृक्त रहे हैं कि इनमें अंतर नहीं देखा गया। प्राचीनकाल में संपूर्ण जीवन की व्याप्ति दर्शन का क्षेत्र थी। महर्षिगण तपस्या करके सत्य का दर्शन करते थे तथा जीवन में उतारते थे एवं अपने व्यवहारपरक अनुभव की शिक्षा दूसरों को प्रदान करते थे। भारतीय दार्शनिकों के सामने दुःखों के आत्यांतिक नाश तथा पूर्ण आनंद अथवा मोक्ष की प्राप्ति का लक्ष्य था। उन्होंने अपने-अपने दृष्टिकोण से उसकी प्राप्ति के मार्ग का शोधन किया था, अतः उनमें बीच की कुछ बातों में भिन्नता होने पर भी कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर साम्य


"समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों"
का तुलनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी
की
शिक्षा विषय में
डाक्टर आफ फिलासफी हेतु
प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

चित्र 2.2.10 **शोध शशि मिश्रा के द्वारा**

है। सर्वश्री सतीशचंद्र चट्टोपाध्याय एवं वीरेंद्रमोहन दत्त ने नैतिक व आध्यात्मिक बिंदुओं में समानता निरूपित की है।

- भारत के सभी दर्शनों का उद्देश्य पुरुषार्थ साधना रहा है।
- दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष से होती है, परंतु आध्यात्मिक मनोवृत्ति के कारण उसमें आशा का संचार होता रहता है।

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष

शोधकर्ता ने पाया कि पूर्ववर्ती शोधों में डॉ. जाकिर हुसेन एवं डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन, रवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का एक अध्ययन, मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवींद्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता, भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान, विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन, भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा : योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता, वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं. दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन, लोकतांत्रिक भारत की शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन तथा समाजवादी चिंतकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। ध्यातव्य है कि **"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान"** पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर लघुशोध कार्य करने का निश्चय किया गया है।

तृतीय-अध्याय

गुरूदेव रणछोड़ दास जी महाराज का जीवन परिचय

3.1 भूमिका

श्री रणछोड़दास जी महाराज एक महान मानवीय संत थे, जिनका नाम मुख्य रूप से उनके निकट शिष्यों और उन भाग्यशाली लोगों तक ही सीमित है जो उनके संपर्क में आए थे। तपस्या और सेवा उनके जीवन में पूर्ण सामंजस्य के साथ मौजूद थे। यह अत्यंत सरल और सर्व-प्रिय संत, जिनका शरीर पतला था लेकिन उनमें असीम प्रेम और ऊर्जा थी, ने लंबे समय तक हमारे देश के सबसे गरीब लोगों के लिए अनूठी सेवा की और उनके कष्टों को कम करने का प्रयास किया। उनके पूरी तरह निःस्वार्थ और आत्म-त्यागपूर्ण सेवा के तरीकों ने कई परोपकारी संस्थाओं - अस्पतालों, विद्यालयों, ग्रामीण विकास कार्यों आदि - की स्थापना को प्रेरित किया, जो देश के कई हिस्सों में संचालित हैं। ये संस्थाएँ सैकड़ों हजारों गरीब और सामाजिक-आर्थिक रूप से कमजोर लोगों की सेवा कर रही हैं और नेत्र-चिकित्सा, सीमांत किसानों के सशक्तिकरण, नर्सिंग और चिकित्सा शिक्षा, संस्कृत शिक्षा आदि जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय मानक स्थापित किए हैं।

विशेष बात यह है कि इन संस्थाओं ने मुख्य रूप से श्री रणछोड़दास जी महाराज के 1970 में देह त्यागने के बाद आकार लिया और फली-फूलीं। उनके संपर्क में आने वाले लोगों को जो प्रेरणात्मक शक्ति उन्होंने प्रदान की, वह आज भी परिणाम दे रही है और सेवा के कार्यों में लगे लोगों को आधी सदी से अधिक समय के बाद भी प्रेरित कर रही है।

3.2 प्रारंभिक जीवन

ऐसा माना जाता है कि महाराज का जीवन बहुत लंबा था, हालांकि उन्होंने स्वयं इस पर कभी विशेष ध्यान नहीं दिया। उनके बारे में शुरुआती जानकारी लगभग 1900 से मिलती है, जब तक भी, उन्होंने अपने तपस्वी जीवन का एक बड़ा हिस्सा बिताया था। उससे पहले की घटनाओं को उन्होंने कभी-कभी अपने शिष्यों को बताया।

श्री महाराज जी का जन्म महाराष्ट्र के अमरावती जिले के एक गाँव बायफल में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका नाम रामराव रखा गया। बचपन से ही उन्हें श्री रामचंद्र जी के प्रति गहन भक्ति थी और

उस उम्र में भी वे श्री राम के नाम का जप घंटों तक करते थे। उनके पिता स्थानीय पुलिस विभाग में काम करते थे।

भगवान-प्राप्ति की तीव्र इच्छा के कारण, रामराव ने 10 साल की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और अयोध्या की यात्रा की - जो श्री राम के संतों और भक्तों की एक लंबी और पवित्र परंपरा से गूंजता हुआ स्थान था। वहाँ उन्हें कुछ नागा साधुओं ने अपनी मंडली में शामिल कर लिया। ये साधु काफी आक्रामक स्वभाव के थे और छोटे बालक से अत्यधिक कार्य कराते थे, लेकिन उसे आध्यात्मिक जीवन में मार्गदर्शन करने में अधिक ध्यान नहीं देते थे, जिसके लिए वह घर से इतनी दूर आया था। फिर भी, बालक ने बिना शिकायत किए सारे काम किए, इसे अपने आत्म-अनुशासन की प्रक्रिया का हिस्सा मानकर सहन किया। सहनशीलता उनके जीवन का एक मुख्य गुण बन गया।

3.3 गुरु से भेंट

लेकिन रामराव की नियति कहीं और थी और उन्हें ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। जल्द ही रामानंद संप्रदाय के एक महान संत, श्री बालकृष्णदास जी, जिन्हें पयाहारी बाबा के नाम से जाना जाता था (क्योंकि वे केवल दूध का सेवन करते थे), आए और नागा साधुओं के बीच उस छोटे बालक को देखकर रामराव को अपने साथ आने का आदेश दिया। रामराव ने इस संत के साथ चलने का निर्णय लिया, जिससे नागा साधु स्तब्ध रह गए और उस महान संत को उस बालक को अपने साथ ले जाते देख आश्चर्यचकित हो गए।

रामानंद संप्रदाय की स्थापना स्वामी रामानंद ने चौदहवीं शताब्दी में की थी और इसकी परंपरा में श्री कबीरदास, गोस्वामी तुलसीदास, श्री रैदास (रविदास के नाम से भी जाने जाते हैं) जैसे महान संत शामिल थे। यह संप्रदाय उत्तरी और मध्य भारत में काफी फैला हुआ है और इसके साधु श्री रामचंद्र को अपना इष्ट मानते हैं। इनका धार्मिक पथ विशिष्टाद्वैत पर आधारित है, जिसे सबसे पहले श्री रामानुजाचार्य ने प्रतिपादित किया था। यह एक वैष्णव संप्रदाय है और रामानंदी साधुओं को वैरागी या विरक्त महात्मा कहा जाता है, जब वे अपने अंतिम त्याग संस्कार जिसे 'विरक्त-दीक्षा' कहते हैं, प्राप्त कर लेते हैं। यह दीक्षा कुछ हद तक 'विरजा होम' संस्कार के समान है, जिसके बाद व्यक्ति को संन्यास के जीवन के लिए दीक्षित किया जाता है, जैसा कि दशनामी परंपरा में श्री शंकराचार्य ने नौवीं शताब्दी में स्थापित किया था।

श्री पयाहारी बाबा ने तपस्या का बहुत लंबा जीवन बिताया था और लंबे समय तक उनका केंद्र जयपुर (तब इसे आमेर कहा जाता था) के निकट गालटा जी में था। उन्होंने युवा रामराव को कश्मीर ले गए,

जहाँ उनका केंद्र था, और उन्हें रामानंदी परंपरा में दीक्षित कर उनका नाम रणछोड़दास रखा। उनके मार्गदर्शन में रणछोड़दास जी ने शास्त्रों का अध्ययन किया और योग, जप और ध्यान का अभ्यास किया। जल्द ही रणछोड़दास जी ध्यान की मुद्रा में लंबे समय तक बैठने में सक्षम हो गए, बिना शरीर की कोई चेतना महसूस किए।

3.4 परिव्राजक

अपने युवा शिष्य को यह विश्वास हो जाने पर कि अब वह व्यापक दुनिया से अनुभव प्राप्त करने के लिए तैयार है, गुरुजी ने उन्हें तिब्बत जाने और उस क्षेत्र के लामाओं से शिक्षा लेने के लिए कहा। हालांकि, गुरुजी ने उन्हें 'सिद्धियों' (विशेष शक्तियों) की ओर आकर्षित होने से बचने की चेतावनी दी और उन्हें एक शुद्ध और भक्तिपूर्ण जीवन में दृढ़ता से स्थापित होने पर एकाग्रचित्त रहने का निर्देश दिया, जिसमें अहंकार और सांसारिक इच्छाओं का आखिरी अंश भी समाप्त हो जाए। तिब्बत से लौटने पर, गुरुजी ने शिष्य को पूरे भारतवर्ष की यात्रा करने और पवित्र तीर्थस्थलों का दौरा करने का निर्देश दिया, इस समय का उपयोग महान तपस्वियों और संतों से मिलने के लिए किया, जो देश के विभिन्न हिस्सों में रहते थे। यह वह समय था जब रेलवे नेटवर्क का विकास नहीं हुआ था, और इसलिए रणछोड़दासजी महाराज हर जगह पैदल यात्रा करते थे।

इस दौरान उन्होंने कई वर्षों तक बंगाल में भी निवास किया और उस समय पड़े अकालों में लोगों की सेवा की, जिनसे उस क्षेत्र के लोग अक्सर प्रभावित होते थे। अकाल के दौरान, एक अवसर पर, महाराज ने लड़कियों और युवतियों की खुलेआम बिक्री का विरोध किया। उन्हें निर्दयता से पीटा गया और वह बेहोश हो गए। कई अवसरों पर, महाराज ने लड़कियों की बिक्री को रोकने और उन्हें उनके परिवारों को वापस दिलाने के लिए धन एकत्र किया।

उस समय की एक दिलचस्प घटना है जो महाराज द्वारा व्यक्त किए गए दृढ़ त्याग को दर्शाती है। बंगाल के बर्धमान (जिसे बर्दवान भी कहा जाता है) के शाही परिवार को महाराज में गहरी रुचि थी और एक बार उन्होंने महाराज को अपने दरबार में आमंत्रित किया और उन्हें एक महंगे चांदी के सिंहासन पर बैठने के लिए कहा। महाराज ने अपने मेजबान की इच्छा का मान रखते हुए संकलित किया। जब वह विदा लेने लगे, तब राजा ने निर्णय किया कि वह चांदी का सिंहासन महाराज को उपहार स्वरूप देंगे और उसे ले जाने के लिए एक गाड़ी की व्यवस्था की। इस पर महाराज ने दृढ़ता से उपहार को अस्वीकार कर दिया,

क्योंकि यह उनके तपस्वी जीवन के अनुरूप नहीं था। राजा, जो इस तरह की प्रतिक्रिया की अपेक्षा नहीं कर रहे थे और थोड़ा अपमानित महसूस कर रहे थे, ने टिप्पणी की, "महाराज जी, आपको शायद ही कोई ऐसा मिलेगा जो इस तरह का उपहार देगा।" इस पर महाराज ने तुरंत उत्तर दिया, "आप सही हो सकते हैं, महाराजाधिराज। लेकिन आपको भी शायद ही कोई ऐसा मिलेगा जो इस उपहार को एक तुच्छ वस्तु के रूप में छोड़ देगा।"

3.5 चित्रकूट क्षेत्र में

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम भाग में किसी समय, हालांकि सही वर्ष के बारे में कोई निश्चितता नहीं है, महाराज चित्रकूट क्षेत्र में आ गए। यह क्षेत्र, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के एक-एक जिले में फैला हुआ है (प्रयागराज से लगभग 150 किमी पश्चिम में), श्री रामचंद्र जी के भक्तों के लिए बहुत विशेष है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि भगवान ने इस क्षेत्र में कई वर्षों - कुछ के अनुसार लगभग ग्यारह या बारह वर्षों - का समय बिताया। वह स्थान जहाँ श्री राम, देवी सीता और लक्ष्मण के साथ रहे थे, उसे कामदगिरि के नाम से जाना जाता है। यह स्थान 'राम-भरत मिलाप' का भी स्थल है। कामदगिरि की परिक्रमा हर दिन हजारों भक्त करते हैं। समय प्राचीनकाल से योगी और तपस्वी इस क्षेत्र को गहन आध्यात्मिक साधना का स्थान बना चुके हैं और हजारों साधु यहाँ लींन रहते हैं।

महाराज ने सबसे पहले देवांगना नामक स्थान के पास घने जंगल में निवास करना शुरू किया। बाद में वह अत्री-अनसूया नामक स्थान पर चले गए, जहाँ महान ऋषि अत्रि और उनकी आध्यात्मिक संगिनी अनसूया देवी का आश्रम था। महाराज ने कुछ समय तक जूरी नामक एक छोटी नदी के किनारे भी निवास किया। वहाँ उन्होंने रात-रात भर उस नदी के किनारे ध्यान में लीन होकर समय बिताया। यह स्थान इतना आंतरिक था कि मानव बस्तियों से दूर था, और महाराज मुख्यतः वहाँ उगने वाले फलों और जड़ों का सेवन करते थे। महाराज ने अत्यधिक तपस्वी जीवन जिया और एक मोटे जूट जैसे कपड़े का उपयोग किया, इसलिए उन्हें 'तातांबरी बाबा' (जो 'तात' (जूट) पहनते हैं) भी कहा जाता था। अपने जीवन के अंतिम कुछ दशकों में ही उन्होंने घुटने तक की धोती और उत्तरीय पहनना शुरू किया।

जूरी के किनारे लंबे समय तक रहने के बाद, महाराज जनकिकुंड चले गए, जहाँ एक वृद्ध सम्मानित साधु, जो आने वाले साधुओं की सेवा के लिए अन्नक्षेत्र का संचालन करते थे, ने महाराज से मदद की अपील की। इस साधु, श्री बोधरामदास जी ने लंबे समय तक यह सेवा की थी और उनके जीवन का अंतिम

समय निकट आ रहा था। वे इस बात को लेकर चिंतित थे कि अन्नक्षेत्र के बंद हो जाने से आने वाले साधुओं को असुविधा होगी।

महाराज, जो अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति से आश्रम के प्रबंधन के नियमित काम में नहीं फंसना चाहते थे, ने तब मदद करने के लिए सहमति दी जब एक युवा साधु ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह दिन-प्रतिदिन के प्रबंधन का ध्यान रखेगा और महाराज केवल मार्गदर्शन देंगे। कुछ ही दिनों में श्री बोधरामदास जी ने जिम्मेदारी महाराज को सौंप दी और उनका निधन हो गया। महाराज ने सुनिश्चित किया कि अन्नक्षेत्र की सेवाएं बंद न हों।

इस प्रकार उनके जीवन में चित्रकूट क्षेत्र में कठोर साधु-सेवा का एक नया चरण शुरू हुआ। इसके लिए महाराज को उस क्षेत्र के कई गाँवों में यात्रा करनी पड़ी और भक्ति-भाव से समर्पित ग्रामीणों द्वारा दिए गए अनाज की बोरियाँ बैलगाड़ी में लानी पड़ीं, कभी-कभी वह खुद ही अनाज ढोते थे। उनकी कठोर तपस्या और निःस्वार्थ सेवा ने जल्द ही उन्हें उस क्षेत्र के साधुओं के बीच एक उच्च स्थान पर पहुंचा दिया। महाराज को महान योगिक शक्तियाँ भी प्राप्त थीं, जिन्हें वह बहुत कम ही इस्तेमाल करते थे, केवल तब जब किसी की तीव्र पीड़ा देखकर उनका करुणामय हृदय गहराई से आंदोलित हो जाता था। क्षेत्र के साधु और तपस्वी उन्हें जनकिकुंड के परमहंस के रूप में पुकारने लगे।

3.6 गुजरात की यात्राएँ

लगभग 1920 में महाराज ने फिर से देश के दूर-दराज़ हिस्सों की यात्रा शुरू की। इस बार वे पश्चिम की ओर पैदल चले और गुजरात पहुँचे। उन्होंने सबसे पहले कच्छ क्षेत्र का दौरा किया और अंजार में ठहरे तथा कच्छ के रण से होकर गुज़रे। बाद में उन्होंने सौराष्ट्र क्षेत्र का दौरा किया, जहाँ वे राजकोट शहर के बाहर अजी नदी के किनारे रहे। शीघ्र ही स्थानीय लोग बड़ी संख्या में उनके प्रति आकर्षित होने लगे, और महाराज ने उन्हें उनके आध्यात्मिक जीवन में मार्गदर्शन देना शुरू किया। उन्होंने अक्सर अपने प्रिय ग्रंथों जैसे रामचरितमानस और भगवद गीता के विषयों पर प्रवचन दिए। उन्होंने चरित्र निर्माण और दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इन भक्तों के प्रेम और आग्रहपूर्ण विनती पर, महाराज ने इस क्षेत्र का अधिक बार दौरा करना शुरू किया। सौराष्ट्र क्षेत्र के गोंडल और जूनागढ़ जैसे शहरों में भक्तों और शिष्यों के समूह बने, जो महाराज के मार्गदर्शन में अपने आंतरिक जीवन को पोषण देने की तलाश करते थे। वर्षों के दौरान, राजकोट और पास

के गोंडल शहर में स्थायी आश्रम बने, जहाँ भक्त नियमित रूप से मिलते और सत्संग में भाग लेते थे। गोंडल में, महाराज ने चित्रकूट के एक युवा साधु श्री हरिचरनदासजी को प्रभारी बनाया, और तब से वह आश्रम समृद्ध हुआ और निरंतर विकसित होता गया। श्री हरिचरनदासजी, जिनका कुछ साल पहले निधन हुआ, ने बाद में कम से कम चार और संस्थाएँ स्थापित कीं, जिनमें गोंडल में एक सुपर-स्पेशियलिटी अस्पताल, और बद्रीनाथ जैसे स्थानों में अन्नक्षेत्र और धर्मशालाएँ शामिल हैं।

1940 के दशक के मध्य में, महाराज की प्रेरणा से राजकोट में श्री राम महायज्ञ का एक भव्य आयोजन हुआ, जिसमें सैकड़ों स्वयंसेवकों का एकत्रीकरण हुआ। इस आयोजन से न केवल क्षेत्र में एक विशाल आध्यात्मिक लहर उठी बल्कि हजारों गरीब लोगों की भी सेवा की गई। इस आयोजन के दौरान समर्पित स्वयंसेवकों के बीच एक निकट और स्थायी संबंध भी विकसित हुआ, जो महाराज द्वारा अपने महान जीवन के अंतिम चरण में किए गए मानवीय सेवा परियोजनाओं की एक विशाल श्रृंखला के लिए अत्यंत उपयोगी साबित हुआ।

3.7 महान मानवीय सेवा का चरण (1950 से 1970)

शायद महाराज के सार्वजनिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय उनके जीवन के अंतिम दो दशकों का था। इस दौरान, महाराज द्वारा प्रेरित मानवीय सेवा की एक शक्तिशाली लहर देश के कई हिस्सों में फैली, जिसमें अनगिनत समर्पित स्वयंसेवक शामिल थे। इस अवधि में सैकड़ों हजारों लोगों की सेवा की गई, विशेष रूप से सबसे गरीब क्षेत्रों में, जैसे कि अंधापन उन्मूलन शिविर, सूखा, अकाल, बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत और पुनर्वास कार्य। अंततः इन सेवाओं ने भविष्य के लिए कई सेवा संस्थानों की नींव रखी।

महाराज वृद्ध लोगों की दृष्टि संबंधित समस्याओं से बहुत व्यथित थे, विशेष रूप से गरीब ग्रामीण समुदायों से, जिन्हें अक्सर यह समस्या पूरी तरह से अक्षम बना देती थी और उन्हें अपनी सबसे बुनियादी ज़रूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। जब महाराज ने जाना कि यह दृष्टि संबंधित समस्या चिकित्सा द्वारा ठीक की जा सकती है, तो उन्होंने इस समस्या को सुलझाने के लिए एक सतत अभियान शुरू करने का निर्णय लिया।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, महाराज ने 1950 में चित्रकूट में पहला नेत्र शिविर 'तारा नेत्र यज्ञ' आयोजित किया। डॉक्टरों और स्वयंसेवकों की एक बड़ी टीम उत्साह के साथ चित्रकूट गई, लेकिन उन्हें

यह नहीं पता था कि उनके सामने क्या चुनौतियाँ आएंगी। डॉक्टर जो पहले केवल मुंबई और राजकोट जैसे शहरों के अस्पतालों में सेवा देते थे, उन्हें वहां ग्रामीण क्षेत्रों की परिस्थितियों में काम करना पड़ा, जहाँ एक साधारण खाट ऑपरेशन बेड बन गई थी, एक तंबू ऑपरेशन थिएटर के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था, और अचिकित्सीय प्रशिक्षित स्वयंसेवक उनके सहायक थे। कुल मिलाकर, उन्हें उपलब्ध संसाधनों के साथ सर्वश्रेष्ठ काम करना पड़ा। खुले मैदान शिविर का स्थान बने। स्वयंसेवकों को शौचालयों की सफाई से लेकर भोजन पकाने, परोसने और रोगियों की देखभाल तक हर काम करने के लिए तैयार किया गया था। शिविर में बड़ी संख्या में महिला रोगियों की अपेक्षा थी, इसलिए महिला स्वयंसेवकों की सेवाएं भी ली गईं।

उन दिनों मोतियाबिंद जैसी एक साधारण सर्जरी को शिविर की स्थिति में लगभग आठ दिनों की आवश्यकता होती थी - रोगियों की प्रारंभिक जांच, सर्जरी और पुनर्वास अवधि तक। मरीजों के साथ आए परिवारों ने पूरी तरह से मरीजों की देखभाल स्वयंसेवकों पर छोड़ दी थी और उस दौरान पूरी तरह से निश्चिंत हो गए थे। 'तारा नेत्र यज्ञ' लगभग एक महीने तक चला। कुल मिलाकर इस शिविर में हजारों रोगियों की सेवा की गई।

पहले शिविर की सफलता और जीवन-परिवर्तनकारी परिणामों से प्रेरित होकर, डॉक्टरों, स्वयंसेवकों और दानदाताओं ने आने वाले वर्षों में इसी प्रकार के शिविरों के लिए गति बनाए रखी। पहले शिविर के बाद, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के आंतरिक क्षेत्रों में 17 और बड़े शिविर आयोजित किए गए - जैसे कि बस्तर क्षेत्र के जगदलपुर, धार, सिवनी और इसी तरह के अन्य स्थान, जहाँ आदिवासी और अन्य अत्यंत गरीब ग्रामीण समुदाय बड़ी संख्या में रहते थे, जिन्हें आधुनिक अस्पतालों और चिकित्सा देखभाल की पहुंच बहुत कम थी।

मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री, श्री कैलाशनाथ काटजू, जो एक प्रसिद्ध विधिवेत्ता थे और केंद्र सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर रहे थे, ने अपने कार्यकाल के दौरान इन शिविरों में से दो का दौरा किया और सेवा की दक्षता और पैमाने को देखकर चकित रह गए। उन्होंने इन शिविरों की तुलना सरकारी कार्यक्रमों की कम दक्षता से की और महाराज से इसके संभावित कारणों के बारे में पूछा। महाराज ने उत्तर दिया कि अंतर पूरी तरह से सरकारी तंत्र में समर्पण के निम्न स्तर के कारण है, क्योंकि अधिकांश सरकारी कर्मचारी अपने आप को केवल एक नौकरी के रूप में देख रहे थे, जिसे वे निभा रहे थे, भले ही यह गरीब लोगों की स्थितियों को सुधारने से संबंधित कार्य हो, जबकि इन स्वयंसेवी-प्रेरित शिविरों जैसे प्रयासों में, प्रेरणा एक

प्रेमपूर्ण हृदय से उत्पन्न होती थी, जो सहानुभूति और सेवा की भावना से भरा हुआ था, और उनके भाइयों और बहनों की पीड़ा को दूर करने के लिए निर्देशित था।

इन शिविरों में महाराज कई स्वयंसेवकों के संपर्क में आए, जो बाद में कई महान सेवा प्रयासों और संस्थानों के स्तंभ बने।

महाराज का दूसरा निरंतर ध्यान केंद्रित क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सेवा करना था। 1966 और 1967 के वर्षों में, महाराज और उनकी स्वयंसेवक टीम ने ओडिशा के सुंदरगढ़ और वर्तमान झारखंड के पलामू जिले में स्थित रंका क्षेत्र के आदिवासी क्षेत्रों में 15 हजार भूखे लोगों की समर्पित सेवा की और उन्हें भोजन कराया। महीनों तक ऐसी ही सेवाएँ राजस्थान के भरतपुर में बाढ़ के दौरान, महाराष्ट्र के कोयना में भूकंप, राजस्थान के बाड़मेर और जैसलमेर, गुजरात के कच्छ और बनासकांठा और अन्य कई स्थानों पर दी गईं।

3.8 अंतर्मुख यात्राएँ

यहां तक कि अपने सार्वजनिक कार्यकाल के दौरान, महाराज ने अपनी दिनचर्या में सुबह और शाम को तीन-तीन घंटे साधना का पालन किया। उन्होंने अपने कई निकट शिष्यों को भी इस अनुशासन में प्रशिक्षित किया। इनमें से कई महिलाएं थीं – जैसे दमयंती जी, कुमुदिनी जी और पार्वती जी, जिन्होंने कठोर आध्यात्मिक साधनाएं अपनाईं और पारंपरिक पारिवारिक जीवन में उलझे बिना अपना जीवन व्यतीत किया। उन्होंने महाराज के शब्दों को दर्ज कर और अपनी स्मृतियों को संकलित कर महान सेवा की है। ये लेखन, मुख्यतः गुजराती में, महाराज पर हिंदी में अन्य लेखों के लिए स्रोत-पुस्तकों के रूप में काम करते हैं।

महाराज हमेशा मध्य भारत के पहाड़ों और जंगलों से बहुत लगाव रखते थे। यहां तक कि जब उनका सार्वजनिक कार्य बढ़ गया, तब भी वे अक्सर इस क्षेत्र के आंतरिक हिस्सों में लंबे समय तक एकांतवास में चले जाते थे। ये अवधि कई महीनों तक चल सकती थी, जिसके दौरान महाराज अपने भक्तों के किसी भी समूह के संपर्क में नहीं रहते थे। वे या तो किसी जंगल क्षेत्र में जाते या किसी गांव में जहां उन्हें कोई नहीं जानता था, और वहां झोपड़ी बनाकर या किसी मंदिर परिसर में रहते थे।

1954 से 1956 के बीच महाराज ने गुजरात के जामनगर में 'काष्ठ-मौन' की कठोर तपस्या की, जिसके दौरान उन्होंने दो साल तक एक छोटे से कमरे में पूर्ण एकांतवास किया। इससे न केवल उन्होंने खुद

को फिर से जीवंत किया, बल्कि अधिक ऊर्जा के साथ सेवा के कार्यों को करने के लिए खुद को तैयार किया। उन्होंने कुछ चुने हुए शिष्यों को कठोर आध्यात्मिक प्रशिक्षण दिया। उन्होंने भक्तों और स्वयंसेवकों के समूहों को बद्रीनाथ और केदारनाथ (उत्तराखंड), पशुपतिनाथ (काठमांडू), जगन्नाथ पुरी, रामेश्वरम और अन्य तीर्थ स्थलों की यात्राओं पर भी लिया, जहां उनके साथ रहने वाले लोगों को उनके निकट होने और उनके बहुमूल्य आध्यात्मिक ज्ञान और सलाह सुनने का अनमोल अवसर मिला। वे हमेशा इस बात पर जोर देते थे कि तीर्थ यात्रा के दौरान व्यक्ति को शुद्धता और भक्ति का भाव बनाए रखना चाहिए, सांसारिक आकर्षणों को पीछे छोड़ देना चाहिए, और तीर्थ स्थलों पर साधुओं और गरीबों को श्रद्धापूर्वक दान करने पर जोर देते थे। वे हमेशा तीर्थ स्थानों पर भंडारे का आयोजन करते थे और साधुओं और गरीबों को धोती, कंबल और अन्य आवश्यक वस्तुएं वितरित करते थे।

3.9 प्रेम से बंधे – आनंदपुर गाँव के साथ

महाराज का मध्य प्रदेश के विदिशा जिले के एक छोटे से गाँव आनंदपुर से बहुत ही विशेष संबंध था। एक बार जब वे विदिशा जिले की वर्तमान लटेरी तहसील में बुढाखेड़ा नामक एक वन क्षेत्र में अकेले शिविर लगा रहे थे, तो आनंदपुर गाँव के कुछ ग्रामीणों ने उनके वहां होने की सूचना पाई, और यह खबर फैल गई कि एक योगी उनके गाँव के पास जंगल में तपस्या में लीन है। गाँव की एक महिला, श्रीमती उपाध्याय, जिनके भाई कुछ साल पहले साधु बनने के लिए घर छोड़ गए थे, ने सोचा कि शायद उनके भाई वापस आ गए होंगे। अत्यधिक उत्साह के साथ वह साधु से मिलने गईं। उन्हें देखकर महाराज ने कहा कि उन्हें अपने भाई को उनमें देखना चाहिए। जल्द ही उस महिला की वृद्ध माता, जो पास के सिरोंज शहर में रहती थीं, उनसे मिलने आईं और महाराज ने उन्हें बताया कि वे वास्तव में उनके पुत्र हैं और एक पुत्र के रूप में उनके प्रति अपने कर्तव्यों का भी पालन करेंगे।

यह घटना शायद 1930 के दशक या 1940 के दशक की शुरुआत की होगी। अपना वादा निभाते हुए, 1950 के दशक के मध्य में उस वृद्ध महिला की मृत्यु से कुछ दिन पहले, जब वह अच्छी सेहत में थीं, महाराज अचानक आनंदपुर आ गए। उन्होंने परिवार के सदस्यों से कहा कि माता जी की सेवा करें क्योंकि वह उनके बीच अधिक समय तक नहीं रहेंगी। कुछ दिनों बाद माता जी का निधन हो गया और महाराज ने अपना वादा निभाया और उनके अंतिम संस्कार में भाग लिया।

जब भी महाराज आनंदपुर आते, वे अपने साथ आम जैसे उपहार लाते, और पूरा गाँव उन्हें मामा जी कहकर पुकारता। महान योगी ने अपनी इच्छा से इस प्रेम बंधन को स्वीकार किया और सरल प्रेम और आनंद को प्राप्त किया और प्रदान किया।

3.10 भविष्य के कार्यों की नींव

महाराज जी यह चाहते थे कि समय के साथ सुदूर क्षेत्रों में उपयुक्त रूप से सुसज्जित अस्पताल स्थापित हों, जिनमें सेवा के आदर्श से प्रेरित समर्पित डॉक्टर और कर्मचारी काम करें, जो उन क्षेत्रों की स्थानीय आबादी को सेवा प्रदान कर सकें। वे उस समय भी देख सकते थे कि उन्नत चिकित्सा सुविधाएं केवल बड़े शहरी केंद्रों में उपलब्ध थीं और अक्सर गरीब बीमार लोगों के लिए ऐसे केंद्रों तक पहुंचना संभव नहीं होता था। 1968 में, जब धार में 'नेत्र यज्ञ' चल रहा था, उन्होंने अपने मुख्य समूह के परोपकारी, डॉक्टरों और समर्पित स्वयंसेवकों को एक चैरिटेबल ट्रस्ट की औपचारिक स्थापना के लिए निर्देशित किया। यह श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट की शुरुआत थी। महाराज जी ने श्री अरविंद मफतलाल को, जिन्होंने अपना समय और संसाधन उदारतापूर्वक दिया, ट्रस्ट का अध्यक्ष चुना और कई समर्पित स्वयंसेवकों को ट्रस्टियों के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने चाहा कि ट्रस्ट चित्रकूट और आनंदपुर में अस्पताल स्थापित करे, जो सबसे गरीबों की सेवा करें, और साथ ही स्कूल और पारंपरिक संस्कृत और वैदिक शिक्षा के केंद्र भी स्थापित करें।

अपने जीवन के अंतिम दो-तीन वर्षों में, महाराज जी का स्वास्थ्य बहुत कमजोर हो गया था। उनका वजन 30 किलो से भी कम हो गया था। शिष्यों की विनती और आग्रह के आगे झुकते हुए उन्होंने अस्पतालों में इलाज कराना स्वीकार किया। इन समयों के दौरान, उन्हें विभिन्न समयों में मुंबई, पुणे और बेंगलुरु के अस्पतालों में भर्ती कराया गया था। इन अवसरों पर अस्पताल के ये कमरे भी सत्संग के स्थान बन जाते थे। कभी-कभी, स्वयं एक मरीज होते हुए भी, महाराज अस्पताल वार्डों में जाते, अन्य मरीजों से मिलते और उन्हें आशीर्वाद देते थे। जब वे स्वयं अत्यधिक शारीरिक पीड़ा में होते थे, तो भी अजनबियों के प्रति उनका शुद्ध और सरल प्रेम और जो चिंता वे दिखाते थे, वह सभी के हृदयों को गहराई से स्पर्श करती थी।

महाराज ने अप्रैल 1970 में मुंबई में अपने शिष्य रामभाई गोकानी के अपार्टमेंट में अंतिम सांस ली। महाराज ने सुझाव दिया था कि उनके पार्थिव अवशेषों का दाह संस्कार राजस्थान के पुष्कर में 'तीर्थराज' में किया जाए, एक ऐसा स्थान जिसे वे बहुत प्रिय मानते थे और जहां उन्होंने कठोर तपस्या के दिनों में उच्चतम स्थिति प्राप्त की थी। यह स्थान अब 'श्री राम धाम' कहलाता है, जहां साधक (आध्यात्मिक अभ्यास करने

वाले) जा सकते हैं, रह सकते हैं और इस स्थान और पुष्कर के इस महान तीर्थ की आध्यात्मिक आभा में लीन हो सकते हैं।

3.11 उनकी विरासत

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट अब चित्रकूट और आनंदपुर में दो अस्पताल चलाता है। चित्रकूट का अस्पताल हर साल लगभग 1.5 लाख सर्जरी करता है, जो भारत के किसी भी एकल अस्पताल में सबसे अधिक है। इसे एक युवा डॉक्टर, विष्णु जोबनपुत्र के प्रयासों से शुरू किया गया था, जिन्होंने अपना घर और सुरक्षित करियर छोड़ दिया और अपनी पत्नी भारती के साथ चित्रकूट चले गए, जहां उस समय लगभग कोई सुविधा नहीं थी। समय के साथ और समर्पित डॉक्टर उनके साथ जुड़े और अब अस्पताल ने नेत्र देखभाल में एक अत्याधुनिक केंद्र के रूप में स्थान बना लिया है, जिसका ध्यान हमेशा अत्यंत गरीब मरीजों पर रहता है।

आनंदपुर का अस्पताल, जो बाद में शुरू हुआ, अब हर साल 50 हजार से अधिक सर्जरी करता है। इनमें से अधिकांश सर्जरी मुफ्त होती हैं और अत्यंत गरीब और कमजोर वृद्ध आबादी के लिए होती हैं। नेत्र देखभाल में विशेषज्ञता के अलावा, यह ट्रस्ट सामान्य अस्पताल, स्कूल और संस्कृत विद्यालय भी चलाता है, और यह संस्कृत कॉलेज स्नातकोत्तर डिग्री तक के पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

एक अन्य ट्रस्ट, जो अन्य भक्तों और शिष्यों द्वारा प्रबंधित है, राजकोट में एक बड़ा अस्पताल चलाता है, जो हर साल लगभग एक लाख मुफ्त सर्जरी करता है। तीसरा ट्रस्ट दक्षिणी गुजरात के नवसारी जिले में आदिवासी समुदायों के लिए एक अस्पताल चलाता है। एक अन्य संगठन, जो आजीविका के क्षेत्र में काम कर रहा है, ने मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान के आदिवासी बहुल जिलों में किसानों की आय को काफी हद तक बढ़ाने में मदद की है।

इन सभी संगठनों की स्थापना उन लोगों ने की थी जिन्हें श्री महाराज जी के संपर्क में आने का सौभाग्य मिला था या जिन्होंने महाराज और उनके सहयोगियों द्वारा किए गए।

चतुर्थ-अध्याय

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का परिचयात्मक विवरण

4.1 शुभारंभ

इस उत्कृष्ट दृष्टि और आत्म-समर्पण के साथ, श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट (एसएसएसएसटी) की नींव 1950 के दशक के प्रारंभ में रखी गई और 1968 में पूज्य संत परम पूज्य श्री रणछोड़दासजी महाराज (जिन्हें उनके शिष्य सम्मानपूर्वक "गुरुदेव" के रूप में संबोधित करते हैं) द्वारा औपचारिक रूप दिया गया।

एक बार चित्रकूट में साधु सेवा करते समय गुरुदेव को एक बुजुर्ग अंधे व्यक्ति का सामना करना पड़ा, जो बिजली के खंभे से टकराए पत्थर से लड़खड़ा गया था। गुरुदेव ने उसके माथे से खून बहता देखा और जब उन्हें एहसास हुआ कि वह व्यक्ति मोतियाबिंद से पीड़ित है, तो वे उसकी मदद के लिए दौड़े। ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में से एक होने के कारण, उसे अंधेपन के साथ जीना पड़ा, जिसका इलाज संभव था। गुरुदेव इस घटना से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें निराशा के जीवन से उबारने की कसम खाई।

अपने आध्यात्मिक विश्वास को आगे बढ़ाने के लिए, गुरुदेव ने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर 1950 के दशक की शुरुआत में स्वैच्छिक सेवा के आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसमें मध्य भारत में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान शोकग्रस्त परिवारों के लिए निःशुल्क नेत्र शिविर और बड़े पैमाने पर राहत कार्य आयोजित किए गए। ये प्रयास धीरे-धीरे 1968 में चित्रकूट, मध्य प्रदेश में एक औपचारिक संस्था "श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट" (एसएसएसएसटी) की स्थापना में परिवर्तित हो गए।

गुरुदेव के अनन्य भक्त होने के कारण, SSSST की बागडोर भारत के एक प्रमुख उद्योगपति और जाने-माने परोपकारी व्यक्ति श्री अरविंदभाई एन. मफतलाल को सौंपी गई और गुरुदेव ने उन्हें ट्रस्ट का अध्यक्ष मनोनीत किया, जिसका उद्देश्य 'भूखों को भोजन', 'निराश्रितों को वस्त्र' और 'अंधों को दृष्टि' प्रदान करना था। तब से श्री अरविंदभाई एन. मफतलाल SSSST के दूरदर्शी बने रहे और ट्रस्ट द्वारा अब तक हासिल की गई निरंतर और विविध वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पिछले कुछ वर्षों में, संगठन ने और अधिक ताकत हासिल की है और वर्तमान में यह सबसे बड़े ग्रामीण नेत्र देखभाल संस्थानों में से एक है, जिसे इस क्षेत्र में 'सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण नेत्र देखभाल मॉडल' के रूप में दुनिया भर में मान्यता मिली है। सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय और एक अन्य व्यापक सामान्य अस्पताल,

जानकीकुंड चिकित्सालय, दोनों अस्पताल चित्रकूट में स्थित हैं। ट्रस्ट के अन्य संस्थान भी आनंदपुर (जिला विदिशा, मध्य प्रदेश) के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और ग्रामीण विकास गतिविधियों के लिए समर्पित रूप से काम कर रहे हैं, जहाँ दो अस्पताल इकाइयाँ, श्री सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय और श्री सद्गुरु मातृत्व सदन को श्री सद्गुरु संकल्प चिकित्सालय के मौजूदा सामान्य अस्पताल में जोड़ा गया है।

चाहे वह स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, खेती, ऊर्जा संरक्षण, डेयरी विकास और पशु देखभाल या ग्रामीण युवाओं को रोजगार हो, ट्रस्ट ने समाज के समग्र विकास में योगदान दिया है।



4.2 विजन और मिशन

Vision	Mission
Service of huminity	Food for the hungry, clothes for the destitute and sight for the blind'
मानवता की सेवा	भूखों को भोजन, बेसहारा को वस्त्र और अंधे को दृष्टि

4.3 गुणवत्ता नीति

• श्री सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय का दर्शन है - सेवा प्रदान करने में उत्कृष्टता।

• गुरुदेव परम पूज्य श्री रणछोड़ दास जी महाराज द्वारा निर्धारित मानवतावादी दर्शन के अनुरूप उच्च गुणवत्ता और सस्ती सेवाएं प्रदान करना अर्थात " मानवता की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है "।

• प्रतिबद्ध पेशेवर टीम के माध्यम से रोगियों को मानवीय सिद्धांतों पर आधारित, करुणा के साथ विशेषज्ञ नेत्र चिकित्सा देखभाल प्रदान करना।

• राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानकों के अनुरूप गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली का उपयोग करना।

4.4 उद्देश्य

- मध्य भारत में अंधत्व की परिहार्य दर को कम करना।
- मध्य भारत के ग्रामीण भाग में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाना।
- समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान देने के उद्देश्य से राष्ट्र की संस्कृति और गरिमा को बनाए रखने के लिए जाति, पंथ, धर्म के बावजूद 'सभी को शिक्षा' प्रदान करना।
- ग्रामीण युवा समुदाय को रोजगार प्रदान करके आसपास के क्षेत्र में समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को मजबूत करना।
- अशिक्षित महिलाओं को आय का स्रोत प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाना।
- हर वर्ष पेड़ लगाकर हरा-भरा वातावरण बनाना।
- मवेशियों को भुखमरी से बचाने के लिए उन्हें निःशुल्क देखभाल सेवाएं प्रदान करना।
- सूखा, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत शिविर आयोजित करना।
- अनुमोदित राष्ट्रीय मानकों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान करना, बढ़ावा देना और बनाए रखना।
- मानवीय स्पर्श के साथ गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करके निरंतर रोगी संतुष्टि सुनिश्चित करना, जो त्वरित और आसानी से उपलब्ध हों कर्मचारियों की संतुष्टि और प्रेरणा सुनिश्चित करना।
- निरंतर सीखने और प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से ज्ञान और कौशल में निरंतर वृद्धि की सुविधा प्रदान करना।
- जनशक्ति और बुनियादी ढांचे सहित संसाधनों के इष्टतम और प्रभावी उपयोग को प्रोत्साहित करना।

- प्रत्येक वर्ष 10% की वृद्धि दर के साथ अस्तपताल कार्यकर्ताओं की निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करना।

4.5 ट्रस्टी

- **श्री विशाद पी. मफतलाल**

श्री विशद पी. मफतलाल 1 नवंबर, 2011 से श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट (एसएसएसएसटी) के अध्यक्ष हैं, जिन्हें स्वर्गीय श्री अरविंद एन. मफतलाल के निधन के बाद मनोनीत किया गया था। वे एक उद्योगपति हैं, जिन्हें कपड़ा और रासायनिक उद्योग के क्षेत्र में दो दशकों से अधिक का समृद्ध अनुभव है। वे नवीन फ्लोरीन इंटरनेशनल लिमिटेड के अध्यक्ष हैं, जो रासायनिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी है। वे भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (IIIT-लखनऊ) के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स (BoG) के अध्यक्ष हैं।

श्रीमती रूपल विशद मफतलाल श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट की ट्रस्टी हैं। वे पद्मनाभ मफतलाल ग्रुप (पीएमजी) की प्रवर्तकों में से एक हैं, जो स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, खेल कार्यक्रमों और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्रों में सहायता करने वाले कई परोपकारी संगठनों और गैर सरकारी संगठनों से जुड़ी हैं।

- **डॉ. विष्णु एस. जोबनपुत्र**

डॉ. जोबनपुत्र श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, आनंदपुर के निदेशक हैं। वे परम पूज्य गुरुदेव के शुरुआती सहयोगियों में से एक थे, जो 1972 में औपचारिक रूप से इसमें शामिल हुए थे। गुरुदेव के मार्गदर्शन में, वे नेत्र रोग विशेषज्ञ और स्त्री रोग विशेषज्ञ दोनों हैं - एक दुर्लभ संयोजन। उन्हें चित्रकूट और आनंदपुर दोनों जगहों पर शुरुआती दौर से ही प्रबंधन और सेवा का व्यापक अनुभव है, जब उस समय कोई बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। स्थापना के वर्षों के दौरान, उन्होंने ट्रस्ट के पहले सामान्य अस्पताल और नेत्र अस्पताल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनका लक्ष्य समग्र सामान्य स्वास्थ्य सेवा और हृदय स्वास्थ्य सेवा की बेहतरी है।

- **डॉ. बुधेन्द्र के. जैन**

डॉ. बीके जैन श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, चित्रकूट के निदेशक हैं। वे 1974 में ट्रस्ट में शामिल हुए और गुरुदेव के विजन को जीवित रखते हुए ट्रस्ट के वर्तमान ढांचे के वास्तुकार हैं। डॉ. जैन नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार जीते हैं। उन्होंने शोध के क्षेत्र में कई प्रस्तुतियाँ और शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं। वे मध्य भारत में सामुदायिक आउटरीच नेत्र शिविर, दृष्टि केंद्र और

परिचालन अनुसंधान शुरू करने के अग्रणी हैं। उनका विजन सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय को नेत्र देखभाल प्रदाताओं के वैश्विक मानचित्र पर लाना है।

- **श्री नंदा बल्लभ लोहानी**

श्री लोहानी एक सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी हैं और 1985 से ट्रस्ट से जुड़े हुए हैं। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के सचिव के रूप में कार्य करते समय, उन्होंने चित्रकूट का दौरा किया और ट्रस्ट द्वारा की जा रही मानवीय सेवाओं से बहुत प्रभावित हुए। इसके बाद, उन्होंने गुरुदेव के सपने - "मानवता की सेवा" के लिए खुद को ट्रस्ट के साथ समर्पित कर दिया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा उन्हें सौंपे गए शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में ट्रस्ट के काम पर सेवा धर्म प्रणेता नामक एक जीवनी लिखी है। वे सलाहकार स्तर पर अन्य धर्मार्थ और सरकारी निकायों से भी जुड़े हुए हैं।

- **श्री एमबी रघुनाथ**

श्री एमबी रघुनाथ श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं। वे मफतलाल इंडस्ट्रीज लिमिटेड के अध्यक्ष-बिक्री एवं विपणन हैं तथा 1 अगस्त 1994 से मफतलाल इंडस्ट्रीज लिमिटेड से जुड़े हुए हैं।

- **डॉ. इलेश जैन**

डॉ. इलेश जैन को 23 मार्च, 2018 से श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का ट्रस्टी नियुक्त किया गया है। वे MBBS, DNB (नेत्र रोग) हैं, जिन्हें वैश्विक मानकों पर समुदाय को नेत्र देखभाल सेवाएँ प्रदान करने और नेत्र रोग में शोध कार्य का अनुभव है। वे 2007 से ट्रस्ट से जुड़े हुए हैं और वर्तमान में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट, चित्रकूट में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं।

- **श्री मनोज पंड्या**

मनोज पंड्या श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं, जो एक परोपकारी संगठन है जिसकी गतिविधियाँ कई मानवीय क्षेत्रों में फैली हुई हैं। वह पद्मनाभ मफतलाल समूह के व्यापारिक घराने के साथ भी काम कर रहे हैं। पेशे से, मनोज पंड्या एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, जिन्हें वित्त, लेखा, कॉर्पोरेट पुनर्गठन और कराधान के क्षेत्रों में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है।

4.6 प्रेरणा / नेतृत्व

स्वर्गीय श्री अरविंदभाई मफतलाल (27 अक्टूबर, 1923 – 30 अक्टूबर, 2011)

एक परोपकारी व्यक्ति थे और परम पूज्य गुरुदेव श्री रणछोड़दासजी महाराज के अनन्य भक्त थे। गुरुदेव ने श्री अरविंदभाई में सच्चे दिल से एक सामाजिक कार्यकर्ता (सेवक) देखा और 1968 में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का गठन किया, जिसमें उन्हें अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया। दृष्टि संबंधी गतिविधियों में उनके अग्रणी प्रयासों के लिए उन्हें 1993 में इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ लायंस क्लब (यूएस) द्वारा लायंस ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड से सम्मानित किया गया।



श्री अरविंदभाई धार्मिक गतिविधियों से भी जुड़े हुए थे, अर्थात् चित्रकूट में श्री रघुवीर मंदिर ट्रस्ट, जिसके माध्यम से साधु संत सेवा और गरीबों को भोजन कराने का कार्य निरंतर किया जाता है।

श्री अरविंदभाई के नेतृत्व और मार्गदर्शन में, ट्रस्ट ने अपने दो मौजूदा केंद्रों, एक चित्रकूट, जिला सतना (मध्य प्रदेश) और दूसरा आनंदपुर, जिला विदिशा (मध्य प्रदेश) के माध्यम से विभिन्न सामाजिक और मानवीय सेवाओं को क्रियान्वित किया है, जो नेत्र देखभाल, सामान्य स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, गौ सेवा, कृषि/बागवानी गतिविधियों और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करने में समर्पित सेवाएं प्रदान करते हैं।

श्री अरविंदभाई ने गुरुदेव के सपने को पूरा करने के लिए चार प्रकार की अवधारणा पर जोर दिया-

- भूखे को भोजन उपलब्ध कराना
- निर्धन लोगों के बीच अच्छी संस्कृति का उत्तराधिकार प्राप्त करना -
- सभी को ज्ञान और शिक्षा प्रदान करना
- अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुविधाएं प्रदान करना

स्वर्गीय श्री रामदास एन. गोकानी (15 नवंबर, 1929 – 23 जुलाई, 2011)

स्वर्गीय श्री रामदास एन. गोकानी एस.एस.एस.एस.टी. के ट्रस्टी थे। उन्होंने एस.एस.एस.एस.टी. में 43 साल बिताए और ट्रस्ट की कल्याणकारी गतिविधियों जैसे प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत कार्य, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, गौसेवा आदि को पूरा करने में खुद को समर्पित किया। वे श्री रघुवीर मंदिर ट्रस्ट की गतिविधियों में शामिल



थे।जरूरतमंदों और दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए उन्हें 1999 में "दिवालीबेन मोहनलाल मेहता पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। ट्रस्ट द्वारा उनके बहुमूल्य योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उसकी आत्मा को शांति मिलें।

4.7 मील के पत्थर

1967

- प्रथम मुलाकात

  अकाल राहत कार्य के दौरान रंका, बिहार में परम पूज्य गुरुदेव श्री रणछोड़दासजी महाराज की श्री अरविंद एन. मफतलाल से पहली मुलाकात।

1968

- ट्रस्ट की स्थापना

1969

- सद्गुरु नगर

1972

- जानकीकुंड डिस्पेंसरी

1973

- सार्वजनिक चिकित्सालय

1976

- पहला परिवार नियोजन शिविर

1980

- विद्याधाम स्कूल
- पहला नेत्र शिविर

1982

- प्रथम सामान्य शल्य चिकित्सा शिविर
- पहला प्लास्टिक सर्जरी शिविर

1988

- पोलियो शिविर

1992

- रजत जयंती
- स्वर्ण जयंती नेत्र शिविर

1993

- लायंस क्लब अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी पुरस्कार

1994

- मोतियाबिंद मुक्त क्षेत्र परियोजना

1996

- प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन

1998

- श्री सद्गुरु महिला बहू शाहकारी समिति

1999

- सद्गुरु स्कूल ऑफ नर्सिंग
- दीवालीबेन मोहनलाल मेहता पुरस्कार

2000

- सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय

2002

- मातृत्व सदन
- गुरुकुल शुरू हुआ

2003

- सद्गुरु पब्लिक स्कूल
- बाल चिकित्सा नेत्र देखभाल केंद्र
- प्रथम विजन सेंटर का उद्घाटन

2004

- सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय

2005

- राष्ट्रपति का दौरा

2007

- बच्चों का नेत्र देखभाल केंद्र
- मातृत्व सदन

2008

- आईएसओ से मान्यता
- डीएनबी प्रमाणपत्र
- सद्गुरु नेत्र बैंक
- एनपीसीबी अनुदान प्रशिक्षण कार्यक्रम
- कम दृष्टि संसाधन केंद्र
- दंत चिकित्सा इकाई की स्थापना

2009

- सद्गुरु ब्लड बैंक
- प्रथम आनंदपुर आउटरीच

2010

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा एसएसएनसी पुरस्कार से सम्मानित
- पैरामेडिकल, नेत्र रोग विशेषज्ञ के लिए एसएनसी प्रशिक्षण
- नये प्राथमिक विद्यालय का उद्घाटन
- विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

2011

- डॉ. आर.के. सेठ पुरस्कार
- सीटी स्कैन यूनिट



2012

- संगीत विद्यालय
- श्री धरमसी नैन्सी ओमान पुरस्कार

2013

- सद्गुरु-ग्रामोदय कम्युनिटी कॉलेज
- प्रथम 3-डी लाइव नेत्र शल्य चिकित्सा कार्यशाला

2014

- विट्रेओ रेटिना सेवाएँ
- संस्कृत विद्यालय
- सुपर-स्पेशलिटी क्लिनिक
- मोतियाबिंद मुक्त क्षेत्र

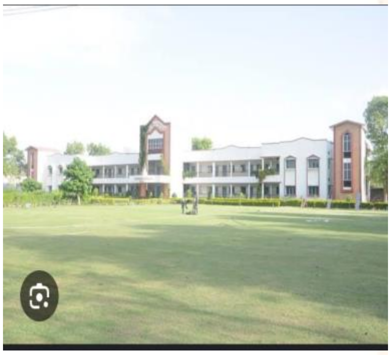


2015

- अंतर्राष्ट्रीय नेत्र विज्ञान परिषद (आईसीओ) फेलोशिप कार्यक्रम से संबद्धता
- विश्व में सर्वाधिक
  मॉड्यूलर नेत्र ऑपरेशन थियेटर वाले सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय के नए विंग का उद्घाटन
- 95वें तारा नेत्रदान यज्ञ का उद्घाटन

2016

- मोतियाबिंद बैकलॉग मुक्त क्षेत्र (सीएफजेड) हमीरपुर, यूपी
- मोतियाबिंद बैकलॉग मुक्त क्षेत्र (सीएफजेड) बांदा, यूपी
- मोतियाबिंद बैकलॉग मुक्त क्षेत्र (सीएफजेड) पन्ना, एमपी
- मोतियाबिंद बैकलॉग मुक्त क्षेत्र (सीएफजेड) सतना, मध्य प्रदेश
- उद्घाटन: सद्गुरु अलकॉन लर्निंग सेंटर
- सद्गुरु खेल परिसर का उद्घाटन.



2017

- स्वर्ण जयंती वर्ष, सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय।
- 100वें तारा नेत्रदान यज्ञ का शुभारंभ।
- बीएससी – नर्सिंग का परिचय
- सद्गुरु पब्लिक स्कूल, न्यू विंग।

2018

- मॉड्यूलर ऑपरेशन थियेटर और प्रीमियम ओपीडी - आनंदपुर
- आईएसओ 9001-2015 प्रमाणन
- कुसुम डायग्नोस्टिक सेंटर

2021

- ग्लूकोमा प्रबंधन एवं अनुसंधान इकाई केंद्र
- एनएबीएच प्रमाणन
- पीसीआर लैब

2022

- कॉर्निया प्रबंधन एवं अनुसंधान इकाई केंद्र।

2023

- स्वास्थ्य दृष्टि समृद्ध काशी
- नेत्र प्लास्टिक सर्जरी और नेत्र ऑन्कोलॉजी सेवा विभाग
- जानकीकुंड चिकित्सालय का नया मल्टी-सब स्पेशियलिटी विंग
- प्रधानमंत्री का दौरा.



4.8 पुरुस्कार एवं सम्मान

4.8.1 पुरुस्कार

सामुदायिक सेवा, स्वास्थ्य देखभाल और अन्य संबंधित गतिविधियों के क्षेत्र में किए जा रहे अपार कार्यों के लिए श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट को देश-विदेश में मान्यता मिली है। जिसका विवरण निम्नलिखित है-

- लायंस क्लब अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी पुरस्कार, 1993
- ढांडा पुरस्कार, 1996
- दीवालीबेन मोहनलाल मेहता पुरस्कार, 1999
- फ़िरदौसी पुरस्कार, 2003
- लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2004
- सामुदायिक नेत्र विज्ञान में सर्वश्रेष्ठ कार्य, 2005
- आरसेठ मेमोरियल पुरस्कार .के., 2007
- ग्लोरी ऑफ इंडिया अवार्ड, 2008





'The life Time Achievement Award' (AIOS), 2018

- 'नेत्र देखभाल सेवाओं के उपयोग और पहुंच पर विजन सेंटरों के प्रभाव' के लिए सामुदायिक सामाजिक पुरस्कार, 2010
- ग्रामीण समुदाय को उत्कृष्ट नेत्र चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए के दत्ता .आर.पुरुष्कार, 2010



'Excellence in Ophthalmology Award' - 2017 ISMSICS

- समाज रत्न पुरस्कार, 2013
- अंधेपन की रोकथाम में उत्कृष्ट कार्य
- श्री धर्मसे नानसे ओमान पुरस्कार, 2013
- 9वीं डॉराष्ट्रीय नेत्र सुरक्षा-एमसी नाहटा ., 2013
- प्रो डीएनएस चौधरी मेमोरियल पुरस्कार .2013
- 5वां वार्षिक स्पिरिट ऑफ ह्यूमैनिटी पुरस्कार, 2014
- सामुदायिक नेत्र विज्ञान व्याख्यान पुरस्कार, 2014
- प्रो डीएनएस चौधरी मेमोरियल पुरस्कार .2014
- डॉजेएल शर्मा पुरस्कार ., 2016
- आईएससीकेआरएस लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड -, 2016
- पदमश्री प्रोटीपी लहाणे अभिविन्यास पुरस्कार ., 2016
- श्री एसशाह पुरस्कार .एन., 2017
- लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड .IIRIS, 2017
- श्री वर्धमान जैन शिक्षा समर्पण अमृत समारोह पुरस्कार, 2017
- यंग अचीवर अवार्ड, 2017
- लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2017
- नेत्र विज्ञान में उत्कृष्टता पुरस्कार, 2017
- केराकॉन की कॉर्निया सोसाइटी ऑफ इंडिया की 5वीं राष्ट्रीय बैठक, 2018



Dharmsey Nansey V2020 India Award - 2013

- एआईओएस लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, 2018
- "नेत्र विज्ञान में उत्कृष्ट कार्य पुरस्कार", 2018
- भास्कर गौरव पुरस्कार -29 सितम्बर, 2018
- नेत्र विज्ञान में उत्कृष्ट कार्य पुरस्कार -05 अक्टूबर, 2018



ISCKRS
- Life time achievment Award, 2016

- 9वां लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड -25 जनवरी, 2019
- भारत भूषण सम्मान -13 मार्च, 2019
- "नेत्र कुंभ सम्मान - "23 जून, 2019
- उत्कृष्ट मानव सेवा कार्य पुरस्कार -24 नवंबर, 2019
- प्रतिष्ठित देवी पुरस्कार -29 फरवरी, 2020



Dharmsey Nansey V2020
India Award - 2013

- एआईओएस अवार्ड - बीके जैन .डॉ -26 जून, 2021
- AIOS अवार्ड - आलोक सेन .डॉ -26 जून, 2021
- एआईओएस पुरस्कार - प्रधन्य सेन .डॉ-26 जून, 2021
- AIOS अवार्ड - अमित मोहन .डॉ -26 जून, 2021
- भगवान महावीर फाउंडेशन 24वां महावीर फाउंडेशन पुरस्कार-चेन्नई 2 मार्च, 2022



Best work in community
opthalmology
- Dr. Dutta Award 2011

4.8.2 प्रशंसा पत्र

• डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



(भारत के महामहिम राष्ट्रपति)

• मानव को प्रकाश देना - एक ईश्वरीय मिशन - 06/10/2005

• अद्भुत और अत्यंत जानकारीपूर्ण यात्रा के लिए धन्यवाद। चित्रकूट में जो कुछ भी

हासिल हुआ है, उसकी व्यापकता और गुणवत्ता से मैं आश्चर्यचकित हूँ! मैं आपके भावी उत्तराधिकारी बनने की आशा करता हूँ। - 01/23/2013

• डेविड रॉबिंस टीएन



(2 डुडले सेंट. प्रीसीडेंस,रोड आइलैंड यूएसए)

"नेत्र देखभाल के लिए उत्कृष्ट संगठन। आशा है कि इसे शीघ्र ही उत्कृष्टता संस्थान में परिवर्तित किया जा सकेगा।"

• जी. वेंकटस्वामी

(अरविंद नेत्र अस्पताल के संस्थापक)



"मैं बाल चिकित्सा सामुदायिक नेत्र विज्ञान में उत्कृष्ट कार्य को देखकर चकित हूं। मैं श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा मानव जाति को प्रदान की गई सेवाओं और समाज के कल्याण के लिए उठाए गए कदमों की सराहना करता हूं।

•बाबूलाल गौर

(मुख्यमंत्री मप्र)



"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट अब जरूरतमंद नेत्र रोगियों के उपचार के लिए पवित्र स्थान बन गया है। अंधे को दृष्टि प्रदान करना एक महान कार्य है और पूरा स्टाफ जरूरतमंद रोगियों को नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है।"

• श्री मोतीलाल वोरा



(भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हैं।
मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल हैं।)

"एसएसएसएसटी नेत्र अस्पताल और सुविधाओं का दौरा करने का अनुभव मेरे लिए बहुत ज्ञानवर्धक और शिक्षाप्रद रहा है। सुविधाएँ, उपकरण और कर्मचारी विश्व स्तर के हैं और धार्मिक और मानवीय दोनों तरह के मिशन पूरे किए जाएँगे। अच्छा काम करते रहो और तुम जो अच्छा करते हो उसके लिए तुम्हें दुनिया भर में पहचाना जाएगा! इस अनुभव और यादगार समय के लिए धन्यवाद!"

•डॉ. मोंटे ए, डेल मोंटे



(बाल चिकित्सा नेत्र विज्ञान और वयस्क स्ट्रैबिस्मस, स्किलमैन बाल चिकित्सा नेत्र विज्ञान के प्रोफेसर,नेत्र विज्ञान और दृश्य विज्ञान प्रोफेसर, बाल चिकित्सा और संचारी रोग- केलॉग आई सेंटर, एन आर्बर)

"अद्भुत स्थान, आतिथ्य और अद्भुत रोगी देखभाल, जल्द ही वापस आने की आशा है।"

• मैरीलिन मिलर



(बाल चिकित्सा नेत्र विज्ञान और वयस्क स्ट्रैबिस्मस सेवा की प्रोफेसर - इलिनोइस आई एंड ईयर इन्फर्मरी, शिकागो)

"मैं चित्रकूट आकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ और मुझे आपके मरीजों को उत्कृष्ट और उदार देखभाल प्रदान करने के प्रति समर्पण को देखने का अवसर मिला है। आपके प्रयासों में एक छोटा सा योगदानकर्ता बनना प्रेरणादायी है।"

•डॉ. ग्राहम ई. क्विन

(फिलाडेल्फिया के चिल्ड्रेन्स हॉस्पिटल में नेत्र विज्ञान के प्रोफेसर)



"मैं सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में आकर सम्मानित और बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ, ट्रस्ट नेत्र देखभाल के क्षेत्र में सामाजिक रूप से

कमजोर और वंचित लोगों के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है, मानव सेवा सबसे बड़ा पुण्य है।"

•महामहिम श्री मंगूभाई पटेल

(माननीय राज्यपाल ,म.प्र.राजभवन भोपाल)



"यह सचमुच अद्भुत अस्पताल है जो समानता और करुणा के साथ उच्चतम सकारात्मक नैदानिक देखभाल और प्रशिक्षण प्रदान करता है। एक प्रेरणा।"

•प्रोफेसर क्लेयर गिल्बर्ट



(ICEH, LSHTM, UK)

"ग्रामीण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य।"

•के.एस. झावेरी,

(उड़ीसा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश)



"आत्मियता से जनसेवा की सेवा का तात्पर्य स्वस्थ और सेवक को शुद्ध उद्देश्य है, इस उक्ति को अपनी शक्ति, भक्ति और निःस्वार्थ भाव से चरितार्थ करने वाले सद्गुरु सेवा न्यास के सभी कार्यकर्ता और हितैषियों का अभिनन्दन" |

4.9 प्रकल्प

4.9.1 नेत्र देखभाल



अंधेपन के उन्मूलन के क्षेत्र में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट सबसे बड़े गैर सरकारी संगठन हैं। ट्रस्ट के पास विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे और नवीनतम उपकरणों और आधुनिक सुविधाओं के साथ अत्याधुनिक नेत्र अस्पताल हैं, जिनमें उच्च गुणवत्ता, उच्च मात्रा, कम लागत वाली टिकाऊ व्यापक नेत्र देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए ग्रामीण इलाकों में विशेष विभाग हैं।

4.9.1.1 सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय(एसएनसी), चित्रकूट

सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय (एसएनसी), चित्रकूट, जिला सतना, (मध्य प्रदेश) में 250 एकड़ परिसर में 2000 से अधिक बिस्तरों वाला अस्पताल है।

4.9.1.1.1 सहायक सेवाएं

सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय चित्रकूट द्वारा दी जाने वाली सहायक सेवाओं का विवरण निम्नलिखित है-

- **नेत्र बैंक**

2007 में स्थापित, सद्गुरु नेत्र बैंक का अनूठा काम कॉर्नियल अंधेपन के शिकार लोगों को दृष्टि पाने में मदद करना है। आस-पास के एकमात्र नेत्र बैंक के रूप में, हम कॉल का जवाब देने के लिए 24 घंटे उपलब्ध हैं। मानव अंग प्रत्यारोपण अधिनियम, 1994 (THOA-1994) के तहत राज्य सरकार द्वारा प्रमाणित और भारतीय नेत्र बैंक संघ से संबद्ध, सद्गुरु नेत्र बैंक ने आज तक 1492 से अधिक केर्टोप्लास्टी की है, जिससे उन लोगों को दृष्टि का उपहार मिला है जिनके लिए कॉर्नियल प्रत्यारोपण ही एकमात्र उम्मीद है।



- **ब्लड बैंक**



सद्गुरु ब्लड बैंक रक्त आधान सेवाओं के सभी पहलुओं में उच्च गुणवत्ता मानकों पर जोर देता है। यह पूर्णकालिक रूप से चलता है और इसका उद्देश्य सही समय पर सही रोगी को सही रक्त उपलब्ध कराना है। सार्वभौमिक सावधानियों का सख्ती से पालन किया जाता है, और दाता चयन, दान कक्ष में जांच प्रक्रिया और रक्त के प्रसंस्करण में दिशानिर्देशों का पालन किया जाता है।

- **रोगी परामर्श सेवाएँ**



सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में, हमारी परामर्श सेवा माता-पिता द्वारा निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है। ऐसे समय में जब रोगी परिचारक सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में, हमारी परामर्श सेवा माता-पिता द्वारा निर्णय लेने में सुविधा प्रदान करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है। ऐसे समय में जब रोगी परिचारिका

- **मेडिकल रिकॉर्ड विभाग**



सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय का मेडिकल रिकॉर्ड विभाग व्यवस्थित मेडिकल रिकॉर्ड सिस्टम के साथ नैदानिक, शैक्षणिक, कानूनी, प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। रिकॉर्ड को सुरक्षा उपायों के साथ एक संरक्षित क्षेत्र में संग्रहीत किया जाता है। सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में विभाग रोगियों की सहायता के लिए एक उच्च प्रशिक्षित टीम से सुसज्जित है।

- **प्रयोगशाला सेवाएं**



हमारे शोध और शैक्षणिक विंग के आगे विकास के साथ, हमने सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय, सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट में अत्याधुनिक प्रयोगशाला सेवाओं की स्थापना करके अपनी सेवा का विस्तार करने में एक बड़ी छलांग लगाई। हम दुनिया में सर्वोत्तम प्रथा ओं के अनुरूप प्रक्रियाओं, विधियों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सटीक और समय पर परिणाम सुनिश्चित करके अपने रोगियों को सर्वोत्तम नैदानिक देखभाल प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

- **खानपान और कैंटीन सेवाएं**



मरीज़ों के लिए मेस सेवाओं के अलावा, हम परिचारकों और आगंतुकों के लिए कैंटीन और खानपान की सुविधा भी प्रदान करते हैं। उच्च गुणवत्ता वाला भोजन उपलब्ध है और परिचारकों की सटीक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, हमारे पेशेवर कर्मियों द्वारा वर्षों के अनुभव के साथ सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

- **फार्मेसी**



सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय की फ़ार्मेसी सेवाएँ अस्पताल परिसर में ही आपके नुस्खे भरने की सुविधा प्रदान करती हैं। हमारे विशेषज्ञ और अनुभवी फ़ार्मासिस्ट के साथ, हमारा लक्ष्य उच्च गुणवत्ता वाली फ़ार्मास्यूटिकल सेवाएँ, साथ ही दवाओं पर विशेषज्ञ नैदानिक मार्गदर्शन और सलाह प्रदान करना है।

- **अन्य विविध सेवाएँ**



मरीजों को दी जाने वाली हमारी अन्य सेवाओं में डिपार्टमेंटल स्टोर, एटीएम सुविधाएं, आपदा प्रबंधन सुविधाएं और अन्य के अलावा उच्च प्रशिक्षित हाउसकीपिंग शामिल हैं। कृपया किसी भी सहायता या हमारी सहायक सेवाओं के बारे में जानकारी के लिए हमारे फ्रंट डेस्क से संपर्क करने में संकोच न करें।

4.9.1.1.2 प्रशिक्षण कार्यक्रम

डिप्लोमेट ऑफ नेशनल बोर्ड (डीएनबी) कार्यक्रम

डिप्लोमेट ऑफ नेशनल बोर्ड (डीएनबी) कार्यक्रम भारत में राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (एनबीई) द्वारा प्रदान किया जाने वाला एक प्रतिष्ठित और कठोर स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा प्रमाणन है। यह कार्यक्रम चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक सक्षम और कुशल कार्यबल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। उक्त कार्यक्रम संस्थान में नेत्र देखभाल में विभिन्न विशेषताओं में संरचित है, जो अनुभवी संकाय सदस्यों की देखरेख में व्यापक व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। पात्रता मानदंड एनबीईएमएस द्वारा निर्धारित किए गए हैं। संस्थान को हर साल पोस्ट डिप्लोमा और पोस्ट एमबीबीएस के लिए 05 उम्मीदवारों को शामिल करने के लिए मान्यता प्राप्त है।

- **क्लिनिकल**

व्यापक नेत्र विज्ञान में दीर्घकालिक फैलोशिप (हमारे द्वारा प्रस्तावित विशेषताओं में से एक के साथ) विट्रो-रेटिना और यूविया सेवाओं में फैलोशिप बाल चिकित्सा नेत्र विज्ञान और स्ट्रैबिस्मस में फैलोशिप कॉर्निया और अपवर्तक सर्जरी में फैलोशिप मोतियाबिंद और आईओएल में फैलोशिप ओकुलोप्लास्टी में फैलोशिप ओकुलर ऑन्कोलॉजी और सौंदर्य सेवाओं में फैलोशिप ग्लूकोमा सेवाओं में फैलोशिप।

- **पैरा-क्लिनिकल**

नेत्र सहायता में दीर्घकालिक डिप्लोमा विजन तकनीशियन स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता

- **नॉन-क्लिनिकल**

  नेत्र अस्पताल प्रबंधन में फेलोशिप विजन सेंटर प्रबंधन में प्रशिक्षण आई-बैंक में प्रशिक्षण दुःख परामर्शदाता सामुदायिक नेत्र देखभाल आउटरीच प्रबंधन में प्रशिक्षण बाल चिकित्सा नेत्र देखभाल परामर्श में प्रशिक्षण एमआरडी प्रबंधन में प्रशिक्षण नेत्र देखभाल परामर्श में प्रशिक्षण।

4.9.1.2 सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय(एसएसएनसी), आनंदपुर

सद्गुरु संकल्प नेत्र चिकित्सालय (एसएसएनसी), आनंदपुर, जिला विदिशा मध्य प्रदेश के सुदूरवर्ती और कम आबादी वाले इलाके में स्थित एक अत्याधुनिक नेत्र चिकित्सालय है जो 62 एकड़ परिसर में 300 बिस्तरों से युक्त है।

मध्य भारत के ग्रामीण इलाकों में आवश्यक अंधेपन से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आधुनिक नेत्र चिकित्सा तकनीकों और समुदाय-आउटरीच गतिविधियों के साथ मिलकर उच्च गुणवत्ता वाली नेत्र देखभाल सेवा उन्मुख मॉडल ने सुदूर ग्रामीण इलाकों में रहने वाली वंचित आबादी की सेवा करने के लिए इसे अन्य सभी सेवा प्रदाताओं से अलग कर दिया है और इस तरह इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर मान्यता मिली है। यह क्षेत्र का सबसे बड़ा सेवा प्रदाता है जहां हर साल करीब 2 लाख मरीज आते हैं।



एसएसएनसी आनंदपुर

4.9.2 महिला सशक्तिकरण

"हमारा उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उनके परिवार का स्तर ऊपर उठाना है - कौशल प्रदान करके, उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करके और रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए एक मंच प्रदान करके।"



श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना है, जिसकी शुरुआत से ही यह मान्यता रही है कि अगर एक महिला सशक्त होती है, तो पूरा परिवार सशक्त होता है। हम न केवल महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रहे हैं, बल्कि पूरे परिवार को बदलाव का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित एक अवधारणा स्वर्गीय श्री अरविंदभाई एन. मफतलाल द्वारा ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के उद्देश्य से बनाई गई थी। गांव की महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया जाता है जिन्हें समितियां कहा जाता है, जो सामूहिक रूप से घरेलू उत्पाद तैयार करती हैं जिन्हें बाद में पड़ोसी कस्बों और शहरों में खुदरा दुकानों/आउटलेटों को आउटसोर्स किया जाता है और अर्जित राजस्व क्रमशः सदस्यों में वितरित किया जाता है। इस अवधारणा ने अनेक महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाया है।

4.9.2.1 सद्गुरु महिला बहु उद्देशीय सहकारी समिति मर्यादित, चित्रकूट

*** गतिविधियाँ**

- ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित।
- इसने गांव की अनेक महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने तथा अपने घर की कमाऊ सदस्यों में से एक बनने में सक्षम बनाया है।
- स्थानीय ग्रामीण समुदाय की महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- उन्हें उत्साह और आत्मविश्वास के साथ काम करने के लिए प्रेरित करना।
- निरंतर सुधार और सीखने के उद्देश्य से उन्हें कार्य करने हेतु प्रयासरत करना।

*** व्यावसायिक प्रशिक्षण**

ट्रस्ट न केवल महिला समिति के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की दिशा में काम कर रहा है, बल्कि ऐसे अन्य तरीके भी हैं जिनके माध्यम से महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य पूरा किया जाता है। ट्रस्ट ने महिलाओं की स्थिति, ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद लैंगिक असमानताओं को देखते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है, महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार किए गए हैं और उन्हें आर्थिक गतिविधियों में मुख्यधारा की महिलाओं से जोड़ने के लिए संगठित किया गया है, खासकर व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से।



4.9.2.2 श्री सद्गुरु संकल्प महिला समिति, आनंदपुर (विदिशा) म. प्र.

*** गतिविधियाँ**

- ग्रामीण महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे अपने परिवार के लिए आजीविका कमाने वाली सदस्य बन सकें।
- ग्रामीण महिलाओं को नर्सिंग प्रशिक्षण और रोजगार प्रदान करना तथा उनकी सामाजिक आर्थिक-छवि को बढ़ाना।
- ग्रामीण महिलाओं के सामाजिकआर्थिक कल्याण को बढ़ावा देना।-
- आजीविका कमाने के नए अवसर खोलने के लिए कौशल आधारित प्रशिक्षण प्रदान करना।

4.9.3 कृषि

- **परिचय**

"हमारा उद्देश्य पर्यावरण को संरक्षित करना और वृक्षारोपण के माध्यम से जल और मृदा संरक्षण द्वारा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना है।"



गांवों में आजीविका के मुख्य साधनों को और अधिक समर्थन और मजबूत करने के लिए, ट्रस्ट लगातार अनुसंधान और विकास के माध्यम से फसलों की नई किस्मों को विकसित करने में लगा हुआ है, ताकि किसानों के लिए प्रति हेक्टेयर उपज बढ़ाई जा सके। पर्यावरण के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए ट्रस्ट द्वारा कई गतिविधियाँ की जाती हैं जिनमें जैविक खेती, बायो गैस उत्पादन, सौर ऊर्जा के माध्यम से बिजली का उत्पादन, बीहड़ भूमि का विकास, वाटर-शेड प्रबंधन, पानी का पुनर्चक्रण और वृक्षारोपण शामिल हैं।

- **बायोगैस संयंत्र**

ईंधन और ऊर्जा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए, ट्रस्ट ने बायो-गैस संयंत्र स्थापित किए हैं, प्रतिदिन गौशाला से एकत्रित गोबर का उपयोग बायो-गैस के उत्पादन में किया जाता है और उत्पन्न गैस का उपयोग भोजन पकाने के लिए किया जाता है, इससे ऊर्जा की कुल आवश्यकता पूरी होती है और एलपीजी की खपत कम होती है।



- **जैविक खेती**

ट्रस्ट ने जैविक खेती को भी अपनाया है, गौशाला से प्राप्त गोबर और बायो गैस प्लांट से प्राप्त अवशेषों का उपयोग खाद के रूप में चारा, सब्जी और बागवानी उत्पादन के लिए किया जाता है, इस विधि से उत्पादित उत्पाद सभी प्रकार के हानिकारक रसायनों से मुक्त होते हैं, आईएनएम (एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन) की तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।

जैविक खेती के माध्यम से उत्पादन से कई लाभ मिलते हैं। यह मिट्टी, पानी और वायु प्रदूषण को रोकता है, मिट्टी और पारिस्थितिकी संतुलन के बीच प्राकृतिक सामंजस्य बनाए रखता है। खाद्य सामग्री की स्वस्थ प्रकृति इसकी लोकप्रियता का कारण है। कई प्रकार की सब्जियाँ और फल जैसे गोभी, फूलगोभी, ब्रोकोली, बैंगन, टमाटर, खीरा, पालक, केला, अमरूद, पपीता, आम, नींबू आदि जैविक खेती तकनीक का उपयोग करके उत्पादित किए जाते हैं। ट्रस्ट ने खाद का उपयोग करके और जैविक सब्जियों, फलों और चारे का उत्पादन करके विशाल बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि में बदल दिया है।



- **सौर ऊर्जा उत्पादन**

सौर ऊर्जा सूर्य के प्रकाश से ऊर्जा को बिजली में परिवर्तित करना है, या तो सीधे फोटोवोल्टिक्स (पीवी) का उपयोग करके, अप्रत्यक्ष रूप से केंद्रित सौर ऊर्जा का उपयोग करके, या दोनों का संयोजन। केंद्रित सौर ऊर्जा प्रणालियाँ सूर्य के प्रकाश के एक बड़े क्षेत्र को एक छोटी किरण में केंद्रित करने के लिए लेंस या दर्पण और ट्रैकिंग सिस्टम का उपयोग करती हैं। ट्रस्ट के पास 980 किलोवाट के पैनल हैं।



- **वृक्षारोपण**

हरित और स्वच्छ वातावरण बनाने के लिए वृक्षारोपण में भी शामिल है। हर साल बरसात के मौसम में परिसर में हजारों सजावटी और वानिकी पौधे लगाए जाते हैं, जिससे हमारे परिसर के लॉन, फूलों की क्यारियाँ और सड़क के किनारे का नज़ारा एक स्पेक्ट्रम जैसा दिखता है। हर साल लगभग 2500 पौधे लगाए जाते हैं। अब तक ट्रस्ट ने 50000 से ज़्यादा पेड़ लगाए हैं।



- **जल विभाजन प्रबंधन**



ट्रस्ट अपनी कृषि गतिविधियों जैसे कृषि पद्धतियों, नालों पर मिट्टी और पत्थर के चेक डैम और तालाबों में बहते वर्षा जल को इकट्ठा करने के माध्यम से बहुत योगदान देता है। इसलिए, हमारे परिसर में पूरे साल, खासकर गर्मियों के महीनों में सुरक्षित और पीने के पानी की कोई कमी नहीं होती है।

- **खड्ड भूमि**



ट्रस्ट ने जैविक खाद और वाटरशेड पद्धतियों का उपयोग करके विशाल बंजर भूमि को उपजाऊ भूमि में बदलने की पहल की है, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी भूमि से जैविक उत्पादन हुआ है। बुनियादी संसाधन भूमि और पानी के सर्वोत्तम उपयोग के लिए इस प्रक्रिया को क्षेत्र के पड़ोसी किसानों के बीच दोहराया और अभ्यास किया जा रहा है।

- **हाइड्रोपोनिक खेती**



यह जल विलायक में खनिज पोषक घोल का उपयोग करके मिट्टी के बिना पौधों को उगाने की एक विधि है, जिसमें पौधों को केवल उनकी जड़ों को खनिज घोल के संपर्क में रखकर उगाया जाता है, या जड़ों को एक निष्क्रिय माध्यम, जैसे कि परलाइट या बजरी द्वारा सहारा दिया जा सकता है।

- **वर्मीकम्पोस्ट**

वर्मीकम्पोस्ट (वर्मी-कम्पोस्ट, वर्मीकल्चर) विभिन्न प्रकार के कीड़ों, आमतौर पर लाल विगलर, सफेद कीड़े और अन्य केंचुओं का उपयोग करके खाद बनाने की प्रक्रिया का उत्पाद है, जो सड़ने वाली सब्जी या खाद्य अपशिष्ट, बिस्तर सामग्री और वर्मीकास्ट का मिश्रण बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

वर्मीकास्ट (जिसे कृमि कास्टिंग, कृमि ह्यूमस, कृमि खाद या कृमि मल भी कहा जाता है) केंचुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों के विघटन का अंतिम उत्पाद है। इन कास्टिंग में वर्मीकंपोस्टिंग से पहले कार्बनिक पदार्थों की तुलना में कम स्तर के संदूषक और पोषक तत्वों की अधिक संतृप्ति पाई गई है।

वर्मीकम्पोस्ट में पानी में घुलनशील पोषक तत्व होते हैं और यह एक बेहतरीन, पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद और मिट्टी को नमी प्रदान करने वाला कंडीशनर है। इसका इस्तेमाल खेती और छोटे पैमाने पर टिकाऊ, जैविक खेती में किया जाता है।

यहां सद्गुरु में हम सभी उपलब्ध जैवनिम्नीकरणीय कचरे से खाद तैयार कर रहे हैं और इसका उपयोग जैविक खेती के लिए कर रहे हैं।

4.9.3 डेयरी एवं मवेशी देखभाल

- **परिचय**

"हमारा उद्देश्य परित्यक्त गायों की देखभाल करना और स्वच्छ दूध की पैदावार बढ़ाना है।" ट्रस्ट ने शुद्ध दूध की अपनी घरेलू ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक डेयरी फ़ार्म बनाए रखा है। ट्रस्ट उच्च उपज देने वाली संकर नस्ल की गायों को रखता है, जिसके झुंड में कुल 165 (एचएफ और जूनियर) दूध देने वाली गायें हैं। गायों के लिए चारा भी "जैविक खेती" करके घर में ही तैयार किया जाता है, जिसका असर अंततः दूध उत्पादन पर पड़ता है। ट्रस्ट ने पूरी तरह से मशीनीकृत दूध उत्पादन को अपनाया है जो दूध प्राप्त करने के सबसे स्वच्छ तरीकों में से एक है।



ट्रस्ट पूरे साल गौ सेवा केंद्र चलाता है जिसमें लगभग 1100 दूध न देने वाली गायों (जिन गायों को किसान अनुत्पादक होने के कारण छोड़ देते हैं) को आश्रय, चारा और पीने का पानी उपलब्ध कराया जाता है। इस शिविर का उद्देश्य गर्मियों में भूख से होने वाली मवेशियों की मृत्यु दर को कम करना है। गौ-सेवा केंद्र न केवल अपने परिसर की परिधि में गायों की सेवा करता है, बल्कि आसपास के गांवों में मवेशियों के स्वास्थ्य की जांच भी करता है। सेवा प्रदाताओं की एक टीम दूरदराज के गांवों में जाती है और ग्रामीणों की व्यक्तिगत स्वामित्व वाली गायों का घर-घर जाकर इलाज करती है, जिनकी जांच और उपचार योग्य पशु चिकित्सकों द्वारा किया जाता है।

- **गतिविधियाँ**



- सतना क्षेत्र में पहला डिजिटल और आधुनिक गाय सेवा केंद्र, जहां प्रत्येक गाय का अपना डिजिटल कार्ड और नक्शा है, जिससे गाय के मेडिकल रिकॉर्ड, जैसे बीमारी, टीकाकरण, स्वास्थ्य समस्या और बहुत कुछ पर नज़र रखी जा सके।
- सभी दूध न देने वाली गायों को आश्रय, चारा, चिकित्सा सहायता और पेयजल उपलब्ध कराना।
- अन्ना प्रथा को समाप्त करना तथा आर्थिक रूप से अविकसित ग्रामीण क्षेत्र में मवेशियों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना।
- संकटग्रस्त गायों की देखभाल करना तथा उन्हें बूचड़खानों में जाने या बेहोश होने से बचाना।
- धार्मिक महत्व के माध्यम से गायों के महत्व का प्रचार करना।
- गायों की बेहतर नस्ल विकसित करना।

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट ने शुद्ध दूध की अपनी घरेलू आवश्यकता को पूरा करने के लिए एक डेयरी फार्म बना रखा है। यहां हमारे पास उच्च उपज देने वाली संकर नस्ल की गायें हैं, कुल झुंड की संख्या 165 है, जिसमें दूध देने वाली 90 गायें शामिल हैं और शेष झुंड में बछिया, नर और मादा बछड़े शामिल हैं। वार्षिक दूध उत्पादन 2.65 लाख लीटर से अधिक है, जिसमें औसतन दूध का उत्पादन 700 लीटर प्रतिदिन है। डेयरी में हम गायों को दिए जाने वाले कुल चारे और आहार का रिकॉर्ड रखते हैं। गायों के लिए चारा भी घर में ही गोबर की खाद के प्रयोग से तैयार किया जाता है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं "जैविक खेती" जिससे अंततः दूध उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है। हमारे डेयरी उत्पादन भी रासायनिक पदार्थों से मुक्त हैं और स्वस्थ तथा स्वच्छ हैं।

यहाँ दूध दुहने की प्रक्रिया पूरी तरह से मशीनीकृत है, यह दूध प्राप्त करने के सबसे स्वच्छ तरीकों में से एक है। नस्ल की शुद्धता, सिद्ध नर की संतान और विभिन्न प्रजनन प्रणाली रोगों के संक्रमण से बचाव के लिए, डेयरी फार्म में कृत्रिम गर्भाधान का भी अभ्यास किया जाता है। पशुओं को एफएमडी, एचएस/बीक्यू आदि घातक बीमारियों से बचाने के लिए उचित टीकाकरण और डी-वर्मिंग की जाती है। प्रत्येक पशु को उनके उत्पादन और शरीर के वजन के अनुसार संतुलित आहार और चारा दिया जाता है। एक पशु चिकित्सक भी अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा है और गायों के स्वास्थ्य की देखभाल करता है।

पंचम- अध्याय

श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित शैक्षिक कार्यक्रम

5.1 भूमिका

"हमारा उद्देश्य छात्रों को शैक्षणिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास सहित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है"।

ट्रस्ट सभी के लिए शिक्षा के मूल्य में दृढ़ता से विश्वास करता है। यह महसूस करता है कि साक्षरता समुदाय को सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में लाने में काफी हद तक योगदान देती है। समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा प्रदान करने के लिए, ट्रस्ट ने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा। ट्रस्ट ने शुरुआत में एक स्कूल से की और धीरे-धीरे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों को जोड़ा। ट्रस्ट अपने तत्वावधान में कई प्राथमिक, माध्यमिक और व्यावसायिक संस्थान चलाता है, जिसमें स्कूल शिक्षा, नर्सिंग, पैरामेडिकल साइंस, कंप्यूटर शिक्षा, संस्कृत शिक्षा और संगीत शामिल हैं। ट्रस्ट द्वारा शिक्षा की विशेषताएं इस प्रकार हैं -

- योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षण का उच्चतर मानक
- आधुनिक एवं पारंपरिक तरीकों से शिक्षण
- गतिविधि आधारित व्यावहारिक शिक्षा
- छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करें
- उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं की खोज
- रचनात्मक शिक्षण
- तनाव मुक्त शिक्षण वातावरण
- खेल गतिविधियों की खोज के लिए विशाल परिसर

5.2 शिक्षा कार्यक्रम



सद्गुरु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र - विजन टेक्नीशियन, ओटी सहायता, मेडिकल लैब सहायता, स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता, सिलाई, कला और शिल्प, ब्यूटीशियन पाठ्यक्रम, सॉफ्ट टॉय निर्माण, कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण (खाना पकाने) जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से रोजगार उन्मुख शिक्षण और कौशल विकास के अवसर प्रदान करता है।

5.2.1 विद्याधाम मिडिल सेकेंडरी स्कूल (श्रीमती सुशीलाबेन अरविंदभाई एन. मफतलाल शिक्षा सदन)



विद्याधाम मिडिल सेकेंडरी स्कूल (श्रीमती सुशीला बेन अरविंद भाई एन. मफतलाल शिक्षा सदन) एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान है, जो मुख्य रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए जाना जाता है। यह स्कूल मफतलाल परिवार द्वारा स्थापित और संचालित किया गया है। श्रीमती सुशीला बेन अरविंद भाई मफतलाल के नाम पर यह शिक्षा सदन उनके द्वारा समाज के प्रति किए गए योगदान और शिक्षा के प्रति उनके समर्पण को सम्मानित करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।

इस स्कूल में मिडिल सेकेंडरी स्तर तक की शिक्षा प्रदान की जाती है, और इसका उद्देश्य छात्रों को शैक्षणिक, सांस्कृतिक, और नैतिक मूल्यों में उत्कृष्ट बनाना है। यह संस्था अपने उच्च शैक्षणिक मानकों और समर्पित शिक्षकों के कारण छात्रों को बेहतर भविष्य के लिए तैयार करती है।

5.2.2 विद्याधाम हायर सेकेंडरी स्कूल (निरुपमाबेन नरोत्तमभाई नेन्सी टोपराणी परिवार शिक्षा सदन)

विद्याधाम हायर सेकेंडरी स्कूल (निरुपमाबेन नरोत्तमभाई नेन्सी टोपराणी परिवार शिक्षा सदन) एक उच्च स्तरीय शैक्षणिक संस्थान है, जिसका उद्देश्य छात्रों को उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करना है। यह स्कूल टोपराणी परिवार द्वारा स्थापित और संचालित किया गया है, जिनका शिक्षा और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।



इस स्कूल का नाम निरुपमाबेन नरोत्तमभाई नेन्सी टोपराणी के सम्मान में रखा गया है, जो अपने परिवार के साथ शिक्षा के प्रसार और समाज सेवा में संलग्न रही हैं। यह स्कूल 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों को विज्ञान, वाणिज्य, और कला जैसे विविध विषयों में शिक्षा प्रदान करता है, ताकि वे आगे उच्च शिक्षा और करियर की संभावनाओं के लिए सुदृढ़ आधार प्राप्त कर सकें।

विद्यालय का ध्यान केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता पर ही नहीं, बल्कि छात्रों के समग्र विकास पर भी है। यह उनके व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता, और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद करता है।

5.2.3 सद्गुरु पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल - सीबीएसई से संबद्ध (श्री रामकृष्ण शिक्षा सदन)

सद्गुरु पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल - सीबीएसई से संबद्ध (श्री रामकृष्ण शिक्षा सदन) एक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान है, जो केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE) से मान्यता प्राप्त है। यह स्कूल अपने उच्च शैक्षणिक मानकों और समर्पित शिक्षण पद्धतियों के लिए जाना जाता है।



यह शिक्षा सदन श्री रामकृष्ण के ना म पर स्थापित किया गया है, जो शिक्षा और समाज सेवा के प्रति अपने समर्पण के लिए जाने जाते हैं। इस स्कूल का उद्देश्य छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से सक्षम

बनाना है, बल्कि उन्हें नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में भी सुदृढ़ करना है, ताकि वे जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो सकें।

यह स्कूल प्राथमिक से लेकर हायर सेकेंडरी तक के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करता है और छात्रों को केंद्रीय बोर्ड की परीक्षाओं के लिए तैयार करता है। इसके साथ ही, स्कूल सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, खेलकूद, और व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों पर भी जोर देता है, ताकि छात्रों का समग्र विकास हो सके।

सद्गुरु पब्लिक हायर सेकेंडरी स्कूल एक आदर्श शैक्षणिक वातावरण प्रदान करता है, जहाँ छात्रों को आधुनिक तकनीकी सुविधाओं के साथ-साथ अनुशासन, नैतिकता और समाज के प्रति जागरूकता के साथ शिक्षित किया जाता है।

5.2.4 सद्गुरु पैरामेडिकल विज्ञान संस्थान (एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा से संबद्ध)



सद्गुरु इास्टेट्यूट ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल साइंसेज – सतना

सद्गुरु पैरामेडिकल विज्ञान संस्थान एक प्रमुख संस्थान है जो स्वास्थ्य सेवाओं और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को पैरामेडिकल शिक्षा प्रदान करता है। यह संस्थान एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा से संबद्ध है और विभिन्न पैरामेडिकल कोर्सों में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है।

इस संस्थान का उद्देश्य चिकित्सा सेवाओं में सहायता प्रदान करने वाले पेशेवरों को प्रशिक्षित करना है, जो डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के साथ मिलकर काम करते हैं। यह संस्थान चिकित्सा क्षेत्र में व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान का एक अच्छा मिश्रण प्रदान करता है, जिससे छात्र विभिन्न पैरामेडिकल विशेषताओं जैसे लैब टेक्नोलॉजी, रेडियोलॉजी, ऑप्थलमिक तकनीशियन, नर्सिंग, और अन्य संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

सद्गुरु पैरामेडिकल विज्ञान संस्थान छात्रों को आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और तकनीकों के साथ प्रशिक्षित करता है, ताकि वे चिकित्सा क्षेत्र में व्यावहारिक चुनौतियों का सामना कर सकें। यह संस्थान

छात्रों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य सेवाओं में अपना करियर बनाने के लिए तैयार करता है, और इसके साथ ही उन्हें समाज सेवा के प्रति प्रेरित करता है।

संबद्धता के कारण, एपीएस विश्वविद्यालय, रीवा द्वारा निर्धारित शैक्षणिक मानकों का पालन किया जाता है और पाठ्यक्रमों को उसी के अनुसार संचालित किया जाता है।

Sadguru Institute of Paramedical Sciences

(Recog. by: M.P. Paramedical Council, Bhopal & M.P. Medical Science University, Jabalpur)

Program	Duration	Eligibility	Seats Available
Ophthalmic Assistant (DOA)	2 Year Diploma	10+2 Passed With 45% PCBE	50

For More Details, please contact:

Principal,
Sadguru Institute of paramedical Sciences
Jankikund, Chitrakoot
Dist. Satna (M.P.)-210204
Contact-07670-265320 (6220)
E-mail-dmwani@rediffmail.com

5.2.5 श्री राम संस्कृत महाविद्यालय (महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल से संबद्ध)

श्री राम संस्कृत महाविद्यालय एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान है, जो प्राचीन भारतीय भाषा संस्कृत के अध्ययन और शिक्षण में विशेषज्ञता प्रदान करता है। यह महाविद्यालय महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल से संबद्ध है, जो संस्कृत भाषा, साहित्य, और वैदिक शिक्षा के संरक्षण और प्रसार के लिए समर्पित है।

इस महाविद्यालय का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत भाषा के व्याकरण, साहित्य, दर्शन, और प्राचीन भारतीय ज्ञान की शिक्षा देना है। यहाँ पर पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण विधियों के माध्यम से छात्रों को वैदिक अध्ययन, शास्त्रों, और संस्कृत साहित्य में निपुणता प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

श्री राम संस्कृत महाविद्यालय न केवल भाषाई कौशल पर ध्यान देता है, बल्कि भारतीय संस्कृति, दर्शन, और योग जैसे क्षेत्रों में भी छात्रों को ज्ञान प्रदान करता है। इसके पाठ्यक्रमों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, और अन्य प्रमुख संस्कृत ग्रंथों का गहन अध्ययन शामिल होता है।

महाविद्यालय का लक्ष्य उन छात्रों को तैयार करना है जो संस्कृत भाषा और भारतीय परंपराओं का अनुसरण करते हुए समाज में योगदान कर सकें, साथ ही अध्यापन और शोध के क्षेत्र में भी अग्रसर हो सकें। महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल से संबद्ध होने के कारण, यहां के शैक्षणिक मानक उच्च स्तर के होते हैं, और छात्रों को समृद्ध संस्कृत परंपरा में शिक्षा प्राप्त करने का एक सुदृढ़ मंच प्रदान किया जाता है।

5.2.6 सद्गुरु स्कूल ऑफ नर्सिंग (भारतीय नर्सिंग परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त)

सद्गुरु स्कूल ऑफ नर्सिंग एक प्रतिष्ठित नर्सिंग शिक्षा संस्थान है, जिसे भारतीय नर्सिंग परिषद (INC) द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह संस्थान नर्सिंग के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है और कुशल, समर्पित नर्सों को तैयार करने के लिए प्रसिद्ध है।



इस स्कूल का मुख्य उद्देश्य स्वास्थ्य सेवाओं में आ वश्यक नर्सिंग कौशल और ज्ञान प्रदान करना है, ताकि छात्र प्रभावी रूप से चिकित्सा क्षेत्र में रोगियों की देखभाल कर सकें। यहां पर सामान्य नर्सिंग और मिडवाइफरी (GNM) और अन्य नर्सिंग से संबंधित पाठ्यक्रमों की शिक्षा दी जाती है, जो छात्रों को व्यावहारिक और सैद्धांतिक दोनों पक्षों में निपुण बनाते हैं।

सद्गुरु स्कूल ऑफ नर्सिंग आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और नर्सिंग तकनीकों से लैस है, जहां छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ रोगियों की देखभाल, स्वास्थ्य प्रबंधन, और नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। नर्सिंग के पाठ्यक्रमों में नर्सिंग प्रैक्टिस, एथिक्स, संचार कौशल, और क्लिनिकल प्रशिक्षण का समावेश होता है।

भारतीय नर्सिंग परिषद से मान्यता प्राप्त होने के कारण, इस संस्थान का पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण गुणवत्ता के उच्चतम मानकों पर आधारित है। यह स्कूल छात्रों को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी नर्सिंग के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए तैयार करता है।

Sadguru School of Nursing

(Recog. by: M.P. Govt., Indian Nursing Council, New Delhi & M.P. Medical science University Jabalpur)

Program	Duration	Eligibility	Seats Available
General Nursing & Midwifery (GNM/Staff Nurse)	3 Years Diploma	10+2 Passed With 45% PCBE	60
B.Sc. Nursing	4 Years Degree	10+2 Passed With 45% PCBE	20

For More Details please contact:

Principal,
Sadguru School of Nursing
Jankikund, Chitrakoot
Dist. Satna (M.P.)-210204
Contact-07670-265320 (6220)
E-mail-dmwani@rediffmail.com

5.2.7 सद्गुरु इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर स्टडीज (देवीबेन कृष्णकांत पारेख मेमोरियल शिक्षा सदन)

सद्गुरु इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर स्टडीज (देवीबेन कृष्णकांत पारेख मेमोरियल शिक्षा सदन) एक अग्रणी शैक्षणिक संस्थान है, जो सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है। यह संस्थान कंप्यूटर अध्ययन के क्षेत्र में छात्रों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान और व्यावहारिक प्रशिक्षण देने के लिए समर्पित है।

इस संस्थान का नाम देवीबेन कृष्णकांत पारेख के सम्मान में रखा गया है, जो शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए जानी जाती हैं। संस्थान का उद्देश्य तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना और छात्रों को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए तैयार करना है।

यहां पर कंप्यूटर साइंस, आईटी, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट, वेब डेवलपमेंट, डाटा साइंस, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे आधुनिक तकनीकी विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही, छात्रों को प्रोग्रामिंग, नेटवर्किंग, साइबर सिक्योरिटी, और अन्य प्रमुख आईटी कौशलों में भी प्रशिक्षित किया जाता है।

सद्गुरु इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर स्टडीज तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव पर भी जोर देता है, जिससे छात्र उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार हो सकें। संस्थान में आधुनिक लैब्स, उन्नत सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की सुविधाएं उपलब्ध हैं, जो छात्रों को नवीनतम तकनीकों में प्रवीण बनाती हैं।

यह संस्थान छात्रों को तकनीकी रूप से सक्षम बनाने के साथ-साथ उनके नैतिक और व्यावसायिक मूल्यों के विकास पर भी ध्यान देता है, ताकि वे आईटी उद्योग में सफल करियर बना सकें और समाज में सकारात्मक योगदान कर सकें।

Sadguru-Institute of Computer Studies

(Recog. by: Makhanlal Chaturvedi University, Bhopal)

S .No	Name of Course	Type of Course	Eligibility	Duration	Seats Available
1	M.Sc(CS)	Master Degree	Any Graduate	2 years	30
2	B.Com CA	Bachelor Degree	12th any Stream	3 years	50
3	BCA	Bachelor Degree	12th any Stream	3 years	100
4	PGDCA	Post Graduate Diploma	Any Graduate	1 year	36
5	DCA	Diploma	12th	1 year	36

For More Details, please contact:

Principal,
Sadguru Institute of Computer Studies
Jankikund, Chitrakoot
Dist. Satna (M.P.)-210204
Contact-07670-265320 (6261) ,Mob-7024159598
E-mail- sics_chitrakut@rediffmail.com

5.2.8 सद्गुरु संगीत महाविद्यालय, (प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध)

सद्गुरु संगीत महाविद्यालय, जो प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज से सम्बद्ध है, एक प्रतिष्ठित संगीत शिक्षण संस्थान है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत, वाद्य संगीत, और नृत्य कला में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करता है। यह महाविद्यालय शास्त्रीय संगीत और कला के संरक्षण और प्रसार के लिए समर्पित है, और इसका उद्देश्य छात्रों को संगीत के क्षेत्र में निपुण बनाना है।

प्रयाग संगीत समिति से सम्बद्ध होने के कारण, यहां का पाठ्यक्रम संगीत और कला के पारंपरिक और आधुनिक दोनों पहलुओं को शामिल करता है। छात्र गायन, वादन (संगीत वाद्य यंत्र), और नृत्य (जैसे कथक) में विभिन्न डिप्लोमा और डिग्री कोर्स कर सकते हैं।

महाविद्यालय का फोकस शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं जैसे ख्याल, ठुमरी, दादरा, ध्रुपद, और धमार पर है, साथ ही छात्रों को तबला, सितार, बांसुरी, हारमोनियम, और अन्य वाद्य यंत्रों में भी

प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, भारतीय शास्त्रीय नृत्य में रुचि रखने वाले छात्रों के लिए भी यहां विशेष कार्यक्रम होते हैं।

यह संस्थान न केवल तकनीकी संगीत शिक्षा प्रदान करता है, बल्कि संगीत और कला के प्रति एक गहन समझ और समर्पण को भी विकसित करता है। संगीत महाविद्यालय में छात्रों को मंच प्रदर्शन, संगीत प्रतियोगिताओं, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर मिलते हैं, जो उनके आत्मविश्वास और कौशल को बढ़ाते हैं।

सद्गुरु संगीत महाविद्यालय संगीत की समृद्ध परंपरा को बनाए रखते हुए नई पीढ़ी के कलाकारों को तैयार करने के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य करता है।

5.2.9 सद्गुरु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र



सद्गुरु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र एक प्रमुख संस्थान है, जो विभिन्न व्यावसायिक कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। इस केंद्र का उद्देश्य युवाओं और कामकाजी व्यक्तियों को व्यावहारिक और तकनीकी कौशल प्रदान करना है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने करियर को बेहतर बना सकें।

यह केंद्र विभिन्न उद्योगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए कई तरह के व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की पेशकश करता है। इनमें त कनीकी प्रशिक्षण, इलेक्ट्रिकल वर्क, मैकेनिकल स्किल्स, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण, और फार्मास्यूटिकल ट्रेनिंग जैसे विविध क्षेत्रों में कोर्स शामिल हैं।

सद्गुरु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र न केवल शहरी युवाओं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को भी कौशल विकास के अवसर प्रदान करता है, जिससे वे अपने क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकें या स्वयं का व्यवसाय शुरू कर सकें। इसके द्वारा प्रदान किया गया प्रशिक्षण आधुनिक उद्योगों और व्यापार की आवश्यकताओं के अनुरूप होता है, ताकि प्रशिक्षु आसानी से रोजगार के अवसर पा सकें।

यह केंद्र उन्नत उपकरणों, अत्याधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं और अनुभवी प्रशिक्षकों से लैस है, जो प्रशिक्षण कार्यक्रमों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ, केंद्र में

व्यक्तित्व विकास, संचार कौशल, और उद्यमिता के गुर भी सिखाए जाते हैं, ताकि प्रशिक्षु उद्योग की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास से कर सकें।

सद्गुरु व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र का मुख्य उद्देश्य युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें विभिन्न उद्योगों में रोजगार के लिए तैयार करना है, जिससे वे अपने भविष्य को सशक्त बना सकें।

*** महत्वपूर्ण बिंदु**

• 4500 से अधिक छात्र.

• शुरुआत में एक स्कूल से शुरुआत की गई और धीरे-धीरे उच्च शिक्षा और व्यावसायिक संस्थानों को इसमें जोड़ा गया।

• ट्रस्ट का दृढ़ विश्वास है कि 'सभी के लिए शिक्षा' का महत्व है।

• यह क्षेत्र में अपने सर्वोत्तम शिक्षण, शैक्षणिक और सह-पाठयक्रम गतिविधियों के लिए जाना जाता है।

• डिजिटल शिक्षण पद्धति प्रदान करता है।

• बोर्ड परीक्षाओं में शत-प्रतिशत परिणाम प्राप्त किया तथा राज्य की मेरिट सूची में स्थान प्राप्त किया।

• मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

• 18-35 वर्ष आयु वर्ग की ग्रामीण महिलाओं को रोजगारोन्मुख प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रशिक्षण प्रदान करना।

5.3 शिक्षा कार्यक्रम: आनंदपुर

• श्री सद्गुरु संकल्प हायर सेकेंडरी स्कूल (श्रीमती सुशीलाबेन अरविंदभाई मफतलाल हायर सेकेंडरी स्कूल)



• विद्या मंदिर प्राइमरी स्कूल (श्री पद्मनाभभाई अरविंदभाई मफतलाल प्राइमरी स्कूल)

• श्री सद्गुरु संकल्प वेदविद्यापीठ (महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, भोपाल से संबद्ध)

*** महत्वपूर्ण बिंदु**

• 700 से अधिक छात्र



• इसकी शुरुआत प्राथमिक विद्यालय से हुई और अब यह 12वीं कक्षा तक शिक्षा प्रदान करता है।

• यह क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में से एक है, जो सर्वोत्तम शिक्षण, शैक्षणिक और सह-पाठयक्रम गतिविधियों के लिए जाना जाता है।

• उच्च गुणवत्ता और सस्ती शिक्षा प्रदान करता है।

• शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग से आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देना।

• छात्रों को सर्वोत्तम बुनियादी ढांचा और व्यवस्था उपलब्ध कराता है।

• ग्रामीण एवं आंतरिक क्षेत्र में उच्च शि+क्षा के अवसर प्रदान करता है।

5.4 शिक्षा पहल – प्रदर्शन 2022-23

क्र. सं.	शिक्षा संस्थान	चित्रकूट	आनंदपुर	कुल
1	प्राथमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	1273	648	1921
2	सद्गुरु पब्लिक एचआर. सेक. विद्यालय	1478	0	1478
3	संस्कृत विद्यालय	502	80	582
4	संगीत विद्यालय	144	0	144
	कुल छात्रों की संख्या	3397	728	4125

5.5 प्रशिक्षण कार्यक्रम – प्रदर्शन 2022-23

क्र. सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम	चित्रकूट	आनंदपुर	कुल
1	सद्गुरु इंस्टीट्यूट ऑफ कंप्यूटर स्टडीज	560	0	560
2	बी.एस.सी. (नर्सिंग)	96	0	96
3	जीएनएम	220	0	220
4	नेत्र सहायता में डिप्लोमा	143	42	185
5	विज़न तकनीशियन	24	10	34
6	ओटी तकनीशियन	18	0	18
	कुल छात्रों की संख्या	1061	52	1113

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध **"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट का शैक्षिक योगदान"** के निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए गए है--

6.1.1 जीवन परिचय संबंधी

गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज के जीवन परिचय संबंधी निष्कर्ष इस प्रकार हैं -

- श्री रण छोड़ दास जी महाराज एक मानवीय संत थे।
- तपस्या और पूर्ण सेवा उनके जीवन में पूर्ण सामंजस के साथ मौजूद थे।
- यह अत्यंत सरल व सर्वप्रिय संत थे जिनका शरीर पतला था, लेकिन उसमें असीम प्रेम और ऊर्जा थी।
- इन्होंने हमारे देश के सबसे गरीब लोगों के लिए अनूठी सेवा की और उनके कष्टों को कम करने का प्रयास किया।
- वे पूरी तरह निःस्वार्थ और आत्मत्याग पूर्ण सेवा के तरीकों से कई परोपकारी ही संस्थानों, अस्पतालों, विद्यालयों व ग्रामीण विकास कार्यों आदि की स्थापना को प्रेरित किया, जो देश के कई हिस्सों में संचालित हैं।
- महाराज जी का जन्म महाराष्ट्र के अमरावती जिले के एक गांव बायफल में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्हें श्री रामानंद जी के प्रति गहन भक्ति थी।
- भगवान प्राप्ति की तीव्र इच्छा के कारण, राम राव ने 10 साल की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और अयोध्या की यात्रा की।
- वे नागा साधुओं के मंडली में शामिल हो गए, जहां उनसे अत्यधिक कार्य करवाया जाता था। जिससे उनमें सहनशीलता के गुण का विकास हुआ।
- रामानंद संप्रदाय के महान संत के पायहारी बाबा उन्हें नागा साधुओं के बीच से अपने साथ ले गए जो बाद में उनके गुरु बने, इन्होंने इन्हें दीक्षित कर इनका नाम रण छोड़ दास रखा।
- गुरु जी की आज्ञा से उन्होंने पूरे भारत वर्ष की यात्रा की और पवित्र तीर्थ स्थलों का दौरा भी किया जिसमें उन्हें महान तपसियों और संतों से मिलने का अवसर मिला।

6.1.2 कृतित्व संबंधी

• **समाज सुधारक के रूप में योगदान:** गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और भेदभाव के खिलाफ जागरूकता फैलाई। उन्होंने जाति, धर्म और समाज की अन्य बाधाओं को दूर करने के लिए लोगों को प्रेम, समानता और भाईचारे का संदेश दिया।

• **धार्मिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन:** उन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिकता को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। उनका संदेश सरल, सुलभ और जनहितकारी था, जिससे लोग अपने जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता को समझ सकें और उसका पालन कर सकें।

• **आश्रमों और संस्थाओं की स्थापना:** समाज की सेवा के लिए उन्होंने कई आश्रम और संस्थाएँ स्थापित कीं। ये संस्थाएँ आज भी धर्म, शिक्षा, चिकित्सा और समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हैं, जो उनके दूरदर्शी नेतृत्व और सेवा भावना का परिणाम है।

• **सेवा और दानशीलता:** उनका कृतित्व सेवा और दानशीलता पर आधारित था। उन्होंने गरीबों, वंचितों और जरूरतमंदों की मदद करने के लिए कई योजनाएँ चलाईं और उनके कल्याण के लिए कार्य किया। उनका मानना था कि सच्ची भक्ति सेवा में है।

• **अहिंसा और सत्य का प्रचार:** गुरुदेव ने अपने जीवनकाल में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का प्रचार किया। उनके अनुयायी और भक्त उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण कर जीवन में नैतिकता और सच्चाई का पालन करते रहे।

• **आध्यात्मिक ग्रंथों का प्रचार:** उन्होंने वैदिक और धार्मिक ग्रंथों की शिक्षाओं का प्रचार किया और उन्हें जनसाधारण के लिए सुलभ बनाया। उनके उपदेशों और शिक्षाओं का संग्रह उनके अनुयायियों द्वारा आज भी पढ़ा और अनुसरण किया जाता है।

गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज का कृतित्व मानवता के प्रति समर्पण, सामाजिक उत्थान और धार्मिक जागरण का प्रतीक है। उनके कार्यों ने अनगिनत लोगों को प्रेरित किया और समाज में एक स्थायी बदलाव लाया।

6.1.3 शैक्षणिक संस्थान संबंधी

• **शिक्षा के महत्व का प्रचार:** गुरुदेव रणछोड़ दास जी ने शिक्षा को समाज के उत्थान का प्रमुख साधन माना। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने अपने उपदेशों में शिक्षा के महत्व को बार-बार रेखांकित किया और इसे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बताया।

• **शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना:** गुरुदेव ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की। इन संस्थानों का उद्देश्य न केवल पारंपरिक शिक्षा प्रदान करना था, बल्कि उनमें नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा भी शामिल थी, जिससे विद्यार्थी अपने समाज और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी को समझ सकें।

• **समाज के वंचित वर्गों के लिए शिक्षा:** उनका विशेष जोर समाज के वंचित और पिछड़े वर्गों तक शिक्षा पहुँचाने पर था। उन्होंने शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने का प्रयास किया, ताकि समाज के हर वर्ग को शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार मिल सके। वे मानते थे कि शिक्षा से ही गरीबी और अज्ञानता को समाप्त किया जा सकता है।

• **व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा पर जोर:** गुरुदेव रणछोड़ दास जी केवल सैद्धांतिक शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, बल्कि वे व्यावहारिक और नैतिक शिक्षा पर भी जोर देते थे। उनके अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को न केवल ज्ञान देना है, बल्कि उसे समाज का जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनाना भी है।

• **आध्यात्मिक और धार्मिक शिक्षा का समावेश:** गुरुदेव द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक और आध्यात्मिक शिक्षा का विशेष महत्व था। उन्होंने वेद, उपनिषद और अन्य धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा को शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर दिया, ताकि विद्यार्थियों में आध्यात्मिक जागरूकता और जीवन के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित हो सके।

• **महिलाओं की शिक्षा पर जोर:** उस समय के सामाजिक परिदृश्य में महिलाओं की शिक्षा पर बहुत कम ध्यान दिया जाता था, लेकिन गुरुदेव ने महिलाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित किया। वे मानते थे कि महिलाओं का शिक्षित होना समाज के समग्र विकास के लिए आवश्यक है।

- ट्रस्ट सभी के लिए शिक्षा के मूल्य में दृढ़ता से विश्वास करता है।
- साक्षरता समुदाय को सामाजिक जीवन और अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में लाने में काफी हद तक योगदान देती है।
- समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा प्रदान करने के लिए, ट्रस्ट ने शिक्षा के क्षेत्र में कदम रखा।
- ट्रस्ट ने शुरुआत में एक स्कूल से की और धीरे-धीरे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सस्ती शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उच्च शिक्षा: और व्यावसायिक संस्थानों को जोड़ा।
- ट्रस्ट अपने तत्वावधान में कई प्राथमिक, माध्यमिक और व्यावसायिक संस्थान चलाता है, जिसमें स्कूल शिक्षा, नर्सिंग, पैरामेडिकल साइंस, कंप्यूटर शिक्षा, संस्कृत शिक्षा और संगीत शामिल हैं।
    - योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षण का उच्चतर मानक
    - आधुनिक एवं पारंपरिक तरीकों से शिक्षण
    - गतिविधि आधारित व्यावहारिक शिक्षा
    - छात्रों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करें
    - उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं की खोज
    - रचनात्मक शिक्षण
    - तनाव मुक्त शिक्षण वातावरण
    - खेल गतिविधियों की खोज के लिए विशाल परिसर

गुरुदेव रणछोड़ दास जी महाराज का शैक्षणिक योगदान इस दृष्टिकोण पर आधारित था कि शिक्षा न केवल व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि समाज को भी प्रगति और समृद्धि की ओर ले जाती है। उनके द्वारा स्थापित शैक्षणिक संस्थान आज भी उनके विचारों और आदर्शों को आगे बढ़ा रहे हैं।

6.2 शैक्षिक निहितार्थ

- रणछोड़ दास जी महाराज का मानना था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना होना चाहिए। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों में मुख्य ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि व्यक्ति को ऐसे कौशल और ज्ञान से लैस किया जाए, जिससे वह अपने जीवन में आत्मनिर्भर बन सके। ट्रस्ट के शैक्षिक कार्यक्रम न केवल पारंपरिक शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि व्यावहारिक और रोजगारोन्मुखी कौशल भी सिखाते हैं।
- श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू नैतिकता और मानवता के प्रति जागरूकता फैलाना है। रणछोड़ दास जी महाराज के सिद्धांतों के अनुसार, शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह समाज में नैतिकता, ईमानदारी, और सेवा के मूल्यों को भी सिखानी चाहिए। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के शैक्षिक कार्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- रणछोड़ दास जी महाराज ने अपने जीवन में हमेशा समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की मदद पर जोर दिया। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट भी इसी आदर्श पर चलते हुए गरीब और पिछड़े समुदायों के बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था करता है। ट्रस्ट द्वारा चलाए जाने वाले विद्यालय और शैक्षिक कार्यक्रम इन वर्गों के बच्चों को शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाते हैं, जिससे वे समाज में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें और एक बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें।
- रणछोड़ दास जी महाराज के अनुसार, शिक्षा केवल बौद्धिक और तकनीकी विकास तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसमें आध्यात्मिक जागरूकता का भी समावेश होना चाहिए। श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट इसी दृष्टिकोण के तहत शिक्षा प्रदान करता है। बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान और कौशल के साथ-साथ ध्यान, योग, और आध्यात्मिक जागरूकता का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। इसका उद्देश्य मानसिक संतुलन और आंतरिक शांति को बनाए रखना है।

- श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में समाज सेवा की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। रणछोड़ दास जी महाराज के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य समाज की सेवा और सुधार भी होना चाहिए। ट्रस्ट के शिक्षण कार्यक्रम इस बात पर जोर देते हैं कि विद्यार्थी समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझें और समाज कल्याण के लिए कार्य करें।
- रणछोड़ दास जी महाराज की शिक्षाओं का एक महत्वपूर्ण पहलू भारतीय संस्कृति और मूल्यों का संरक्षण था। ट्रस्ट के शैक्षिक कार्यक्रमों में भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों का गहन अध्ययन और प्रचार-प्रसार किया जाता है। यह विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने और उन्हें मजबूत करने की प्रेरणा देता है।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी सोद्देश्य कार्य के शैक्षिक निहितार्थ अवश्य होते हैं। उस कार्य की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ में होती है। अर्थात किसी भी शैक्षिक उद्देश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है, जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत रूप में वर्णित है

6.3.1 विद्यार्थियों के लिए

प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों एवं सुझावों के आधार पर विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकेंगे एवं शिक्षा के सही अर्थ को जानकार शैक्षिक जीवन में एक नूतन परिवर्तन कर सकेंगे।

वे शिक्षा को केवल नौकरी का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतारकर इन्द्रियों व मन को नियन्त्रित कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे और अपने जीवन के स्वर्ण युग को संस्कारित कर उसका उपयोग ज्ञानार्जन में कर सकेंगे।

6.3.2 शिक्षकों के लिए

गुरुदेव जी के शैक्षिक विचारों की अवधारणा से प्रभावित होकर शिक्षक अपने शैक्षिक कार्य के वास्तविक उद्देश्य को जान सकेंगे और एक आदर्श शिक्षक के रूप में स्वयं को प्रतिस्थापित करने में सफल हो सकेंगे। वे आधुनिकता व दिखावे से दूर अपने आन्तरिक एवं बाह्य जगत का परिष्कार करके अनुशासित

व आदर्श शिक्षक के गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में डाल सकेंगे तथा शिक्षा को केवल धनार्जन का साधन न मानकर ज्ञान दान की एक पवित्र प्रक्रिया बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बिगुल बजा सकेंगे और शिक्षा के गिरते स्तर को ऊँचा उठा सकेंगे।

6.3.3 अभिभावकों के लिए

भौतिक संसाधनों के इस युग में अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाते इसलिए है कि वे केवल धन कमाने की दौड़ में लग जाये। आज अभिभावकों ने शिक्षा को धनार्जन के आधार तक सीमित रखा है , किंतु गुरुदेव जी के शैक्षिक विचारों से प्रेरित होकर अभिभावक शिक्षा को संस्कारों से समन्वित करते हुए रिश्तों के प्रति संवेदनशून्य होते बालकों को मानवता की शिक्षा के लिए प्रेरित कर देश को एक नागरिक प्रदान कर सकेंगे।

6.3.4 जनसामान्य के लिए

गुरुदेव जी के जीवन एवं विचारों से प्रेरणा प्राप्त कर जनसामान्य अपना जीवन आनंदमय बना सकेंगे। वे तनावमुक्त होकर योगमय जीवन जीने के लिए अभिप्रेरित होंगे तथा धर्म, संस्कृति एवं राष्ट्रीय प्रेम से अनुप्रेरित होकर अपने कर्तव्यपथ पर अग्रसर हो सकेंगे। उनमें सद्प्रवित्तियों को अपनाने की प्रेरणा का संचार होगा और निश्चय ही समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध डटकर खड़े होकर अच्छाई के वाहक बन सकेंगे।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा पूर्ण किए गाए लघु शोध-प्रबन्ध **"श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट"** का शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया गया। अध्ययन के दौरान बहुत सी नवीन गतिविधियाँ सीखने को मिली जिन्हें शोधकर्ता आगामी शोधार्थियों हेतु सुझाव के रूप में प्रस्तुत करता है। ये आगामी शोध हेतु निम्नलिखित हैं-

- श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा स्थापित स्कूलों और शैक्षिक संस्थाओं का स्थानीय समुदायों पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- इसके अतिरिक्त, इस मॉडल का प्रभाव बच्चों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास पर कैसा होता है, इसका मूल्यांकन किया जा सकता है।

- भावी शोध में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों एवं अन्य संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों की विशिष्टताओं पर गहन व्यक्तिपरक अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट जैसी अन्य सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित किए जा रहे अन्य मानवतावादी सेवाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध हेतु श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के अन्य शैक्षिक प्रकल्पों का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध हेतु प्रधानमंत्री एवं राज्यपाल द्वारा पुरस्कृत संस्थाओं के शैक्षिक योगदानो का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ-ग्रंथ-सूची

सिंह, नरेंद्र (2022)। जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी का शैक्षिक योगदान। लघुशोध प्रबंध अतर्रा पी.जी. कॉलेज अतर्रा, बांदा।

द्विवेदी, सुरेश कुमार (2022)। रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान। लघुशोध प्रबंध अतर्रा पी.जी.कॉलेज अतर्रा, बांदा।

मिश्रा, विनय कुमार (2022)। स्वामी ब्रह्मानंद जी का शैक्षिक योगदान। लघुशोध प्रबंध अतर्रा पीजी कॉलेज अतर्रा, बांदा।

Chitrakoot.facebook.http://rb.gy/xiahmw

तिवारी, बाबूलाल (1996-97)। *वर्तमान भारतीय राष्ट्रीय परिवेश में पं० दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*
<http://hdl.handle.net/10603/10744>

सिंह, नीलम(1999)। *भारतवर्ष में मिशनरी शिक्षा: योगदान वर्तमान समय में उपादेयता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*
<http://hdl.handle.net/10603/12268>

मिश्रा, शशि (2002)। समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।<http://hdl.handle.net/10603/11762>

Chitrakoot. श्री श्री 1008 रणछोड़ दास जी महाराज।facebook
An Outpouring of pure Love: A Brief Sketch of Sri Ranchhod das ji Maharaj.Vinayak Lohani.

वर्मा, रामनिवास (2005) । *भारतीय जीवन मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था के सन्दर्भ में स्वामी शिवानन्द जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ०*

भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय आगरा (उ०प्र०)

<http://hdl.handle.net/10603/361860>

शर्मा, शशिकांत (2007)। *गिजू भाई बधेका का शैक्षिक चिन्तन एवं आधुनिक भारतीय बाल-शिक्षा परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*

<http://hdl.handle.net/10603/12530>

सिंह, किरन (2008) रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक योगदान का वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता आलोचनात्मक

अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)।

<http://hdl.handle.net/10603/178440>

सिंह, अनंत बहादुर (2008)। *मूल्य शिक्षा के विशेष संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर तथा महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।* <http://hdl.handle.net/10603/239635>

सिंह, रेनू (2008)। भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।

<http://hdl.handle.net/10603/12262>

तिवारी, सुधा (2009)। *लोकतान्त्रिक भारत कि शिक्षा में महात्मा गाँधी एवं पण्डित दीन दयाल उपाध्याय जी के शैक्षिक योगदान का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ०प्र०)।*

<http://hdl.handle.net/10603/14905>

शादाब, आबी (2009)। *जाकिर हुसैन एवं ए.पी.जे. अब्दलु कलाम के शैक्षिक विचारों का तलुनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० शोध। डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ०प्र०)।*

<http://hdl.handle.net/10603/235529>

https://www.sadgurutrust.org/education.php

अध्ययन से संबंधित समाचार

झाँसी, 01 सितम्बर 2023 | 06

रघुवीर मन्दिर में धूमधाम से मना श्रावण झूला उत्सव

- **मनोरम पौराणिक झाँकियाँ देखने उमड़े श्रद्धालु**



चित्रकूट : परमहंस संत रणछोड़दास महाराज की पावन कर्म स्थली जानकीकुंड स्थित रघुवीर मंदिर ट्रस्ट बड़ी गुफा में श्रावण झूला उत्सव का आयोजन किया गया । यह उत्सव प्रतिवर्ष श्रावण मास के शुक्ल एकादशी से श्रावण शुक्ल पूर्णिमा रक्षाबंधन तक मनाया जाता है । उत्सव के दौरान, पूरे प्रांगण को मनोरम फूलों से सजाया गया और युगल सरकार को झूले में विराजमान कर भक्तों द्वारा भक्तिपूर्वक झुलाया । उषा जैन ने बतलाया कि प्रतिवर्ष चित्रकूट अंचल और आसपास के कलाकार विभिन्न गायन और वादन की संगीतमय प्रस्तुतियाँ देने युगल सरकार के चरणों में आते हैं इसके साथ संत-महंत और श्रद्धालुओं ने भजनों का श्रवण कर आनंद उठाया ।

रघुवीर मंदिर ट्रस्ट ने इस वर्ष राम संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा विभिन्न धार्मिक झांकियों की प्रस्तुतियाँ दी, जिनमें समुद्र मंथन, सीता स्वयंवर,गीता उपदेश,शबरी भक्ति एवं भरत चरित्र जैसी झांकियां प्रमुख रूप से सम्मिलित रही । जैन ने बतलाया कि, इस उत्सव से प्रतिवर्ष लोगों में पौराणिक विषयों की जानकारी बढती है दूसरी ओर भगवान के भक्ति गीत में श्रोतागण आनंद प्राप्त करते हैं एवं स्थानीय कलाकारों को भी मंच मिलता है जिससे वह सभी अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं , हमारा उद्देश्य है कि स्थानीय कलकारों को आगे बढ़ने का अवसर हम प्रदान करें जिससे हमारे पारंपरिक भागती संगीत एवं झूला गीतों को जन मानस के अन्दर प्रश्रय मिल सके

कार्यक्रम के अंतिम दिवस रक्षा बंधन को श्रावणी उपकर्म (यज्ञोपवीत परिवर्तन) ऋषि पूजन का कार्यक्रम ब्राह्मण बटुकों द्वारा आचार्यों के निर्देशन में मंदाकिनी तट पर जानकी घाट में शास्त्रोक्त विधि से किया गया तथा पांच दिवसों तक विभिन्न प्रस्तुतियां देने वाले कलाकारों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

PM Modi Chitrakoot Visit Live: सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट पहुंचे पीएम मोदी, रघुवीर मंदिर में की पूजा

PM Modi in Chitrakoot MP: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज चित्रकूट दौरे पर हैं. पीएम मोदी खजुराहो से विशेष हेलिकॉप्टर के जरिए चित्रकूट पहुंचे. इसके बाद पीएम मोदी श्री सद्गुरु सेवा संघ



श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट पहुंचे पीएम मोदी. प्रदर्शनी का अवलोकन किया



Arvind Mafatlal 100th Birth Anniversary: मध्य प्रदेश में सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट को स्थापित करने वाले और नेत्र रोगियों के मसीहा माने जाने वाले स्वर्गीय अरविंद भाई मफतलाल की आज 100वीं जयंती के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi) चित्रकूट आ रहे हैं. यहां पीएम मोदी सब अरविंद भाई मफत लाल की 100 वीं जयंती पर उनकी समाधि स्थल पर पुष्पांजलि अर्पित करेंगे, जिसके बाद पीएम जानकी कुंड नेत्र चिकित्सालय परिसर में तैयार किए गए सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का लोकार्पण करेंगे. यहां पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पद्म विभूषण जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य महराज से भी मुलाकात करेंगे.





Performs pooja and darshan at Raghubir Mandir

Inaugurates new wing of Jankikund Chikitsalaya

News Updates

PM participates in multiple programmes at Shri Sadguru Seva Sangh Trust in Chitrakoot, Madhya Pradesh

27 Oct, 2023





आइए जानते हैं श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के बारे में जहां आज पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

PM In Chitrakoot: आइए जानते हैं श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के बारे में जहां आज पहुंचे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज चित्रकूट पहुंचे हैं। पवित्र मंदाकिनी नदी के तट पर बसे इस छोटे से शहर में आज जगह-जगह प्रधानमंत्री के आगमन की चर्चा हो रही है। चित्रकूट के विकास और यहां के लोगों के जीवन यापन में सद्गुरु सेवा ट्रस्ट की महत्वपूर्ण भूमिका है। गुजरात के उद्योगपति अरविंद जी मफतलाल संत रणछोड़ दास महाराज से बहुत प्रभावित थे।

Chitrakoot News: सीएम डा मोहन यादव ने श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट का भ्रमण कर ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों का किया अवलोकन

Chitrakoot News: संत रणछोड़ दास जी महाराज द्वारा स्थापित सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट द्वारा संचालित सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय का आज अपने चित्रकूट के प्रथम दौरे और रामपथ गमन न्यास की बैठक में शिरकत करने आए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डा मोहन यादव ने श्री सदगुरू सेवा संघ का भ्रमण कर ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों का अवलोकन किया।



सीएम डा मोहन यादव ने श्री सदगुरू सेवा संघ ट्रस्ट का भ्रमण कर ट्रस्ट द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों का किया अवलोकन: Photo-Newstrack



सीबीएसई परीक्षा परिणाम में सद्गुरु पब्लिक स्कूल ने मारी बाजी

RESUME



Mr. AKHILESH KUMAR
VILL-BHARAIHA POST-BHAISAUNDHA KARWI CHITRAKOOT
Mob.-88582 54274, 89249 46479
Email. kumarakhilesh66837@gmail.com

CARREAR OBJECTIVE:-

To achieve success in term of accomplishment of organization through my educational skills abilities, Hard work, dedication and strong determination.

EDUCATION QUALIFICATION:-

Examination	Board	Year
High school	UP Board	2010
Intermediate	UP Board	2013
Graduation	BU Jhansi	2016
Post Graduation	BU Jhansi	2018
B.Ed.	BU Jhansi	2021
M.Ed.	BU Jhansi	2024
Diploma	O Level, CCC	-

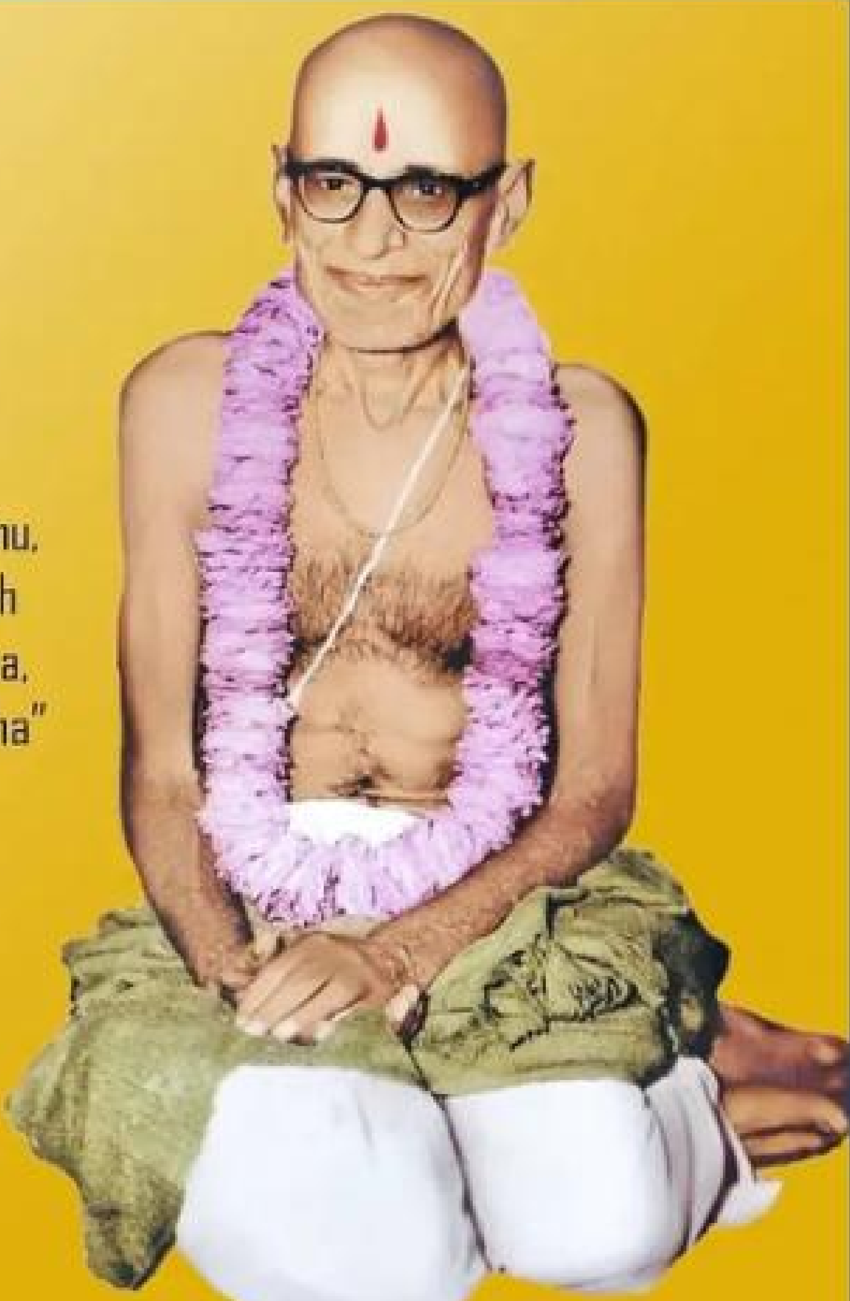
PERSONAL DETAILS:-

- Name - Mr.Akhilesh kumar
- Father's name - Mr. Rajkishor
- DOB - 10/07/1994
- Permanent Address - Sharda Nagar Nai duniya Karwi Chitrakoot - 210205
- Nationality - Indian
- Gender - Male
- Language Known - English, Hindi

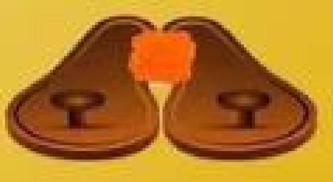
DECLARATION:-

I here declare that the information provided above in true & correct to the best of my knowledge & belief.

Place- CHITRAKOOT *signature*
Date-



"Guru Brahma, Gurur Vishnu,
Gurur Devo Maheshwarah
Guru Sakshat Para Brahma,
Tasmai Shri Gurave Namaha"





9 789334 182484